॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ मङ्गलाचरणम् ॥

॥ श्लोकाः ॥

उद्यद्दिनेश्वररुचिं निजहस्तपद्मैः, पाशांकुशाभयवरां दधतम् गजास्यम् ॥ रक्ताम्बरम् सकलदुःखहरं गणेशम्, ध्यायेत्प्रसन्नमखिलाभरणाभिरामम् ॥ १ ॥ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्, विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम् ॥ लक्ष्मीकान्तम् कमलनयनम् योगिभिर्ध्यानगम्यम्, वन्देविष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥ २ ॥ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम् रत्नाकल्पोज्वलांगम् परशुमृगवरा भीतिहस्तंप्रसन्नम् ॥ पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम्, विश्वाद्यम् विश्ववंद्यम् निखिलभयहरम् पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥ ३ ॥ असितगिरिसमस्यात् कज्जलंसिन्धुपात्रे सुरतरुवरशाखालेखिनीपत्रमुर्वी ॥ लिखिति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं । तदपितवगुणानामीशपारं न याति ॥ ४ ॥ या माया मधुकैटभप्रमथिनी या माहिशोन्मूलनी । या धूम्रेक्षणचण्डमुण्डमथिनी या रक्तबीजाशिनी ॥ शक्तिः शुम्भनिशुम्भदैत्यदलनी या सिद्धलक्ष्मी परा । सा दुर्गानवकोटिशक्तिसहिता मास्पातु विश्वेश्व-

री ॥ ५ ॥ एकचक्रं रथे यस्य दिव्यंकनकभूषितम्। स मे भवतु सुप्रीतः पद्महस्तो दिवाकरः ॥ ६ ॥ नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ॥ देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत् ॥ ७ ॥

॥ श्रीभगवती महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीभ्यो नमः ॥ श्रीइष्टदेव वटुकभैरवाय नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीबालात्रिपुरसुन्दर्यै नमः ॥ श्रीचामुण्डानागणीच्यै नमः ॥ श्रीचित्रगुप्ताय नमः ॥



भूमिका.

बाद इज़हार इन्किसार दर हम्दोसनाए पर्वर्दिगार के नाज़िरीन पर वाज़िह हो कि इस ख़ाकसार सहीवाला अर्जुनसिंह वल्द शिवसिंहजी कायस्थ भटनागर साकिन उदयपुर मेवाड़ राजपूताना, मिनिस्टर राज्ये श्री महक्मह्ख़ास व मेम्बर राज्ये श्री महद्राजसभा उदयपुर को पहिले इस बात का ख़याल नहीं था कि कोई रिसालह अपने या अपने बुज़ुर्गों के हाल का लिखे; मगर सवत् १९३८ फाल्गुन शुक्ला १ को कविराजा श्यामलदासजी ने एक रुक़्क़ा हस्ब ज़ैल लिख भेजाः—

रुक़्क़ेकी नक़ल.

सिद्धश्री ठाकुरां श्रीअर्जुनसिंहजी सहीवाला योग्य लिखतां कविराज श्यामलदासजी अपरंच ॥ आपका तथा आपका भाई बन्धु कदीमसूं चित्तौड़ अथवा उदयपुर मेवाड़ ज़िलामें किस्या गांवका बाशिन्दा है या बाहरसूं आया है, बाहरसूं अगर आया है तो किस्या श्रीजी की वक्तमें और कांई सबब सूं आवणो हुवो आया वाला मूल पुरुषांको नाम कांई है और वां पछे अठे कतरी पीढ़ी हुई जांको कुर्सीनामो नाम्वा प्रवाणा सहित लिखाय भेजसी और वां लोगां श्रीजी की चाकरी श्यामखोरी में तक्लीफ उठाई होवे अथवा कोई काम किया होवे और ख़ैरख़्वाही की सनदां हासिल की होवे ऊपर लिखी सब बातां या सनदां की नकलां जल्दी भेजावदेसी, अगर

ज़वानी याद होवे तो भी ग़लत होवाका सवव सूं भेजवा में ताम्मुल नहीं करसी अठे दर्याफ्त करलीजावेगा. संवत् १९३८ का फाल्गुन शुदि १.

ह: कविराज श्यामलदास.

इसके जवाब में कुछ मुख्तसर हाल फाल्गुन शुक्ला १२ को लिख भेजा. वादह् संवत् १९४६ के पौष मास में देलवाड़े राजरणा फ़तहसिंहजी राव वहादुरने मुझसे दर्याफ्त किया कि आपके यहां डायरी (रोज़नामचा) लिखा जाता है या नहीं? मैंने कहा नहीं लिखा जाता. इसपर राज साहिवने फ़र्माया कि आपके यहां ज़ुरूर चाहिये. तव सोचा कि रोज़नामचा नहीं लिखा गया है ताहम जो कुछ हालात गुज़श्ता याद हैं वे क़लमवन्द कर एक रिसालह वतौर सवानिह उम्री याने जीवनचरित्र वनाया जावे और उसके शुरूमें अहवालि क़दीम जिसक़दर तहक़ीक़ मालूम होते हैं लिखे जावें, क्योंकि रिवायतें तो वहुत सुनने में आती हैं, मस्लन् कान्हजी को महाराणाजी श्री संग्रामसिंहजीने 'राज' का ख़िताव वख्शा. चुनाचि वुज़ुर्गोंसे उनका नाम कान्हजी राज सुनते आये हैं. यह दिल्लीकी विकालत पर भी भेजे गये थे और वहां वादशाह इनसे ख़ुश रहे. पूंजाजीने चित्तौड़ पर परधाना किया और ऐसी ही और भी वातें सुनते हैं, मगर इनका तहरीरी सुवूत कोई नहीं मिला, इससे इनका मुफ़स्सल हाल लिखना मुनासिव नहीं मालूम होता और भी कोई असनाद क़दीम मौजूद नहीं हैं क्योंकि मेरे दादा नाथजी के इन्तिक़ाल के वक्त उनके चारों पुत्र कम उम्र रहगये थे, अलावा इसके दफ्तर का एक गुम्वज़ वारिश में गिरगया और काग़ज़ात की एक कोठड़ी में आग

लगगई इससे बहुतसे कागजात बर्बाद होगये, अलबत्ता मकानात के कुछ निशानात, जैसे हवेली के दर्वाजे, मन्दिर और हाथीके खुमाले वगैरह जो अबतक मौजूद है, उनकी इस्तालमन्दी को जाहिर करते है

आखिरमे मुख्तसर अहवाल काकाजी अचलदासजी, भाई रामसिंहजी, लक्ष्मणसिंहजी व बख्तावरसिंहजीका दर्ज किया जाता है. चूंकि यह हालात यादसे लिखे गये हैं, इससे संवत् मिती वगैरहकी गलतीका एहतिमाल है.

ॐ नमः श्रीचित्रगुप्ताय

दूसरीबार छपाये जाने

की

भूमिका.

श्रीमान् परमपूज्य दादाभाई साहिब अर्जुनसिंहजी महीवाला जिनका यह जीवनचरित्र है हमारे कुल में गम्भीर सरलस्वभावी पूरे स्वामिभक्त सत्पुरुष और साहसी हुए हैं जिन्होंने अपना जीवनचरित्र सं० १९५४ तक का लिखकर उदयपुर सज्जन प्रेस मे छपवाया, उनका लोकमान्य और प्रिय होने से जितनी

पुस्तकें छपवाई गईं थीं हाथों हाथ बटगईं, हमारे यहां केवल एकही पुस्तक शेष रही और बहुत से सरदारगण फिर भी इस पुस्तक के मिलने की अभिलाषा करते हैं इसलिये ऐसे महत् और आदर्शपुरुष का जीवनचरित्र फिर छपवाया जाना उचित समझ यह दूसरीवार ५०० पुस्तकें छपवाकर उन्हीं सरदारगणों के लिये उपस्थित करता हूं. इसके अन्त में इन मेरे बड़े भ्राता और साथ ही साथ हम दूसरे कुटुम्बियों का इन पिछले वर्षों का शेष वर्णन भी जो याद है, बढ़ा दिया गया है और यथास्थान चित्र भी दिये गये हैं ॥

उदयपुर मेवाड़
पौष शुक्ला १५ सं० १९६७

रायबहादुर बख्तावरसिंह
सहीवाला.

तफ़सील.

बाब अव्वल दर बयान हालात क़दीम.

	पृष्ठ	हिस्सा
फस्ल पहिली दर बयान नसब नामा वगैरह.	१	अव्वल
फस्ल दूसरी दर बयान जागीर ...	२	"
फस्ल तीसरी दर बयान क़स्बा. .	११	"
फस्ल चौथी दर बयान मन्दिर वगैरह. . .	२३	"

बाब दूसरा जीवनचरित्र.

फस्ल पहिली हालात बचपन व तालीम इल्म .	३२	"
फस्ल दूसरी दर बयान ख़िदमात सर्कारी.	४७	"
फस्ल तीसरी लिखावट के बयान में.	४८	दोयम

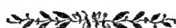
बाब तीसरा.

फस्ल पहिली अहवाल काकाजी भगवानदासजी	५३	"
फस्ल दूसरी अहवाल भाई रामसिंहजी व लछमणसिंहजी.	५४	"
फस्ल तीसरी अहवाल भाई बख़्तावरसिंहजी. . .	६०	"
फस्ल चौथी अहवाल चिरंजीव गुमानसिंहजी व भीमसिंहजी.	७१	"

बाब चौथा.

फस्ल अव्वल बाकी अहवाल अर्जुनसिंहजी	१	तीसरा
फस्ल दूसरी बाकी अहवाल गुमानसिंहजी भीमसिंहजी .	४	"
फस्ल तीसरी बाकी अहवाल बख़्तावरसिंहजी दर्यावसिंहजी	११	"
फस्ल चौथी बाकी अहवाल रामसिंहजी मदनसिंहजी .	१४	"

जीवन-चरित्र।



बाब अव्वल.

दरबयान अहवालि क़दीम.

पहिली फ़स्ल

नसब नामह वग़ैरह.



चित्रगुप्त वंशी कायस्थ भटनेर इलाक़ह पंजाब में आबाद होनेके सबब भटनागर कहलाये और वहां से जिस २ मक़ाम पर जाकर आबाद हुए उस २ मकाम के नामसे एक एक अल्ल जुदी मुक़र्रर होकर चौरासी अल्लें होगई. चुनांचि दिल्ली के पास डासन्याखेडा की बूदोबाश से एक अल्ल डासन्या मुक़र्रर हुई, जिसमे हमारा खानदान है

हमारे बुजुर्ग चन्द रोज़ खैराडमे रहकर चित्तौड आये, इससे खैराडा भी कहलाते है बनेडाके पचोली कृष्णरामजी दस ग्यारह पुश्तमे मिलते हैं, झालरापाटन और अजमेर में एक दो घर खैराडा कहलाते हैं, लेकिन् हिन्दुस्थानमें हमारे गोत्रवाले अबतक डासन्या ही मशहूर हैं. कायस्थो को पचोली कहते है और इसकी वजह यह है कि संस्कृत में पंजाब को पाञ्चाल कहते है, जो कायस्थ पाञ्चाल से राजपूताना मे आये वे पाञ्चाली कहलाये. दौरानि जमानह मे पाञ्चाली शब्द बिगडकर पचोली मशहूर होगया

हमारे भाट मौज़े पड़ावा इलाक़ह टौंकमें रहते हैं उनकी पुरानी पुस्तकें ग़दर वग़ैरह के बखेड़ोंमें तितर बितर होगईं और बहुत से काग़ज़ात नसब-नामह असनाद सर्कारी वग़ैरहके बर्बाद होनेका सबब हम दीबाचेमें लिख चुके हैं, इसलिये मुफ़स्सल और ठीक ठीक हाल नहीं लिखसक्ते कि किन महाराणा साहिब के, अह्द में हमारे मूरिस आलाने इस सर्कार अबद पायदारमें दौलत मुलाज़मत हासिल की, लेकिन् इस वक्त जो लिखाजाता है वह उस पुस्तकसे जो भाट के पास मौजूद है और बुज़ुर्गों की ज़बानी सुनेहुए हालातसे दर्ज किया जाता है.

फ़स्ल दूसरी.

दरबयान जागीर.



पहिले हमारी जागीरमें ग्राम ज़ियादह थे और बुज़ुर्गोंने उनमेंसे बहुतसी ज़मीन अपने मन्दिर ठाकुरजी श्रीचतुर्भुजजी और श्रीगोवर्द्धन-नाथजी के भेट की और अपने पुरोहितों को दी और सर्कार से सनदें करादीं जिनका कब्ज़ह और भुगतभोग अबतक बराबर चला आता है. सब सनदों की नक़लें फ़स्ल चौथीमें दर्ज हैं. जागीरके ग्रामोंमें से बहुतसे ख़ालिसह होगये, ताहम महाराणाजी श्रीभीमसिंहजी के अह्द तक चार गांव थे-१ आसूणा, २ सोमवास, ३ रूपाखेड़ी, ४ सांगरचा.

जब साह शिवलालजी प्रधान हुए तो उन्होंने श्री दर्बारसे अर्ज कराई कि पहिले खवासी मे (हाथी पर रईस के पीछे) प्रधान बैठा करते थे, यदि मुझे भी हुक्म हो तो पाच हजार नक़द व हाथीकी ज़रदोजी झूल हुजूर के नजर करू. श्रीदर्बारने मजूर फर्माकर हुक्म बख्शा कि तेलादशमी के दिन बिठावेगे उन दिनो तेलादशमीका मेला चम्पाबागमे हरिसिद्धिमाता के मन्दिर पर अच्छा भरता था. यह खबर कुरावड रावत जवानसिहजी, आसींद रावत दूलहसिहजी व भदेसर रावत हमीरसिहजीने सुनी तो मेरे पिता शिवसिहजीको जो उन दिनो राणीजी श्री बीकानेरीजी की विकालत करते थे, बुलाकर कहा कि अगर साहजी खवासीमे बैठ जावेगे तो हमारी बातमें फर्क आजायेगा, इसलिये राणीजी साहिबा से अर्ज कर जैसे होसके वैसे यह हुक्म मुआफ कराना चाहिये, क्योंकि खवासीमे बैठने की इज्जत कृष्णावतोंको बख्शी गई है तब मेरे पिताने ड्योढी जाकर श्रीराणीजी साहिबासे अच्छी तरह अर्ज कराई. उस दिन इन्हीं राणीजी साहिबा का बारा था श्रीराणीजी साहिबाने श्रीदर्बार के नाम एक खास रुक्के मे लिख भेजा कि खवासी मे कृष्णावत बैठते आये हैं, अगर हुजूर ने इनको मौकूफ कर साहजीको बिठाया तो मे आज बीडा नही झेलूगी यह रुक्का लिखकर बा साहिब शिवसिहजीके पास हुक्म भेजा कि रुक्का चम्पाबाग लेजाकर श्री दर्बारसे अर्ज करके खवासीका हुक्म बदलादो. उन्होंने बमूजिब हुक्म चम्पाबाग जाकर रुक्का श्री दर्बारके नजर किया पढते ही दर्बार नाराज हुए और फर्माया कि पाच रुपये नजराने के आते वह तूने खटपट कर खोए, खैर रावतजी से कहदो

कि शामको हाज़िर रहें. सवारी के वक्त रावतजी मौजूद थे और साहजी भी आ हाज़िर हुए, श्री दर्बार ने हाथी पर सवार होकर हुक्म फ़र्माया "आओ रावतजी" फ़ौरन रावतजी खवासीमें जा बैठे और साहजी गुस्से होकर अपने मकानको चलेगये, तभीसे साहजी अदावत रखने लगे और जब टॉड साहिब आये और जागीरदारोंके तथा खालिसेके गांवोंकी फ़र्दें बनीं उसमें हमारे दो गांव रूपाखेड़ी व सांगरचा दुश्मनी के सबब खालिसेमें गिनादिये. इस पर श्री दर्बारमें अर्ज़ कीगई तो साहजीसे दर्याफ्त फ़र्माया कि इनके गांव क्यों खालिसेमें लिखाये. जवाब दिया कि मैंने तो साहिबसे बहुत कुछ कहा, मगर उन्होंने लिखलिये और मेरी बात न मानी. इसी अदावतसे साहजी ने दोसौ सिन्धियोंकी जो मेरे पिताके तहतमें नौकर थे, तनख्वाह चढ़ादी, जिससे सिन्धियोंने हमारी हवेली पर धरणा दिया. बड़ी मुश्किलसे उनकी तनख्वाह चुकाकर धरणा उठाया.

पहिले चारों भाई बाबाजी सूरतसिंहजी, शिवलालजी वा साहिब शिवसिंहजी और काकाजी अचलदासजी शामिल रहते थे, जब ये सब अलग हुए तो सोमावास सूरतसिंहजी व शिवलालजी के हिस्सेमें और आसूरणा शिवसिंहजी और अचलदासजीके हिस्से में आया. फिर काकाजी अचलदासजीको, जो महाराणाजी श्री जवानसिंहजीके कुंवरपदे में चाकरी करते थे, श्री दर्बार ने खुश होकर डोडावली गांव बख्शा, संवत् १८८८ के वर्ष में काकाजी अचलदासजी अलग हुए तो डोडावली गांव अपने हिस्समें रक्खा और बा साहिब शिवसिंहजीके आसूरणा गांव रहा; लेकिन् आसूरणा

देवगढ़की तरफसे था, क्योंकि वह उनकी विकालत करते थे; संवत् १९०१ में रावत रणजीतसिंहजीने विकालत बन्द कर गांव जब्त करलिया, जिसका मुफस्सल हाल तीसरे बाबमें लिखा है. संवत् १९१८ में महाराणाजी श्री शम्भुसिंहजीने चैत्र कृष्णा १ के दिन नीकलवास गांव बख्शा, जिसकी उठनी पचसर्दारोंकी दस्तखती कर्नेल् टेलर साहिब बहादुर व पर्वानोंकी नक्लें दर्ज कीजाती हैं और बापोती के रहंट ढीमड़ी व गोजारा गांव देपुरामें हैं, ढीमडी बाबाजी सूरतसिंहजी व शिवलालजीके हिस्सेमें और गोजारा बा साहिब और काकाजी अचलदासजीके बटमें आया. इसी तरह नांदेस्माका रहट उनके हिस्सेमें और धोईदा गांवका रहट हमारे हिस्सेमें रहा. झाडोल पर्गने काछोलाकी जमीन बीघा १०० चारोंके हिस्सेमें रही संवत् १८९९ मे महाराणाजी श्री स्वरूपसिंहजीने पलासिया गांव काकाजी अचलदासजीको बख़्शा और विक्रमी संवत् १९०१ मे खालिसे करलिया गुमान्याबालापरकी बाड़ी पहिले शामलातमें थी, फिर महाराणाजी श्री भीमसिंहजीने खालिसे करके बारातण बाई मगनरायको बख्श दी, जो कई वर्ष तक उनके रही और कुछ दिनों बाद उन्होंने हरकुँवर बाईके बेटे मानजी पड़ियारके गिर्वी रखदी मगनरायके मरने पर बा साहिब शिवसिंहजीने महाराणाजी श्री भीमसिंहजीसे अर्ज की कि बाडी मेरी है, मगनराय मरगई और वह मानजीके यहां गिर्वी है तब हुक्म दिया कि गिर्वीके रुपये देकर छुड़ालो. बा साहिबने मानजीको रुपये देकर बाडी छुड़ाली उन दिनों काकाजी अचलदासजी शामिल रहते थे, इससे बाडी दोनों भाइयोंके शराकतमें रही संवत् १९०३ के मृगशिर मासमें

महाराणाजी श्री स्वरूपसिंहजी नाराज़ हुए और बाड़ी व गांव खालिसे करलिये और महता वरदभान बाड़ी व हवालोंका करता था, इसलिये हमारी बाड़ी भी उसके सुपुर्द हुई. जब दर्बार फिर राज़ी हुए और गांव व बाड़ी वापस मिले तबसे अबतक वह बाड़ी मेरे व भाई बख्तावरसिंहजी के शराकत में है.

विक्रमी संवत १९२९ में महाराणाजी श्री शम्भुसिंहजीने बीकानेरके महाराज डूंगरसिंहजीकी मस्नदनशीनीकी कोशिशके इन्ऽआममें मुझको गांव दूंद्याखेड़ा बख़्शा.

नक़ल अस्नाद गांव वग़ैरह.

देपुराके रहंटोंके तांबापत्रकी नक़ल.

॥ श्रीगणेशजी प्रसादातु. ॥ श्रीरामो जयति. ॥ श्रीएकलिंगजी प्रसादातु.

महाराजाधिराज महाराणाजी श्री भीमसिंहजी आदेशात् पंचौली नाथूराम सूरतसिंह शिवलाल सहीवाला गोपालरा कस्य ग्राम महुवाड़ा धावड्या तथा देपुराकी सीम बीच रेंट जायगा तलाव तथा आंबा महुड़ा घर बार तथा छोटी मोटी रांखड़ पीवल कूड़ा नीवाण सुदी थारी सासू नगारे हतलेवे दीधी सो श्री दर्बार की तरफ़सूं पण यो तांबापत्र करे देवाणो है सो जमाखातर राखेने थारा बेटा पोता सपूत कपूत पीढ्यां लग खायां

पायां जाजो थणी जायगा थी श्रीजी की तरफ सूं तथा कामेती तथा गामरा पटायत जागीरदार फौजदार कामदार सुवादार पटेल पटवारी तथा जालोरयां का वंश का थांसूं कणी वात की चोलण करवा पावेगा नहीं चोलण करेगो जीने श्री जी पूगसी या जायगा थारा सुसरा लाला है मूडकटी ने करे दीधी थी पछे इडी तरफ सू थाने दीधी —

वीगत

रहट १ ढीमडी मूडकटीरो.	तलाव १ कीतेला मूंडकटीरो.
रहट १ नोरको ढीमड़ो गेणावटरो	खेत जीगरा खेत जुडारा रांखड
वाडो १ वागा तलाईरो रांखड	राता पाल्यारा खेत ५ राखडरा
दो ने लीवड़ा नव्रे ग्नला नदी माहेली माल वावे ज्या	रहट १ गोजाराको गेणावटरो
खेत १ पीपलीवालो गेणावटरो.	रहट १ गोजाराको गेणावटरो.
तलाव १ वडीरो गेणाऊ और	खेत १ गांवरा गेणावटरो.
ढीमडी उपला खुटकर वाली जायगी ने तली	खेत सवने नाडुयारा रांखड़

लिखतं पचोली वल्लभदास गिरधरलालोत स० १८४४ रा वर्षे फागण सुदी ५.



नक़ल उठन्त्री पंच सर्दारान् दस्तख़ती एजेण्ट कर्नेल टेलर साहिब बाबत गांव चीकलवास.

सिधश्री श्री दीवाणजी आदेशात हुवे पंच सर्दारान् राज उदयपुर

सहीवाला शिवसिंह जोग, अपरंच गांव चिकलवास उपत रु० १०००) अखरे एक हज़ारको थाने कर देवाणो है, खायां पायां जाजो और चाकरी हुकम परमाणे करजो संवत् १९१८ का फागण सुदी ७.

द: राव बख्तसिंहका ... ... वेदले
द: रावत रणजीतसिंहका ... . देवगढ़
द: रणा लालसिंहजीका .... गोगूंदा, द: रणजीतसिंह कीदा राजरा कहवा सूं.
द: महाराज हमीरसिंहका .... भींडर
द: रावत अमरसिंहजीका ... ... भैंसरोड़
द: कोठारी केसरीसिंहका
द: महता शेरसिंहका
द: पुरोहित श्यामनाथका

चीकलवासके पर्वानेकी नक़ल.

॥ श्रीरामो जयति ॥

॥ श्री गणेशजी प्रसादात्

श्री एकलिंगजी प्रसादात्

स्वस्ति श्री उदयपुर शुभस्थाने महाराजाधिराज महाराणाजी श्री शम्भुसिंहजी आदेशात् सहीवाला अर्जुनसिंह पंचौली कस्य:—

१ अपर गांव चीकलवास पर्गने गिरवा के रेख टका १०००) उपत

रु० १५००) हाल उपत रु० ११००) में थोय पटे मया हुवो है सो अमल करजे तागीर खालसा थी पर्वानगी पुरोहित सुन्दरनाथ लिखतां पंचौली रामसिंह सूरतसिंहवत सं० १९१८ वर्षे फागण सुदी ११.

नकल दूसरी उठन्त्रीकी.

सिद्धश्री श्रीदिवाणजी आदेशात् प्रत हुवे कोठारी केसरीसिंहजी वचनात गांव चीकलवासरा पटेल लोगां कस्य अपरंच गांव चीकलवास पर्गणे गिरवाके रेख टका १०००) उपत रु० १५००) हाल उपत रु० ११००) मे पचौली/उरजणसिंह सहीवाला हे पटे मया हुवो है सो अमल करावजो तागीर खालसा थी परवानगी पुरोहित सुन्दरनाथ लिखतां पचौली रघीराम राजारामोत बक्शी स० १६१८ फागण शु० १४.

गांव दूद्याखेड़ाके पर्वाने नम्बरी २८ की नकल.

स्वास्तिश्री उदयपुर सुथाने महाराजाधिराज महाराणाजी श्री शम्भुसिंहजी आदेशातु सहीवाला उरजणसिंह कस्य———————

———अपर थारी चाकरी मालूम हुई जींपर गांव दूध्याखेड़ो पर्गने करेड़ाके उपत रु० ६००) हाल उपत रु० १०००) एक हज़ारमें थने वख़्श्यो है, सो अमल करजे थारा सपूत कपूतके नभ्यो जायगा पर्वानगी महकमे ख़ास लिखतां पंचौली रामसिंह सूरतसिंहोत सं० १६२६ फागण वदी ६ भोमे.

नक़ल हुकूम नंबरी १६०८ बनाम पटेल पटवारियान दूध्याखेड़ा.

सिद्धश्री कोठारी श्री छगनलालजीरो हुक्म गांव दूध्याखेड़ारा पटेल पटवारी लोगांने पुगे अपरंच श्रावणे हुक्म महकमे ख़ास माह वदी ७ के से थाने लिखाजावे कि गांव दूध्या सहीवाला उरजणसिंहने वख़्शा है, सो उन्हाली थी यांरो अमल करावजो और हासल भोग वगैरह जमो यांने दीजो संवत् १६२६ का माह वदी ८.

बख़्शीजीके यहांकी उठन्त्री नम्बरी १३ की नक़ल.

सिद्धश्री श्री दिवाणजी आदेशात् गांव दूध्याखेड़ारा पटेल लोगां क़स्य

अपरच गांव दूधाखेड़ा पर्गणे करेड़ाके उपत रु० ६००) हाल उपती रु० १०००) एक हजारमें सहीवाला उरजणसिंह शिवसिंहोत हे पटे मया हुवो है सो अमल करावजो तागीर खालसाथी हुक्म महकमेखास माह वदी ७ संवत् हाल नम्बरी ११६१ लिखतां पचौली मथुरादास गोकुलदासोत बख्शी संवत् १९२९ का फागण वदि १



फ़स्ल तीसरी.

उहदोंके बयानमें.

सहीका काम मेरे खानदानमें कदीम जमानेसे चला आता है, बीचमें सिर्फ दामोदरदासजी, रायचन्दजीके नामके तांबापत्र शाजोनादिर निकलते हैं, ये महाराणा राजसिंहजी व जयसिंहजी के जमानेमें प्रधान रहे थे, इससे शायद मेरे बुजुर्गोंकी बीमारी या यात्राके सबब अदम मौजूदगी में लिखे गये होंगे. महाराणाजी श्री अमरसिंहजी सानीके वक्तसे याने विक्रमी १७६४ या ६५ से अबतक तो हुरूफ हुक्मसे एक ही रविशके चले आते हैं

पट्टे पर्वानोंपर पहिले श्री दर्बार भाला बनाया करते थे. महाराणाजी श्री लाखाजी संवत् १४३६ में गद्दीपर विराजे थे, उन्होंने १९ वर्ष ४ महीने ७ दिन राज्य किया इनके पाटवी कुवर चूंडाजी थे, जिनके वास्ते मंडोवरसे

निस्बतके नारियल लेकर मोतमद लोग आये उनके डेरे चित्तौड़की तलहटीमें हुए. एक रोज़ जब महाराणाजी श्री लाखाजी गढ़से तलहटीको हवाखोरीके वास्ते पधारे तो रास्तेमें डेरे देखकर दर्याफ्त फ़र्माया कि यह डेरे किसके हैं ? इस पर अर्ज़ हुई कि कुंवरजी चूंडाजीके वास्ते मंडोवरसे भले आदमी नारियल लाये हैं. तब श्री दर्बारने फ़र्माया कि जवानोंके वास्ते ही नारियल भेजे जाते हैं; हम जैसे बूढ़ोंको कौन भेजता है. यह सब हाल कुंवरजीने सुना और कहा कि अब मैं नारियल नहीं झेलूंगा, क्योंकि जब दर्बारने इसको चाहा तो वह मेरी मा होचुकी मंडोवरके मोतमदोंने सोचा कि नारियल वापस लेजानेमें हतक होगी, इसलिये कुंवरजीसे अर्ज़ किया कि या तो नारियल आप झेलें या श्री दर्बारको झेलावें, लेकिन् दर्बार के साथ शादी जब करें कि इन बाईजी के कुंवर हो तो वह गद्दीपर बैठे; और इस बातका इक़रार आप लिखदो. कुंवरजी ने यह क़ुबूल किया और तहरीर लिखदी. तब मंडोवर वालोंने लाखाजीसे उनकी शादी करदी, जिनसे मोकलजी पैदा हुए. मोकलजीने गद्दीनशीनी के बाद इकीस वर्ष एक महीने तीन दिन राज्य किया और अपने ज़मानेमें पट्टे व पर्वानोंपर भालेके निशान बनानेका काम चूंडाजीके सुपुर्द करके खुद दस्तख़त करने लगे. इन महाराणाकी गद्दीनशीनीका संवत् १४५४ विक्रमी है.

विक्रमी संवत् १५६६ में महाराणाजी श्री संग्रामसिंहजी (सांगाजी) गद्दी नशीन हुए. इन्होंने तांबापत्र, पट्टे तथा पर्वानों पर सही करना शुरू किया और उनको सही मेरे बुज़ुर्ग कराते, इससे “सहीवाला” ख़िताब

इनायत हुआ तभीसे सहीवाले मशहूर हैं. विक्रमी १६७६ माघ शुक्ला ५ के दिन महाराणाजी श्री कर्णसिंहजी मसनद नशीन हुए। चूडाजीकी औलाद में से जगावत् आमेट रावतजी और सांगावत देवगढ रावतजीने उज्र किया कि सलूंबर वाले भाला करते हैं तो हम भी चूंडाजीकी औलादमें हैं, इसलिये हमारी निशानी भी पट्टे पर्वानों पर होनी चाहिये. तब महाराणाजी श्री कर्णसिंह जीने हुक्म फर्माया कि सलूंबर व आपकी तरफसे एक आदमी मुकर्रर करदो वह भाला बनादिया करेगा तब उन्होंने श्री दर्बारसे अर्ज़ की कि श्री दर्बार जिसको मुनासिब समझें हुक्म बख्शें. श्री जी हुजूरने मेरे बुजुर्गोंके वास्ते फर्माया कि यह मेरी तरफसे लिखा करते हैं और मेरे भरोसेके हैं, इनसे कहदो कि आपकी तरफ़से भी भाला बनाया करे. उसी दिनसे भाला भी मेरे बुजुर्ग करते आये हैं. इसके सिलेमें सलूंबर की तरफसे एक गांव व पलेना घोड़ा कर दिया. यह गांव वर्षों तक भुगतभोगमें रहा, फिर जब्त करालिया इसी तरह देवगढ़की तरफसे आसूणा गांव (मोखणदा गांवके पास) विक्रमी सम्वत् १६०७ तक हमारे रहा, फिर रावत रणजीतसिंहने जब्त कर-लिया.

भालेका निशान पहिले इस तरहसे बनाया जाता था —

वह तर्ज़ महाराणाजी श्री स्वरूपसिंहजीने बदल दिया, तबसे इस तरहका

ाया जाता है:

महाराणाजी श्री अमरसिंहजी सानी संवत् १७५५ आश्विन शुक्ला २
ि दिन गद्दीपर विराजे. उनके वक्तमें शक्तावतोंने उज्र किया कि चूंडावतों
की तरफ़से तो भाला होता है, हमारी निशानी भी होनी चाहिये, जिसपर
श्री दर्बारने हुक्म फ़र्माया कि सहीवालोंको तुम्हारी तरफ़से भी कोई निशान
बतादो कि वहभी बना दिया करेंगे. तब उन्होंने अंकुशका निशान बनाने
को कहा, उस दिनसे पर्वानोंपर अंकुश इस तरह बनाई जाती है:—

पहिले लिखावट बिल्कुल संस्कृतमें होती थी, लेकिन् सं० १३५९ में रावल
श्री रत्नसिंहजीके ज़मानेमें पद्मनीकी बाबत दिल्लीके बादशाह अ़लाउद्दीनने
चित्तौड़ का मुहासरा किया और चित्तौड़ पर बादशाही क़ब्ज़ह होगया, इस
गर्दिश और परेशानीके ज़मानेमें लिखावटमें भाषा के शब्द मिलने लगे और
फिर महाराणाजी श्री हमीरसिंहजीके चित्तौड़ वापस लेलेनेके बादसे महा-
राणा श्री रायमल्लजीके अख़ीर वक़्त तक लिखावटमें बहुत भाषा मिलगई,
लेकिन् ढंग अबतक संस्कृतका ही चला आता है.

नावका कारखाना बहुत वर्षोंसे हमारे खानदानवालोंके शामलातमें था, संवत् १६०२ में महाराणाजी श्री स्वरूपसिंहजी ने ढींकड़या तेजरामजी, उदयरामजी को सौंपा फिर संवत् १६२८ में भाद्रपद शुक्ला ११ के दिन महाराणाजी श्री शंभुसिंहजीने मुझे (सहीवाला अर्जुनसिंहको) सौंपा. जगमन्दिर व जगन्निवास भी हमारे बुजुर्गोंके सुपुर्द थे, लेकिन् महाराणाजी श्री भीमसिंहजीके अहदमें दिवालीके दिन दरीखानेके वक्त जगमन्दिरसे साठे वक्तपर न पहुंचे, क्योंकि हवा बहुत जोरसे चलनेके सबब नाव देरसे आई, और दर्बार दरीखाने में देर तक विराजे रहे, इसलिये नाराज़ होकर जगमन्दिर व जगन्निवास विष्णुनाथजी पचोलीके सुपुर्द किये, जिनकी औलाद अबतक उसकी निगरां है.

जब श्री दर्बार नावकी सवारी फर्माते तो एक चमर कृष्णनाथजी पंचोली और दूसरा बाबभाईलालजी लेकर खड़े रहा करते थे और हमारे घरका एक आदमी धूपगेड़ी (छत्री) लेकर खड़ा रहता था, महाराणाजी श्री भीमसिंहजीने कूटा बनवाया और पहिली बार सवार हुए, तब फर्माया कि एक चमर कृष्णनाथ लेवे और दूसरा शिवसिंह सहीवाला लेकर पीछे आबैठे, तबसे लेकर संवत् १९०१ तक हमारे घरसे एक आदमी कूटेकी सवारी में चमर लेकर पीछे बैठता रहा. श्री महाराणा स्वरूपसिंहजीने नावका कारखाना और चमर ढींकड़या तेजरामजी, उदयरामजीके हवाले किया संवत् १६२८ मे महाराणाजी श्री शम्भुसिंहजी ने फिर नाव का कारखाना मेरे सुपुर्द किया, सब चमर बबा बदनजीके हवाले किया महाराणाजी श्री सज्जन-

सिंहजीने, जब धवाजी से नाराज़ हुए तो चमर धायभाई हुक्मजी को सौंपा, जो अबतक करते हैं.

राज्य में पहिले नावें थीं, फिर डूंडे तय्यार कराये गये और महाराणाजी श्री भीमसिंहजीने कॉब साहिबकी मारफ़त एक बड़ी व दो छोटी किश्तियां मंगाईं, बादह् महाराणाजी श्री सज्जनसिंहजीने आगबोट और चन्द्रविमान वग़ैरह उम्दह् २ किश्तियां मंगाईं. फिर श्री जी हुज़ूर महाराजाधिराज महाराणाजी श्री फ़तहसिंहजी बहादुरने कई किश्तियां मंगाईं कि जिससे अब कारख़ाने की बहुत रौनक़ होगई है.

विक्रमी संवत् १९११ के ज्येष्ठमें मुझे नीमच की विकालतपर भेजा, मैंने ज्येष्ठ शुक्ला २ को चार्ज लिया, और संवत् १९१७ पौष शुक्ला १ तक वहां रहा.

संवत् १९१८ के आषाढ़ महीनेमें महाराणाजी श्री शंभुसिंहजीके हुक्मसे पंच सर्दारोंने अदालत दीवानी का काम मेरे और साहजी जोरावरसिंहजी सूराणा के सुपुर्द किया, मगर थोड़े ही दिनों बाद बसबब शादी गुमानसिंह मेरा जाना न होसका.

विक्रमी सं० १९२० आषाढ़ शुक्ला १ को महाराणाजी श्री शम्भुसिंहजी ने फिर मुझे अदालत दीवानी के काम पर बमशाहरे १००) रुपया माहवार मुम्ताज़ फ़र्माया और एक दुशाला अता किया. सं० १९२८ फाल्गुन शुक्ला १५ तक बराबर काम अंजाम देता रहा.

संवत् १९२९ आश्विन कृष्णा ७ को अपील का काम सुपुर्द हुआ,

जिसको संवत् १९३१ भाद्रपद कृष्णा १३ तक अंजाम दिया और विक्रमी संवत् १९२६ मार्गशीर्ष कृष्णा ऽऽ से चैत्र शुक्ला १५ तक अपील के साथ सदर फौजदारी का काम भी अंजाम देता रहा

संवत् १९३१ भाद्रपद शुक्ला १५ को महाराणाजी श्री शम्भुसिंहजीने कैलवाड़े से, जहां मीनों के बन्दोबस्त के वास्ते गया था, बुलाकर महकमहखास के कामपर मुझे मुकर्रर फर्माया. इस कामसे आषाढ़ कृष्णा १३ को बवजह खास इस्तेफा दिया

फिर महाराणाजी श्री सज्जनसिंहजी साहिबने संवत् १९३४ के मार्गशीर्ष मे इजलासखास का काम सुपुर्द किया, जिसे संवत् १९३७ के श्रावण शुक्ला १५ तक अंजाम दिया. बाद इजलासखास का नाम राज्ये श्री महद्राजसभा रखकर पंड्या मोहनलालजी को उसका सेक्रेटरी मुकर्रर किया, जबसे अबतक मैं महद्राजसभामे मेम्बर हूं.



नक़ल असनाद.

नीमाहेडासे संवत् १९१४ मे फतहकी खबर मालूम होनेपर महाराणा जी श्री स्वरूपसिंहजी ने जो खास रुक्का लिख भेजा उसकी नक़ल नीचे दर्ज कीजाती है:—

रुक्केकी नकल.

॥ श्रीरामजी.

॥ श्रीएकलिंगजी. ॥ श्रीनाथजी.

खास दस्तखती इबारत ॥

थारा काग़ज़ विजनस मालूम हुआ ईंकी खुशी कठातांई लिखां.

स्वस्तिश्री श्री हुजूर को हुक्म सहीवाला अर्जुनसिंह हे, अपर थारो काग़ज़ आयो अर नींबाहेड़ा में अमल कीदो सो ईंकी तो बड़ी खुशी हुई और अगाड़ी थांने काग़ज़ में लिखायो है कि चन्द रोज़ की जेज राखजो अर अबे थां करकाढी सो या तो थांकी बड़ी चाकरी है और फेर समाचार पाबासूं लिखांगा अर वठारो बन्दोबस्त राखजो अर थारी नज़रमें आवे जतरो लोग राखजो संवत् १९१४ का आश्विन शुक्ला २ सोमे.



अदालत सदर दीवानी की खुशनूदी की बाबत कर्नैल विलियम फ्रेडरिक ईडन साहिब बहादुर रेजिडेन्ट राजपूतानाकी चिट्ठी का तर्जमह.



अर्जुनसिंह सहीवाले मुद्दतसे श्री दर्बारके मुलाज़िम हैं, जब कि यहां

की अदालत का काम बदवज़ा होने लगा, याने बद लोगोंने उसमें हर्ज डाला, तो फ़र्ज़ हुआ कि उसकी कोई तजवीज करनी चाहिये, इसलिये अर्जुनसिंह को दीवानी अदालत पर मुकर्रर किया और मालूम होता है कि यह इस उहदे की अच्छी वाक़फ़ियत रखते हैं और मैं उनके काम और चलन से बहुत राजी रहा. ये मुअज़्ज़ज़ आदमी हैं और अब तक नेक नाम है हम इनकी सिफारिश साहिब पोलिटिकल एजेण्ट से करते हैं और उम्मेद रखते हैं कि वे आपको काबिल शख़्स इस महकमहमें पावेंगे ता० ११ मई सन् १८६५ ई०



बीकानेर के मुआमलेकी बाबत महाराणाजी श्री शम्भुसिंहजी का ख़ास रुक्का. ख़ास दस्तख़ती:—

॥ श्रीएकलिंगजी.

म्हारो हुक्म मानीवाला अर्जुनसिंह है, अठच थां गयां केड़े समाचार नहीं सो लिखजे और बीकानेर को सब हाल तो पन्नालाल का कहासूं वाकिफ होजे, मुख्य साहिब ने कीजे कि दरबार आपने कहवाई है कि या बात वेती है अर हक़ भी मामाजी को है, सो याका बेटाईज गद्दीनशीन

होवे. भरोसो तो साहिब को अतरो है कि अगर हक़दार भी नहीं होवे और म्हे साहिबने कहां वा होजावे है जींकी जगा ये तो हक़दार है, जींमें दूजी हर्गिज़ नहीं हुई चावे जींमें म्हे यो अहसान कदी भूलां नहीं साहिब की शुक्रगुज़ारी करांगा जियादह कांई लिखां, तू समझवार है सो आछां साहिब ने दर्साजे जींमें यो काम वणे और थारी भी पूरी चाकरी दोई राजमें दीसे, बस ज़ियादह कांई लिखां शहूरदार इशाराही में समझ जावे है-वैशाख शुदी १२ भौमे संवत् १९२८.

नक़ल तहरीर कर्नेल जे० ए० राइट साहिब बहादुर क़ाइममक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़, ता० १४ दिसम्बर सन् १८७४ ई० म० उदयपुर.



अर्जुनसिंह दूसरे वज़ीर पेशगाह महाराणा शम्भुसिंहजी वैकुण्ठवासी से उस महकमह में, जहां पण्डित लक्ष्मणराव विक्रमी १९२२ में बमशाहरे २५०) मामूर थे, उसी तनख्वाह पर नौकर रक्खेगये हैं और तफ़सील लवाज़िमे की यह है—

१५) कामदार.	१२) ब्राह्मण २
७) घोड़ावाला.	६) दर्ज़ी.

६) नाई.	७॥) खानगी नौकर.
७) खानगी नौकर सानी	४२) खानगी नौकर ७ प्र० ६)

जुम्मे रुपया १०२॥)

कुल ३५२॥)   छड़ीदार १ सर्कारी पहरा १ सिपाही ७, जिसमे हवल्दार की तनख्वाह प्र० ७) और सिपाहीकी प्र० ६).

तर्जमह चिट्ठी कर्नेल जी० ए० राइट साहिब बहादुर क़ाइममक़ाम पोलिटिकल एजेण्ट मेवाड़.

अर्जुनसिंह सहीवाले वज़ीर श्री दर्बार उदयपुरने मेरे तहतमें महकमह-ख़ास का काम मेरे सामने किया और उन्होंने अपने कामको बहुत अच्छी तरहसे हस्ब मन्शा मेरे अंजाम दिया और मुझको बहुत ज़ियादह खुश रक्खा, श्री दर्बार के यह अच्छे खैरख्वाह नौकर हैं, जो फ़ाइदेकी बातें हों उनका अच्छी तरहसे आगे पीछे निहायत खयाल रखते हैं— ता० ८ मार्च सन् १८७५ ई० मु० उदयपुर

महाराणाजी श्री सज्जनसिंहजी के रुक्के, जो इजलासख़ास व महद्राज-

सभाकी मेम्बरी बाबत मुझे मिले उनकी नकलें ज़ैलमें दर्ज की जाती हैं:-

रुक्का नम्बरी ३२.

स्वस्तिश्री श्री हुज़ूर को हुक्म महीवाला अर्जुनसिंहजी से अप्रंच ॥ म्हांको दिली इरादो यो है कि राज्य को काम इन्साफ़ के साथ चाले ओंमें मुल्ककी बहबूदी होवे और अम्नो आमान रहवे, ई वास्ते इजलासख़ास का मेम्बर थांने मुक़र्रर किया है सो थे वक्त इजलास असी नेक राय देवो सो म्हांकी मुराद ऊपर ज़ाहिर कीगई है वा हासिल होवे संवत् १९३४ वर्षे चैत्र कृष्ण १३ बुध.



दूसरा रुक्का नम्बरी ६.

॥ श्रीरामजी.

॥ श्रीएकलिंगजी. श्रीनाथजी.

हुक्म

महीवाला अर्जुनसिंहजी,

अप्रंच ॥ इजलासख़ास में बज़रिए ख़ास रुक्का के थांने मेम्बर कियागया हो, अब बजाय इजलासख़ासके महद्राजसभा मए कुल क़ाइदा के श्रावण शुक्ला १५ सं० १९३७ सूं मुक़र्रर होवेगी, सो थांने इजलासख़ास का मेम्बर पद

के एवज़ मह्द्राजसभा का मेम्बर कियागया है, सो जो क़ाइदा व इख़्तियार तजवीज हुवा वींपर पूरो अमल राख साथ मिह्नत व कोशिश के वग़ैर रू रिआयत मुन्सिफाना तौर सू काम अजाम देता रहे और हमेशह अपक्षपात ऐसी नेक राय होवो करे कि जींमें दिन बदिन इन्साफ और अम्न जोकि ईं सभाका कायम करवा सू ख़ास मुराद है, हासिल होर थांकी भी हर तरह इन्साफ पसन्दी व नेकनामी ज़ुहूर में आवती रहे संवत् १९३७ का श्रावण शुक्ला ११ सोमे

फ़स्ल चौथी.

मन्दिर श्री चतुर्भुजजी व गोवर्द्धननाथजी महाराज व उनकी जागीर व पुरोहितों की ज़मीन के बारे में.

भटियानी चौहटे में खेमणघाटी के सामने और देवगढ़ की हवेली से पश्चिम लकाऊ कोणपर लबे सड़क सफेद पत्थर का एक मन्दिर है, जिसकी क़ुर्सी १० फुट ऊंची, ६४ फुट लम्बी और १७ फुट चौड़ी है और क़ुर्सी से मन्दिर का शिखर ४०। फुट ऊंचा है इसके पीछे एक दो-मंजिला मकान पुजारी के रहने के वास्ते बना हुआ है और उत्तर वाले एक-

मंज़िले मकान में किरायेदार रहते हैं, उसके सामने कान्हपोल नामी दर्वाज़ा हमारी हवेली का था, जो बिल्कुल गिरगया और जिसकी लंकाऊ सिम्त में एक दूकान मन्दिर के भेट कीहुई है और दूसरी तरफ़ पुजारी हाल ओझा नरसिंहजीने एक मकान दोमंज़िला बनाया है. यह मंदिर कान्हजी सहीवालाने वि॰१७७८ में बनवाया था और श्याम रंग की निहायत खूबसूरत मूर्ति श्री चतुर्भुजनाथजी की स्थापित कर कन्हैयालालजी नाम रक्खा और पूजन के वास्ते ओझा दौलतरामजी सुखवाल को मुक़र्रर किया, जिनकी औलाद अबतक पूजा करती हैं, इस मन्दिर के डोरा फेरागया तब महाराणाजी श्री संग्रामसिंहजीने दर्शन को पधारकर १०० बीघा ज़मीन भेट की, उसकी सनद की नक़ल नीचे दर्ज है, कान्हजी की बहुतसी बातें क़ाबिल फ़ख्र सुनते हैं. इनके नामसे कान्हजी की हाटें कान्होड़ की हवेली के आगे और कान्हबाग़ अब तक मशहूर हैं. इनपर श्री दर्बार की पूरी खाविन्दी थी, जहां अब भवानजी ढींकड्या का नोहरा है वहां इनके हाथीका ठाण था.

दूसरा मन्दिर आसींद की हवेली के नीचे गोकुलचन्द्रमाजी के मन्दिर के साम्हने लबे सड़क वाक़े है. आसींद की हवेली पहिले हमारे बुज़ुर्गों के क़बज़ेमें थी. यह मन्दिर बे शिखर है, इसे कान्हजी के बड़े भाई गोवर्द्धनदासजी ने बनवाया था और ज़मीन अपने गावों में से भेटकर श्री दर्बार से उसकी सनदें करवादीं, जिनकी नक़लें भी नीचे दर्ज हैं. श्री दर्बार की इनपर भी पूरी मिहर्बानी थी, जब इनकी औरत का इन्तिक़ाल होगया, तो इन्होंने एक पासवान घरमें रक्खी, जिनका नाम नाथीबाई था, वह गोवर्द्धनदासजीके

साथ सती हुई और उनको गंगोद्भव पर महासत्यों के कोटके अन्दर दाग दिया उनकी छोटीसी छत्री चार थम्भेकी पश्चिमी दीवार के पास है.

श्री. चतुर्भुजजी महाराज के मन्दिरकी जायदाद की सनदे.

तांबापत्रकी नक़ल.

महाराजाधिराज महाराणाजी श्री संग्रामसिंहजी आदेशात् ग्राम बबराणो पर्गणे कपासण के जथी मांहे धरती हल दोयरी बीघा १०० एक सौ री मधे बीघा २० पीवल उन्हाली ने बीघा ८० माल मगरो सियाली लागत सर्व सुधी ठाकुर श्री चतुर्भुजजीरो देहरो पचौली कान्ह लखमण करायो जठे हजूर दर्शन पधारया सो उदक आघाट कर श्री रामार्थपण ओझा दौलतराम हे कीधी दुवे श्रीमुख ॥ श्लोक ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरति वसुन्धरां। षष्ठिवर्षसहस्राणि विष्टायां जायते कृमी ॥ प्रत दुवे पचौली रायचन्द लिखता पचौली लक्ष्मण छीतरोत स० १७७८ वर्षे पौष वदी सोमे.

महाराणाजी श्री प्रतापसिंहजी सानीके पर्वानेकी नक़ल.

स्वस्तिश्री उदयपुर सुथाने महाराजाधिराज महाराणाजी श्री प्रताप-

सिंहजी आदेशात् ओझा दौलतराम कस्य अपर गांव सांड्यारड़ा पर्गणे कपासणरे तींमें धरती हल १ री बीघा ५० सं० १८०८ वर्षे मिंगसर सुदी १५ गुरे रे दिन चन्द्रग्रहण में उदक आघाट करे श्री रामाअर्पण करेदीधी लागत विलगत घर ठाम सूधी विगत बीघा—पीवल बीघा १० दस माल मगरो बीघा ४० पर्वानगी पडियार अमरचन्द सं० १८०८ वर्षे पौष सुदी १२.

रुक्केकी नक़ल.

स्वस्तिश्री श्री हुजूर को हुकम सहा हंसराज गलूंड्याहे अप्रंच भीलोड़े गोलक में थी टको १ केसररो दिन १ प्रत चल्लू थत्या म्हे थी पंचौली कान्हजी छीतरोत के देवरे ठाकुरजी श्री चतुर्भुजरायजीरे पावेहा सो वचे अटकाणो सो पाछो नवेसर थी थत्या में थी गोलकमें थी टको १ दिन प्रत चल्लू दीधां-जाजो, चड्यो व्हे जो परोदीजे पाछी पुकार आवादे मत सं० १८५२ वर्षे काती सुद ३. सरे सावतरी छाप.



इसके अलावह नीचे लिखे ग्रामोंमें भी ज़मीन है और इनपर क़बज़ह व भुगत भोग बना हुआ है:—

सांगरया, रूपाखेड़ी, दांता.



ठाकुर श्री गोवर्द्धननाथजी के मंदिर की जायदाद के तांबापत्र की नक़ल.

महाराजाधिराज महाराणाजी श्री जवानसिंहजी आदेशात् ठाकुरजी श्री गोवर्द्धननाथजी का सेवग बामण मौजीराम मेगा जात गूजरगौड़ कस्य अपर गांमां मे धरती बीघा ४३ आगली जूनी उदक आपी जीरो अधार निर्धार करने पाछी या जमीन उदक आघाट श्री रामाअर्पण करे श्री ठाकुर जी के भेट करी श्री हुजूर सूं नवो तांबापत्र करायदीधो है हांसल चल्लू खाता पीता व्हे सो खायां पीयां जासी यो पुण्य श्री जी को है राज सूं लागत लागती व्हेगा सो लेवेगा नवी व्हेगा नहीं जूनी मिटेगा नहीं. आगलो महाराणाजी श्री संग्रामसिंहजी को दीधो दत्त–

गांव कोदू कोटा मे जमीन बीघा ११

गांव पयराणा में बीघा ६

गांव खारखदा मे बाईजीराज की दान की हुई १० बीघा.

गांव भेसा कुडल में ३ बीघा.

गांव लकड़वास पर्गने गिर्वा के रहंट १ श्री चन्द्रकुंवरबाई को दान किये हुओ १० बीघा पीवल.

गाव दाना मे ३ बीघा.

कुल जमीन ४३ बीघा कूट्टा नियाण स्त्र परग लागत मूदी सायत करदेयाणी है सो मेघा सामगरी उदय करेगा ज्यो खाया पायां जासी ईकी कणी बात की चोलण होगा नहीं प्रत हुवे महता [illegible] लिखनां पर्चोली

सूरतसिंह नाथूरामोत सं० १८६३ रा आसोज सुदी ११ गुरु.



एक रुक्का महता शेरसिंहजी के नाम गांव नेवरयां में महाराणाजी श्री जवानसिंहजी की पासवान बाई रंगरेखा की दी हुई ज़मीन बीघा १० नपादेने की बाबत है.

नीचे लिखे ग्रामोंमेंसे पुरोहितोंको ज़मीन दीगई, अबतक उनके भुगतभोग और क़बजेमें है:—

सांगरया, बबराणा, चीकलवास, रूपाखेड़ी और जाडाणा.



तांबापत्रकी नक़ल.

महाराजाधिराज महाराणा श्री हमीरसिंहजी आदेशात् पंड्या वेणीराम संभु गंगारामरा जात सुखवाल कस्य ग्राम सांगरयो पर्गणे ताणा रे पटे पंचौली गुलाबरायरे थो तीं म्हे धरती हल १ री बीघा ५० पचास पंचौली कान्हरे अंत समे पंचौली गुलाबराय महाराणाजी श्री जगत्सिंहजी थी अरज कर देवाई लागत विलगत सरब सूदी उदक आघाट करे श्री रामाअरपण करे दीधी तींरो तांबापत्र करदीवाणो थो सो दंगा में जाता रयो तींरे बदले दूजो करेदेवाणो ॥ श्लोक ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हराति वसुन्धरां ॥ षष्ठि

वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते क्रमी ॥ प्रत दुवे पंचौली किसनराय लिखता पचौली गिरधरलाल गुलाबोत स० १८३० फागण सुदी १४ गुरे.

गांव बबराणा मे जमीन जिसकी वसी खेतके ऊपर सुरे रूपी हुई है, उसकी इबारत बवजह खण्डित होनेके पूरी नहीं पढ़ीजाती, इस कदर पढ़ीजाती है कि गांव बबराणा मे जमीन बीघा ५ महाराणाजी श्री सग्राम-सिंहजी की वक्त मे पड्या बेणीराम शम्भुराम को पंचौली कान्हजी ने दिल वाई स० १७६७ मे जिसपर आज तक भुगत भोग है

गांव चीकलवास के पट्टे की नकल.

पंड्याजी श्री ताराचन्दजी शिवलालजी जेशंकरजी ऊंकारलालजी जोग लिखतां सहीवाला अर्जुनसिंहजी अपरच गाव चीकलवास में जमी बीघा ३ अख्रे तीन श्री रामाअरपण कर पुन अरथ करदेवाणी सो ईं जमी रो हांसल भोग थे ग्यायां पाया जाजो ईं जमीरी चोलण थासूं तथा थारा बेटा पोता सपूत कपूत ताईं वेगा नहीं, जमी तलावरी पछोर मे माप दीदी सो पल्यां जायेगा या जमी मपी जद गावरा पच सामल वेर मपाय दीदी जींरा अख्र पचौली कालूरामजीरा हातरा स० १६३३ का भादवा सुद १ री मती में लिख देवाणा सो वे अख्र गमगया वनाया जींसू थांने अबे ईं अख्र करदेवाणा हैं सो पल्यां जावेगा दसखत शकरलाल ओझा का रावला हुकम सू लख देवाणी स० १६४७ का प्रथम भादवा सुद १३ गुरे.

तांबापत्र की नक़ल

महाराजाधिराज महाराणाजी श्री जवानसिंहजी आदेशात् पंड्या लखमीचन्द लछीराम सदाशिवरा जात मुखवाल कस्य———————— गांव ३ मांहे धरती बीघा ७४ अखरे चमोतर आगलो जूनो दत्त हो जींरी कबज दंगा में जाती रही जींरो अबार निरधार कर पाछो उदक आघाट श्री रामाअरपण करे तांबापत्र करे देवाणो हो सो हाल चल्लूखातो पावनो व्हे सो खायां पायां जाजे यो पुण्य श्री जी को है नवी तो व्हे नी जूनी मिटेगा नहीं कूड़ो निवाण स्त्र वरख सूदी विगत गांव बखराणा में जमी बीघा १६ महाराणाजी श्री संग्रामसिंहजी को दीदो दत्त–६ वहत, १० पड़त.

गांव झाड़ाणा में ज़मीन बीघा ४६ महाराणाजी श्री राजसिंहजीरो दीदो दत्त- पीवल ३, वहत ६ पड़त, ४०.

गांव रूपाखेड़ी में ज़मीन बीघा १० महाराणाजी श्री अरिसिंहजीरो दीदो दत्त–पीवल २, पड़त ८.

जमे बीघा ७४ पीवल रांखड़ सूदी और गांव सलूंबर में महादेवजी श्री जागेशरजी रे देवरे गांव चीबोड़ारा दाण में थी मास १ प्रत २।) अखरे सवा दो रुपया श्री दाजीराज पुण्य अर्थ कर दीदो सो चल्लू खायां जासी श्लोक—स्वदत्तां परदत्तां वा ये हरन्ति वसुन्धरां। षष्ठिवर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते क्रमी॥ प्रत दुवे महता उम्मेदसिंह लिखतां पंचौली सूरतसिंह नाथूरामोत सं० १८९० रा असाड वदी ५ शुक्रे.

श्री चतुर्भुजजी महाराज के मन्दिर का शिखर वाला भंडा गिरगया तब महाराणाजी श्री स्वरूपसिंहजी से अर्ज की तो ३००) रुपये मरम्मत के वास्ते बख्शे और १००) काकाजी अचलदासजीने, ५०) रुपये बा साहिब शिवसिंहजीने दिये. विक्रमी १६०८ के वर्ष में-भंडा और ध्वजादंड दूसरा चढ़ाया और सुखवालों की जात को भोजन दिया

खेमणघाटी के उत्तार पर महादेवजी की देवरी पीपल के नीचे है उसका जीर्णोद्धार चिरंजीवि गुमानसिंहजी के हाथ से संवत् १६३६ में कराया गया.



बाब दूसरा,

सवानह उम्री.

फ़स्ल पहिली.

दरबयान बचपन व तह्सील इल्मो हुनर.





मेरा जन्म संवत् १८८२ श्रावण शुक्ला २ के दिन हुआ. मेरे पिता सहीवाले शिवसिंहजी सहीवाले नाथजी के तीसरे पुत्र थे. सूरत-सिंहजी व शिवलालजी इनसे बड़े थे और अचलदासजी इनसे छोटे थे. नाथजी के इन्तिकाल के वक़ शिवसिंहजी और अचलदासजी की उम्र बहुत कम थी, इसलिये अचलदासजी अपनी ननसाल ग्राम मऊवाड़े चले गये और शिवसिंहजी अपने बड़े भाईके पास रहकर श्रीदर्बार की चाकरी में हाज़िर रहने लगे. श्री जी हुज़ूरकी दिन दिन नज़्रे पर्वरिश और मिह्वानी बढ़ती गई. इस तरक़्क़ीए इक़्बाल को देखकर पंचोली स्वरूपचन्दजी चूंडावत् ने, जो नगीनाबाड़ी और कोठार के दारोग़ा थे, अपनी बेटी इनको व्याहदी. स्वरूपचन्दजी के बेटे रूपचन्दजी ने अपने चचेरे भाई अखैचन्दजी के पुत्र ज़ालिमचन्दजी को गोद लिया. कुछ अरसे बाद बा साहिब शिवसिंहजी अपने भाइयों से अलग रहने लगे और मौरूसी सही के काम व नावके

कारखाने के अलावह महाराणाजी श्री भीमसिंहजी की राणीजी श्री बीकानेरीजी की विकालत भी करते थे, श्री दर्बार की हरतरह नवे पर्वरिश थी मे अपने इस छोटेसे रिसाले मे अपने माता पिता के औसाफ बयान नहीं कर सक्ता जिस नाज व निअ्मत वे मुहब्बत से वे अपने बचो और मुत्अल्लकीन की पर्वरिश करते थे वह बयान नहीं होसक्ती.

महाराणाजी श्री भीमसिंहजी पचास वर्ष राज्य करके संवत् १८८४ में देवलोक पधारे.

महासती नाथी माताकी मानता से मेरे सिरपर बाल रक्खे गये थे, जब मे पांच वर्षका हुआ, तब उतारे गये बादह मुझे श्री चतुर्भुजजी महाराज के दर्शनों को लेगये संवत् १८८८ मे मैं अपनी सात वर्षकी अवस्था मे हरचन्दजी जतीके पास हिन्दी पढ़ने लगा और दो वर्ष तक हिन्दी पढ़ी, उनका उपासरा (स्थान) कमेरो की ओलमे है, उसके बाद फार्सी पढ़ना शुरू किया

महाराणाजी श्री जवानसिंहजी संवत १८८५ मे मसनद नशीन हुए इन्होंने संवत् १८८८ मे अजमेर पधारकर लाट साहिब से मुलाक़ात की, वहां पर शाहपुरे से सर्कारी पुलिस उठादेनेके लिये लाट साहिब से कहा और गयाजी जानेकी ख्वाहिश जाहिर कर रास्ते के बन्दोबस्त के वास्ते कहा और एक अंग्रेज अपने साथ रखने को मांगा लाट साहिब ने श्री दर्बार की ये सब बातें मंजूर कीं, चुनाचि शाहपुरे से पुलिस उठादी गई और गयाजी पधारने के लिये सात आठ रोज करार पाया.

विक्रमी १८८९ में गयाजी तश्रीफ़ लेजाने के बन्दोबस्त के वास्ते लॉकट साहिब बहादुर रेज़िडेंट राजपूताना के नाम ख़रीता भेजा गया. उसके जवाब में लिखा आया कि इस साल नहीं साल आइन्दह में तश्रीफ़ लेजावें. यह ख़रीता अजमेर के वकील लाला चिरंजीवलालजी के बेटे विनोदीलालजी ने जगन्निवास के धौले महल में पढ़कर सुनाया तो दर्बार रंजीदह होकर बोले कि ये परदेशी मेरी मर्ज़ी को नहीं पहिचानते और अपने राजमें कोई फ़ार्सीदां नहीं है. इतना कहकर मेरे पिता शिवसिंहजीको हुक्म फ़र्माया कि तेरे बेटे को फ़ार्सी पढ़ा. तब भीम पल्टन के अजीटन शैख़ शुब्राती की मारफ़त मियां इम्दादहुसैन लखनऊ वाले को मुझे पढ़ाने के वास्ते नौकर रक्खा. उन्होंने छः माह में खालिक़बारी व आमदनामह वग़ैरह पढ़ाया, फिर रुख़्सत लेकर चले गये तो अजीटन से फिर कहा. उन्होंने धौलपुरवाड़ी के मियां रौशनख़ां को, जिनके भाई हयातख़ां अर्दली में अबतक मेजर रहे थे, भेजा. उनसे करीमा और दस्तूरुस्सुबियां पढ़ना शुरू किया. इसी अ़र्से में संवत् १८९० भाद्रपद में श्री दर्बारने गयाजी पधारने की तय्यारी की और मेरे घर से बा साहिब शिवसिंहजी, बाबाजी सूरतसिंहजी, काकाजी अचलदासजी व दादाभाई धनलालजी को साथ जाने का हुक्म हुआ. तब रौशनख़ांजी ने कहा कि मुझे घर गये बहुत अरसा हुआ है, अगर इनको भी साथ लेचलें तो इनका पढ़ना भी होता रहेगा और मैं भी घर हो आऊंगा, इससे मुझे भी साथ लिया, यहां से भाद्रपद महीने में कूच हुआ. राणी साहिब श्री भटियाणीजी मोही वाले साथ थे, फ़ौज दस हज़ार के क़रीब थी, देव गांव, फूलया,

और केकड़ी होते हुए अजमेर को बीच में छोड़कर मथुरा पहुंचे. लॉरूट साहिबने लाट साहिब के बराबर मुलाकात चाही श्री दर्बारने इन्कार किया, इस वास्ते अजमेर नहीं पधारे. मथुरा से वृन्दावन, गोकुल व गिरिराज होकर दशहरे पर फतहपुर पहुंचे. यहां गाढेराव नामी हाथी मरगया. दिवाली अयोध्या के जिले के गांव भरतकुंप में हुई. अयोध्या पधारते वक्त पांच मंजिल तक अवधके नव्वाबकी तरफ़ से राजा दर्शनसिंह पेश्वाई में रहे, और सब तरह सर्वराह व मिह्मान्दारी उम्दह तौरपर की. अयोध्या मे मकाम फर्माया फिर काशी होकर प्रयाग पधारे और वापस पधारकर काशीमें पंचकोशीकी यात्रा पैदल की और एक महीने तक वहीं कयाम फर्माया एक पर्व भी हुआ मृगशिर शुक्ला १० को श्री जी हुजूर का जन्मोत्सव हुआ फिर गयाजी पधारे, वहा गयाश्राद्ध करके गयागुरु आशारामजी को एक गांव व सरोपाव तथा मोतियों की कंठी व सर्पेच दिया और दलबादल नामी हाथीपर बिठा आप तमाम सर्दारों समेत जलेब मे रहकर उनको पहुचाने गये.

पहिले कुराबड़ रावत जवानसिंहजीने, जब कि वह गयाजी गये थे, दूसरे को गयागुरु माना था, इसलिये उनको भी भोजन कराकर सरोपाव दिया, और उसी तरह हाथीपर चढ़ाकर घरतक पहुचाये, इनहे पहुचाने को कृष्णावत सर्दार रावत जवानसिंहजी व आसींद रावत दूलहसिंहजी वगैरह गये थे फिर गयाजी से काशी होते हुए चित्रकूट पधारे, यहा आधी फौज समेत जनानह को छोड़कर श्री जी हुजूर रींवां मे रौनक अफ़रोज हुए. उन

दिनों महाराज जयसिंहजी थे, मगर युवराज पदवी महाराजकुमार विश्वनाथसिंहजी को देदी थी और उनके कुंवर रघुराजसिंहजी की उम्र नौ या दस वर्ष की थी. श्री दर्बार ने कुंवरपदे में महाराज जयसिंहजी की बेटी और विश्वनाथसिंहजी की बहिन सुभद्रकुमारी से शादी की थी; उनके इन्तिकाल के बाद रिश्तहदारी फिर क़ाइम रखने की ग़रज़ से श्री दर्बार को अर्ज़ कराई कि विश्वनाथसिंहजी की बाई जानकीजी से शादी करलें, जिससे रिश्तहदारी बक़रार रहे, लेकिन् जानकीजी की उम्र सात वर्ष की थी, इसलिये श्री जी हुज़ूरने साफ़ इन्कार करदिया. चार पांच दिन रीवां रहे तब तक सर्बराह व मिहमान्दारी अच्छी तरह हुई. रवानगी के दिन आधी फ़ौज रवानह होचुकी थी कि युवराज कुंवर विश्वनाथसिंहजी पालकी में बैठकर ड्योढ़ीपर आ मौजूद हुए और अर्ज़ कराई कि बग़ैर शादी किये हर्गिज़ जाने न दूंगा; रास्ते में सो जाता हूं मेरी छाती पर पैर देकर पधारें तो पधारें. तब महाराज सर्दारसिंहजी, रावत् जवानसिंहजी, रावत् दूलहसिंहजी महासानी बख़्ताजी, पंचोली कृष्णनाथजी, हरनाथजी और पुरोहित श्यामनाथजीको बुलाकर बहुत कुछ कहा सुनी की और उन्हें समझानेको भेजा, लेकिन् विश्वनाथसिंहजीने न माना. फिर कमसिनीका उज़्र किया, तो विश्वनाथसिंहजीने कहा कि हमारे भाई लक्ष्मणसिंहजीकी बेटी ईश्वरकुंवरबाई ग्यारह वर्षकी हैं, उनके साथ शादी करें, वह भी हमारी ही है. हमारी रिश्तहदारी बहरसूरत पीछी क़ाइम होनी चाहिये. श्री दर्बारने उनकी ख़ातिर क़ुबूल फ़र्माकर शादी मंजूर की. फिर चित्रकूट पधारे, होलीका

त्यौहार वहीं हुआ और बांदेमें आकर घोडोंकी फाग हुई वहां से बुन्देलखड मे हरदेवजी बलदेवजीके स्थानपर होकर चर्खारी पहुंचे. इनके स्थानपर कोई नक्कारा नहीं बजासक्ता. चर्खारीसे झांसी और गूने की छावनी होकर कोटे पधारे. कोटे पधारनेकी बाबत पहिले राज माधवसिंहजीने बहुत कुछ खतकितावत की थी. मगर कोटे पहुंचनेसे पहिले ही माधवसिंहजी बीमारीके सबब इस नापायदार दुनियासे कूच करचुके थे. कोटे महारावजीसे हस्ब दस्तूर मुलाकात हुई और राज मदनसिंहजीको मेवाडके उमरावों की तरह तलवार बंधाईगई, फिर कोटेसे भैंसरोडगढ़ पधारे. वहां रावत् अमरसिंहजी ने हस्ब दस्तूर अच्छी पधरावनी की. फिर बेगू पधारे यहां भी रावत् किशोर-सिंहजीने पधरावनी वगैरह अच्छी की. वहांसे बसी होकर चित्तौड पधारे, और उदयपुर को रवानह हुए श्री जी हुजूरने श्री एकलिंगजी के दर्शन कर चपाबाग में कयाम फर्माया, फिर सुमुहूर्त से शहर में रौनक अफ़रोज़ हुए उस दिन शहर मे बडी खुशी मनाई गई

मेरी निस्बत पंचोली कल्याणबख्शजी के यहां हुई थी यह कोटे वाले माजी साहिब हाडीजी के कामदार थे और इनके घरके लोग भी ज़नाने मे आया जाया करते थे जब संवत् १८८८ मे बा साहिब शिवसिंहजी श्री दर्बार के साथ अजमेर गये थे, उन दिनों यहांपर कल्याणबख्शजी की औरत ने श्री माजी साहिब हाडीजी से मेरी निस्बत के वास्ते अर्जकी तब श्री माजी साहिबने मुझे ड्योढ़ी बुलाकर कल्याणबख्शजी की औरत को गोद भर देनेके वास्ते हुक्म दिया उन्होंने वहां तिलक कर गोद भरदी.

श्री दर्बार के अजमेर से वापस यहां पधारने पर दोनों तरफ़ से गोद व सरोपाव वग़ैरह दस्तूर अदा किये गये. कल्याणबख़्शजी पहिले श्री माजी साहिबके कामदार थे, फिर पांच पर्गने उनके सुपुर्द होगये; बादह् उन्होंने दाणका ठेका लिया, जिसमें एक लाखका टोटा पड़ा, तब पचास हज़ार तो श्री दर्बारने मुआफ़ फ़र्माये, बाक़ी पचास हज़ार जमा करानेमें वे बर्बाद होकर कोटे चले गये. उनकी लड़की, जिसके साथ मेरी निस्बत हुई थी, विक्रमी १८९० में बीमार होकर मरगई और मेरी निस्बत दिल्ली दर्वाज़े पंचौली गंगादासजीके यहां क़रार पाई.

विक्रमी १८९१-९२ में मैंने पर्वानेके हुरूफ़ ज़माकर एक पर्वानह श्री जी हुज़ूरके नज़ किया, तब मुझे एक पगड़ी व दुपट्टा इन्आममें बख़्शा गया, दूसरी बार फिर कुछ श्लोक लिखकर नज़ किये उसपर पाग व दुपट्टा इनायत हुआ.

विक्रमी १८९१ में पुराने तांबापत्र नये होने लगे. श्री दर्बार इसी साल आबूको पधारे और विक्रमी १८९३ में ऋषभदेवजी होकर सलूंबर पधारे, वहांपर गद्दी ठाकुर अर्जुनसिंहजीने क़दमबोसी हासिल की, वहांसे कुराबड़ होकर उदयपुर पधारे.

विक्रमी १८९३ के भाद्रपदमें नाहरमगरे पधारे, वहां हरियाली व दागड़े (एक वर्षका सूअर) का शिकार और नदीका बहना बहुत पसन्दीदह मालूम हुआ, चार पांच दिन वहीं क़याम फ़र्माया, बादह् वहांसे रवानह हुए, रास्तेमें हरिन आड़े फिरे, तब सब सर्दारोंने अर्ज़की कि शकुन अच्छे नहीं हैं,

परन्तु श्री दर्बारने इसकी कुछ पर्वा न की. फिर सूर्यपोल आते आते रास्तेमें सर्प आड़ा फिरा, तब महाराज सर्दारसिंहजीने अर्ज की कि शकुन अच्छे नहीं हुए हैं, इसलिये चंपाबाग पधार जावें, शहरमें न पधारें, लेकिन् श्री दर्बारने न माना और महलोंमें पधार गये. इस वाकएसे पहिले एक घोडा, जिसके हृदावली थी, दाग दिलाकर खरीद लिया गया और उन्हीं दिनोंमें एक हामिला हथनी खरीदी गई, उसके बच्चा पालपर बचा हुआ ये दोनों शकुन भी बुरे समझे गये थे

नाहरमगरेसे पधारे उसके दूसरे दिन गणेशचतुर्थी थी, श्री दर्बार नौलखा बागमें पधारे, दिनभर वहीं बिराजे, शामको गोठ और राग रंग हुआ, वहांसे सवार होकर बालागणेशजीके दर्शनकर महलों पधारे, डेढ़ पहर रात गये चोटी की जगह दर्द शुरू हुआ, वह बना रहा. भाद्रपद शुक्ल ८ के दिन बुखार भी चढ़आया, नवमी को बीमारी बढ़गई और भाद्रपद शुक्ल १० (तेलादशमी) को डेढ़ पहर दिन चढ़े देवलोक पधारे, तमाम शहर में हाहा-कार मचगया. जब इस आखिरी सवारी का नक़ारा हुआ तो तमाम गिर्वा के लोग तेलादशमी की सवारी की नक्क़ारा समझकर सवारी देखनेको दौड़ कर आये और यह हाल देखकर हाहाकार पुकारने और रोने लगे. श्री दर्बार के साथ मोतीवाली बड़ी भटियानीजी अर्थ कुंवरबाई रीवा की पांचेलीजी ईश्वरकुंवरबाई और ६ सहेलियां सती हुईं सवारी में भटियानीजी सुरंग पशाणिक पन्ना नामी घोड़ेपर सवार थीं और बाघेलीजी सुरंग सागर पर इस घोड़ेने खियांलिया में आकर दगा दिया, इसलिये रूपनगर वाले

मोरध्वज नामी घोड़े पर बड़ीपौलसे सवार हुई. क्रिया महाराज सर्दारसिंहजी ने की.

मस्नदनशीनीकी बाबत बखेड़ा खड़ा होगया. महाराणाजी श्री भीमसिंहजीके बड़े कुंवर अमरसिंहजीकी ठकुराणी चांपावतजीने तो महाराज शेरसिंहजीके बेटे शार्दूलसिंहजीके वास्ते कहा और महाराज सर्दारसिंहजी ने अपने छोटे भाई स्वरूपसिंहजीके लिये राय दी. इस सलाह ही सलाह में दस दिन तक गद्दी ख़ाली रही. महाराज सर्दारसिंहजी दाग़ तिथिकी क्रिया करके कोठीपर पधारगये और महाराज शेरसिंहजी, स्वरूपसिंहजी और शार्दूलसिंहजी को अपने पास बुलालिया. फिर सब सर्दार पासवान जमा हुए और आसींद रावत् दूलहसिंहजी आसींदसे आये, तब उन्होंने व सलूंबर रावत् पद्मसिंहजी व देवगढ़ रावत् नाहरसिंहजी वग़ैरहने महाराज सर्दारसिंहजीसे अर्ज़ की कि आपका हक़ है; आप मस्नदनशीन हों. तब श्री सर्दारसिंहजी कोठीसे आश्विन कृष्णा ४ के दिन ४ घड़ी दिन रहे पैदल ही महलों पधारे, सब सर्दार पासवान साथ थे, रास्तेमें शहरके लोगों का बड़ा हुजूम था. श्री दर्बार दरीख़ानह करके ज़नाने महलोंमें पधारे, वहां से रसोडेके महलोंमें पधारगये और मस्नदनशीनीके मुहूर्त तक वहीं विराजे.

महाराणाजी श्री सर्दारसिंहजी ने पांच छः दिनके बाद महता शेरसिंहजी को हम्माम में क़ैद किया और रामसिंहजी महता को प्रधान मुक़र्रर किया. विक्रमी १८९६ कार्तिक मासमें बीकानेर के महाराज रत्नसिंहजी

नाथद्वारे श्री जी के दर्शनको तशरीफ लाये और श्री दर्बार भी नाथद्वारे पधारे. वहां बाईजी महताबकुंवरबाई की सगाई महाराजकुमार सर्दार-सिंहजीसे और श्री दर्बारकी महाराज रत्नसिंहजी की बहिनसे करार पाई. श्री दर्बारने महाराजको उदयपुरमे मिहमान किया और बाईजीकी शादी करदी. इसी साल माघ मासमें गयाजी पधारनेके वास्ते कूच फर्माया इन दिनो रियासत की भाजगड़ आमेंद रावत् दूलहसिंहजी व मेरे चचा अचलदासजी करते थे श्री जी हुजूर चारभुजाजी के दर्शन करते हुए आसींद होकर पुष्करजी पधारे. वहांसे हडमाले मकाम हुआ, वहां महाराज मुहकम सिंहजी वालीय कृष्णगढ मुलाकात के वास्ते आये, प्यारा नामी घोडा उनको बख्शा, मगर उसने चाकर का हाथ पकडलिया, इसलिये वह वापस आया और दूसरा बख्शागया. वहां से चामू, सामोद अच-लौद और डीगके भवन होकर व्रज में पधारे, गिरिराज, वृन्दावन व मथुरा की यात्रा कर प्रयाग और काशी होते हुए गयाजी पधारे, वहांपर गयाश्राद्ध कर चारणोंको सरोपाव व हाथी बख्शे, आढ़ा पीरदानजीको ताजीम बख्शी लौटते हुए फिर काशी, प्रयाग, मैनपुरी होकर मथुरा पधारे, जहा जैसल-मेर रावलजी गजसिंहजी से मुलाकात हुई फिर बीकानेर पधारे, वहा महाराज रत्नसिंहजी की बहिन से शादी की, कुंवर शार्दूलसिंहजी की शादी महाराज गुलाबसिंहजी की बहिन से हुई और महाराज दलसिंहजी का विवाह आलासर महाराज के यहा हुआ, बादह्न वहां से कूचकर उदयपुर पधारे. बा साहिब शिवसिंहजी, काकाजी अचलदासजी, दादाभाई

धनलालजी श्री जी हुज़ूरके साथ गये थे, मैं भी साथ था. इस वक्त मेरी उम्र पन्द्रह वर्षकी थी.

मियां रौशनख़ां के रुख़सत लेकर चलेआने पर अजीटन शेख़ शुजातीन ख़िजुद्दीनजी को, जो पल्टनके सिपाहियों में नौकर थे, मेरी तालीमके वास्ते भेजा. वह पांच वर्ष तक हवेली रहे, और मुझको इन्शाए करम होशअफ़ज़ा, आलमगीरी, अमानुल्लाहहुसैनी, माधोराम, गुलिस्तां और इन्शाए ख़लीफ़ा पढ़ाया. बादह्ह महता रामसिंहजी से सिफ़ारिश करके बड़ीपोलपर हाड़ा राजपूतों की जगह १०० जवान इनके भरती कराकर इनको सूबहदार मुक़र्रर करादिया.

जब ख़िजुद्दीनजी रुख़सत लेकर अपने घर गये तब कोयल जलेसर के लाला चोखालालजी को नौकर रक्खा, उन्होंने कुशाइशनामह, जादुल्-मआश और बहारदानिश वग़ैरह पढ़ाई. फिर ये भी चले गये, तो एक मौलवी को नौकर रक्खा, उनसे इन्शाएयूसुफ़ी पढ़ी. इनके चले जाने बाद कोड़ा जहां-नाबाद के लाला शंभुदयाल से भी कुछ सीखा. यह भी जल्दही चले गये; तब बहादुरख़ांजी, जो बक्कोंमें नौकर थे, पढ़ाने लगे. अबुल्फ़ज़्ल, ग़नीमत की मस्नवी, दीवान हसन जुलेखा वग़ैरह इनसे पढ़ीं.

विक्रमी १८९८ वैशाख में एक दिन महाराणाजी श्री सर्दारसिंहजीने हुक्म फ़र्माया कि तेरे हुरूफ़ फ़ार्सी के कैसे हैं, लिखकर दिखा. तब श्री जी हुज़ूर की तारीफ़ लिखकर नज़्र की, उसको मुलाहिज़ह फ़र्माकर एक ख़रीतह लाट साहिब का, जो उन्हीं दिनों में आया था, मंगाकर दिया, कि पढ़कर

सुना. मैंने उसे सुनाया. श्री दर्बारने खुश होकर कडे और सरोपाव अता फर्माया

विक्रमी १८९७ चैत्रमें कर्नल् सदलैंण्ड साहिब रेज़िडेण्ट और कर्नल् रॉबिन्सन साहिब एजेण्ट उदयपुर आये. तब श्री दर्बार ने पूछा कि मेरी मरजी छोटे भाई स्वरूपसिंहजी को गोद लेनेकी है. दोनों साहिबोंने कहा कि आपके जीते जिसे आप पसन्द करें रखलें, वर्नह आपके बाद तो जिसका हक़ होगा वह गद्दीनशीन होगा श्री दर्बारने विक्रमी १८९८ आश्विन शुक्ला १० को स्वरूपसिंहजी को गोद लिया फिर दर्बारने वृन्दावन वास करने के वास्ते उदयपुर से कूच फर्माया, लेकिन् राजनगर पहुंचते पहुंचते बीमारी जियादह बढ़गई, तब सब सर्दार दर्बार को वापस उदयपुर ले आये और दूसरे दिन याने आषाढ़ शुक्ला ८ को देवलोक पधार गये. पास-वानजी लच्छूबाई उनके साथ सती हुईं.

शाम को महाराणाजी श्री स्वरूपसिंहजी मस्नदनशीन हुए. यह नौ महीने पांच दिन कुंवरपदे में रहे विक्रमी १८९९ श्रावण शुक्ला १३ को मस्नदनशीनी का उत्सव हुआ

विक्रमी १९०० आश्विन में काकाजी अचलदासजी को शादी की बात-चीत करने के लिये रीवां भेजा. यह सगाई करके विक्रमी १९०२ के पौष में वापस आये. श्रीदर्बार ने विक्रमी १०९१ के श्रावण में महता रामसिंहजी को कैद किया था, उनकी जगह महता शेरसिंहजी को प्रधान मुक़र्रर फर्माया और संवत् १९०२ कार्तिक शुक्ला ६ को श्रीएकलिंगजी पधारकर

शराब पीना छोड़दिया, बल्कि सुरे गड़वादी. थोड़े दिन बाद श्री दर्बार महाराज शेरसिंहजीसे नाराज़ होगये और उन्हीं दिनों महाराजने एक डूंडा नावके कारख़ानेसे मंगाया. मल्लाह लोग वगैर इजाज़त उसको लेगये, जिसपर श्री दर्बार नाराज़ होकर नावका कारख़ाना, जो मुद्दतसे मेरे बुज़ुर्गों के सुपुर्द था, ढींकड़्या तेजरामजीके सुपुर्द करदिया.

विक्रमी १९०३ में कुंवर शार्दूलसिंहजीको उनकी बदचलनीके सबब हम्माममें क़ैद करदिया. और वे वहीं बीमार होकर मरगये उनके साथ दो सती हुईं. इनके साथ साज़िश रखनेके क़सूरपर महता रामसिंहजीको देशनिकाला देकर सुरे गड़वादी; पाणेरी गंगारामजीको पाणेरसे मौकूफ़ करके लावेके गढ़में क़ैद किया, वह वहीं मरगये और उनकी औरत उनके साथ सती हुई. लावा पहिले डोडिया राजपूतोंके था, लेकिन् झगड़े व फ़सादके ज़मानेमें शक्तावतोंने छीनलिया श्री दर्बारने फ़ौज भेजकर वापस डोडिया ठाकुर ज़ोरावरसिंहजीको दिलाया.

संवत् १९०५ में श्री दर्बारने बेदले रावजी बख्तसिंहजीसे फ़र्माया कि "अर्जुनसिंह मर्ज़ी पहिचानता है और होशियार नज़र आता है" रावजीने अर्ज़ की कि मर्ज़ी हो तो इसे नीमच कालूराम वकीलके पास भेजदें, वहां ख़ूब वाक़िफ़ होजावे. तब फ़र्माया कि यह कारण वाला है, कालूरामके तहतमें रखना ठीक नहीं. यह सब हाल रावजीने मुझसे कहा और फ़हमाइश की कि मर्ज़ीके मूजिब चाकरी किये जाना.

संवत् १९०६ में श्री दर्बार चित्तौड़ व माण्डलगढ़ पधारे, सब उमराव

सर्दार साथ थे, वहां छट्टूद का बखेड़ा खड़ा हुआ तो बहुत से सर्दार फिरट होकर चले आये

संवत् १६०७ फाल्गुनमें बाईजी फूलजी का विवाह कोटा के महाराव रामसिंहजी से हुआ,- होलीकी फागमें महारावजी शरीक थे. आषाढ़ में बाईजी सौभाग्यकुंवरबाई की शादी रींवां महाराज रघुराजसिंहजी से हुई, रींवां महाराज को लेने के लिये काकाजी अचलदासजी भेजे गये थे

संवत् १९०८ में रेज़िडेण्ट कर्नल् लो साहिब उदयपुर तश्रीफ लाये. उन दिनों श्री दर्बार की तबीअत अलील थी, इससे पेशवाई के लिये महाराज शेरसिंहजी व महाराज दलसिंहजी को भेजा था नीमच वकील बेगमका बीजावर्गी कालूराम था, उसको मौकूफ करके घोसूंडाके रामरत्न लढ्ढ को मुकर्रर किया और पचौली मथुरादासजी को नायब वकील बनाया. रामरत्नजी के मरने बाद कर्नल् ज्यॉर्ज लॉरेन्स साहिब ने श्री दर्बार के नाम ख़रीता भेजा कि वकील खानदानी मोतबर होना चाहिये तब संवत् १६१० आश्विनमें काकाजी अचलदासजी को बमशाहरे १००) माहवार वकील मुकर्रर फर्माया इन्हीं दिनोंमें अहदनामे का काम जारी था और सर्दारोंने भी नालिशें देरक्खी थीं

इसी साल काबुलसे नव्वाब बरकतुल्लाहखांजी आये, वह मेरी सिफारिशसे पांच रुपये रोज़पर नौकर रक्खे गये यह एजण्टीके मीरमुन्शी हाजीमुहम्मदखांजी के दोस्त थे मैं उन दिनों श्री दर्बार की हुज़ूरीमें रहता था, और मेरी सुहबत में नीचे लिखे हुए शख्स थे:—

महासाणी रत्नलालजी.
पंचौली श्यामनाथजी.
पंचौली पद्मनाथजी.
ढींकड़्या उदयरामजी.
पांडे किशोररायजी.
ख्वास विश्वनाथजी.
महता गोपालदासजी.
महता माधवसिंहजी.
महता श्यामलदासजी.
पुरोहित पद्मनाथजी.
पंचौली शिवकरणजी.

इस सुहबत का नाम अष्ट कौन्सिल रक्खा और जब कभी दावत होती तो पीपल्ये रावत् हिम्मतसिंहजी, चहुवान हमीरसिंहजी, रामपुराके ठाकुर गिरधारीसिंहजी और जमाई सर्दारसिंहजी वग़ैरह अक्सर शरीक हुआ करते थे. श्री जी हुज़ूरको रागरंग का भी शौक़ ज़ियादह था, मैंने भी मियां मिन्तूको उस्ताद कर सीखना शुरू किया और घोड़ेपर सवार होनेके लिये लालजी चान्दजीको उस्ताद बनाया, वर्ज़िश व पटे लकड़ीका हुनर जमादार कल्याणसिंहके बेड़ेके जमादार पेमासिंहसे सीखा और मंगल-सिंहने भी कुछ लकड़ी बनेटी के हाथ व कुश्ती के दाव पेच बतलाये. पेमासिंह को इल्म स्रोधा से भी कुछ वाक़फ़ियत थी; मैंने भी कुछ सीखा और दो तीन वर्ष तक मिहनत की. मगर जब लावा पर फ़ौज गई और वहां पुरोहित शंभुनाथजी ने सिपाहियों को गालियां दीं, जिस पर सिपाहियों ने हल्ला करदिया, क़रीब दो सौ आदमियोंके मारेगये, लेकिन् गढ़ न टूटा; उसी हल्लेमें पेमासिंहने गढ़के दर्वाजे पर जाकर तबल मारी, उस वक़् ऊपर से गोला लगा, जिससे वह वहीं काम आया और उसके

शागिर्द मगलसिहने ऐन लड़ाईके वक्त वहां से उसकी लाश को कोस भर पर, जहा कि फौज के डेरे थे, लाकर दाग दिया इस बात के मालूम होने पर श्री जी हुजूर ने मगलसिंह को कडे व सरोपाव देकर पचास आदमियों पर जमादार मुकर्रर करादिया. पेमसिंहके मरजाने पर लोधाका अभ्यास जाता रहा. फिर ज्योतिष का कुछ शौक किया. और आसींद के राठौड ओनाड-सिहजी से बन्दूक लगाना सीखा, सध्या गायत्री उपाध्याय भीमाजी सुख-वाल से सीखी और बाबू खूबचन्दजी साकिन् अजमेर से, जिनको कि श्री द्बोर ने ३०) माहवार पर मुझको अंग्रेजी पढ़ाने के लिये नौकर रक्खा था, कुछ अंग्रेजी पढ़ी, मेरे साथ भाई लक्ष्मणसिहजी, बख्तावरसिहजी और अर्जुनसिहजी महता भी पढ़ा करते थे पूजन पाठमें रमली ऊंकारजी छोटे-पल्लीवाल और पारेशरजी सिरोहिया से बहुत मदद मिली. कथाभट्ट श्री-कृष्णजी भट्ट मेवाडा व भट्ट निर्भयरामजी नागदा से गीता, तत्वबोधिनी वगैरह पढ़ी और श्री नाथद्वारेके छोटे मन्दिर वाले गोस्वामी श्री गोपेश्वरजी महाराज ने मुझे नाम सुनाया था



फ़स्ल दूसरी,

दरबयान खिदमात सर्कारी.



सवत् १९११ के मौसम सरमामें कर्नेल् हेनरी लॉरेन्स व कर्नेल् ज्योर्ज लॉरेन्स हाकिम उदयपुर आये और काकाजी अचलदासजी व अमलेवाले पीछे

से आये, इसलिये मैं बमूजिब हुक्म श्री दर्बारके कोठी पर साहिब के पास गया. वहां राव बख्तसिंहजी, महता शेरसिंहजी और पुरोहित श्यामनाथजी मौजूद थे. बातें होने पर ज्यार्ज लॉरेन्स साहिब ने मेरे वास्ते फ़र्माया कि यह होशियार है. यह ज़िक्र रावजी और महताजीने श्री दर्बारसे किया. साहिब वापस नीमच गये और इसी अरसेमें काकाजी अचलदासजीने श्री जी हुजूर से अर्ज़ की कि मीरमुन्शी हाजीमुहम्मदख़ां से अक्सर मेरे ना-मुवाफ़क़त रहती है, इसलिये बदली होजावे तो बिहतर है. उधर नव्वाब बरकतुल्लाहख़ांजी से हाजीमुहम्मदख़ांजी ने मुलाक़ात के वक़्त कहा कि दर्बार में हमारा सलाम करादो. नव्वाब ने मेरे वास्ते कहा कि उनसे मिलो तो उनकी मारफ़त अर्ज़ कराई जावे. तब मुन्शी जी नव्वाब के डेरे पर आये और मुझे भी वहीं बुलाया. मैं उनसे मिला और उनकी मन्शाके मुवाफ़िक़ श्री दर्बार से अर्ज़ की तो फ़र्माया कि रातके वक़्त आवे. ग़रज़ मुन्शीजी मियाने में बैठकर बड़ी पालपर आये और मुझे इत्तिला दी. मैंने अर्ज़ करके उनको बुलाया और सलाम करादिया. उस वक़्त श्री जी हुजूर ने फ़र्माया कि महता शेरसिंह जी मेरी मर्ज़ी से बाहिर हैं, इन्हें मैं मौकूफ़ करूंगा, अगर साहिब इसपर कुछ खैंचें तो निगाह रखना. तब मुन्शीजी ने मेरे लिये अर्ज़ की कि इनको नीमच भेजदीजिये.

मीरमुन्शीके नीमच चले जाने बाद संवत् १९११ के ज्येष्ठ में मुझे हुक्म फ़र्माया. मैंने अर्ज़ की कि मुझे पहिले कभी साहिब लोगोंसे काम नहीं पड़ा और न मुझे पूरी वाक़फ़ियत है. इसपर फ़र्माया कि काम करने से

वाक्फियत होती है चुनांचि हुक्म के मूजिब ज्येष्ठ कृष्णा ७ को मैं यहां से रवानह हुआ श्री दर्बार ने साहिब के नाम खरीता लिखदिया और एक सरोपाव अता फर्माया मेरे साथ भाई बख्तावरसिंहजी व बाबू खूबचन्दजी थे नीमच पहुंचकर साहिब से मिला और मीर मुन्शी हाजीमुहम्मदखांजी व हेडक्लर्क विलियम साहिब से मुलाकात की. ज्येष्ठ शुक्ला ३ को काकाजी वहां से रवानह हुए और पचौली मथुरादासजी वहीं रहे संवत् १९१२ भाद्रपद में आबू से कर्नेल हेनरी लॉरेन्स साहिब और नीमच से कर्नेल् जॉर्ज लॉरेन्स साहिब डाक में उदयपुर आये इनके साथ मैं भी था. बख्तावरसिंहजी व मथुरादासजी वहीं रहे इस मौके पर तमाम उमराव सर्दार भी एकट्ठे हूए थे

पहिले यह काइदह था कि जब साहिब लोग दर्बार में मुलाकात के लिये आते तो महलों में चित्रशाली के चौक में फर्श वगैरह बिछजाता और बीच की ताक में मस्नद बिछजाया करता था साहिब लोग नाल में बूट उतार कर आते और श्री दर्बार की गद्दी के पास बैठजाते थे, लेकिन् संवत् १९१० में महाराजा तख्तसिंहजी वालीय जोधपुर ने आबू पर कुर्सियों पर मुलाकात की. फिर महाराजा रामसिंहजी जयपुर ने भी संवत् १९११ में कुर्सियोंपर मुलाक़ात की थी. उन्हीं दिनों साहिब रेज़िडेण्ट दौरा करते हुए उदयपुर आये और कहलाया कि कुर्सियोंपर मुलाकात होगी मगर श्री दर्बार ने मंजूर नहीं फर्माया. उस वक्त तो बेदले राव बख्तसिंहजी व महता शेरसिंहजी ने साहिब को समझादिया लेकिन् संवत् १९१२ में जब

कि वे इक़रारनामह तस्दीक़ कराने को यहां आये तब कुर्सियों की मुलाक़ात व जहाज़पुर में सर्कारी बन्दोबस्त होनेके लिये कहलाया कि जहाज़पुर में बिलकुल बदइन्तिज़ामी है, इसलिये वहां पर सर्कारी बन्दोबस्त कियाजावेगा, सिर्फ़ तहसील दर्बार करालेवें और अगर कुर्सियोंपर मुलाक़ात न होगी तो हम न आवेंगे. महताजी ने जहाज़पुर की बात को कुबूल करली. मगर कुर्सियों के बारे में रुकगये. तब साहिब ने मुझे और पुरोहित श्यामनाथजी को हुक्म दिया कि महाराणा साहिब से जाकर अर्ज़ करो कि कुर्सियां न होंगी तो हम न आवेंगे. हम दोनों ने आकर अर्ज़ की कि पहिले जोधपुर और बाद उसके जयपुर में कुर्सियों पर मुलाक़ात होचुकी है और आजकल अपने अहदनामेका काम है मंजूर न करने में साहिब नाराज़ होंगे तो फ़र्माया कि जो मुनासिब हो करो. हमने कोठी पर जाकर साहिब से कहा कि मंजूर है. तीसरे पहर साहिब आये; श्री जी हुज़ूर पलंग पर विराजे रहे; कुर्सियां मौजूद थीं, साहिब सलाम करके खड़े रहे; दर्बार ने फर्माया कि साहिब बैठ जाओ. वे बैठगये और अर्ज़ की कि आप की मिहर्बानी है जहाज़पुर की बाबत बेदले रावजी ने पहिले दिन साहिब से कोठी ही पर पूछा था कि क्या जहाज़पुर में सर्कारी बन्दोबस्त होने की बाबत विलायत से हुक्म आया है? साहिब ने कहा नहीं, वहां अन्तरी फैल रही है, इसलिये सर्कारी बन्दोबस्त होगा. यह ख़बर रावजी ने श्री दर्बार को मालूम करदी. दूसरे दिन जब दोनों साहिब महलों आये, तब जहाज़पुर की बाबत दर्याफ़्त करने बाद श्री दर्बारने उनसे फ़र्माया

कि एक मर्तबह तो हम वहांका बन्दोबस्त करते हैं, उम्मेद है कि बन्दोबस्त होजावेगा साहिब ने यह बात कुबूल की और बेदले रावजी की पूरी खैरख्वाही ज़ाहिर हुई, वर्नह मगरे मेरवाड़े की तरह जहाज़पुर भी कबजे से निकलजाता.

श्री दर्बार ने महाराज चन्दसिंहजी को मए फौज के जहाजपुर भेजा और वे वहां का अच्छा बन्दोबस्त करके लौट आये.

साहिब कौलनामे की शर्तें लिख लाये और श्री दर्बार से उसपर दस्तख्वत कराने लगे, उस वक्त सलूंबर रावत् केसरीसिंहजी व आसींद रावत खुमाणसिंहजी भी कोठी पर मौजूद थे आसींद रावत्जी ने साहिब से कहा कि तीन दिन की मुहलत दीजाये कि मैं सर्दारों को समझालूं; अगर फिर भी न समझे तो साहिब को इख्तियार है. साहिब ने मुहलत दी. आसींद रावत्जी ने सर्दारों को समझाया, मगर सलूंबर रावत्जी वगैरह ने न माना. तीन दिन बाद कर्नेल् हेनरी लॉरेन्स व ज्यॉर्ज लॉरेन्स कौलनामें पर दस्तखत कराने के लिये महलों में आये, उस वक्त सब सर्दार हाजिर थे साहिब ने दर्बार से दस्तखत करने के लिये अर्ज की मेरे पास कलमदान हाजिर था, श्री जी हुजूर ने कलम भरकर फर्माया कि यह कौलनामह अच्छा या बुरा जैसा है, अब इसमें से एक हर्फ भी कम न होना चाहिये. साहिबों ने इकरार किया कि एक हर्फ क्या एक नुक्ता भी कम न होगा, श्री दर्बार ने दस्तखत करादिये फिर हुक्मी सर्दार सादड़ी, बेदला, बेगम, देलवाड़ा, आसींद वगैरह ने दस्तखत करादिये, सलूंबर, कान्होड़, गोगूंदा,

भैंसरोड़ ने दस्तख़त नहीं किये; परन्तु देवगढ़ वालोंने चन्द गावों पर कुर्की होने के बाद दस्तख़त करदिये. इसके बाद कर्नेल् हेनरी लॉरेन्स आबू और कर्नेल ज्यॉर्ज लॉरेन्स नीमच गये, गांवों पर कुर्की करने के लिये एजेण्टी से अमीन भेजेगये. सलूंबर का सावा, देवगढ़ का मोखणुंदा, भींडर का भादीड़ा और गोगूंदे का रावल्यां नामी गांव ज़ब्त कियागया.

संवत् १६०७ में, जबकि सर्दारों ने सर्कशी इख्तियार की थी, देवगढ़ रावत्जी ने इस उज़ से कि हमारी विकालत के एवज़ में गांव था, लेकिन् सहीवाले अब विकालत नहीं करते, आसूणा गांव खालिसे करलिया. इस के बारे में श्री दर्बार से और साहिब से भी अर्ज़ की तो संवत् १६१२ में, जब वहां अमीन ज़ब्ती पर भेजगये, साहिब ने आसूणा पर मेरा क़बज़ह करादिया.

मृगशिर में दौरा हुआ; प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, गढ़ी, डूंगरपुर और खैरवाड़े होकर साहिब उदयपुर आये और पौष में कर्नेल् हेनरी लॉरेन्स भी आबू से आगये. सर्कश सर्दार खैरोदा के मक़ाम पर जमा हुए और उनकी मदद को खैरवाड़े के असिस्टेंट ब्रुक साहिब भी वहीं आगये थे. वहां से ये सब उदयपुर आये. दोनों साहिबों ने सर्दारों की तसल्ली के लिये चन्द क़लमें क़ौलनामे से निकालने के वास्ते श्री दर्बार से अर्ज़ की, जो मंजूर नहीं की गई और यह फ़र्माया कि हमने पहिले ही तस्दीक़ के वक़्त कहदिया था कि एक हर्फ़ भी इसमेंसे कम न होने पावे और साहिब ने इक़रार किया था कि एक नुक़्ता भी कम न होगा. इस बारे में साहिब ने ख़रीते भी

लिखकर भेजे, मगर दर्बार ने न माना. अखीर में दोनो साहिब नाराज होकर चलेगये और सर्दारों से कहदिया कि तुम जानो और दर्बार जाने इसकी रिपोर्ट सर्कार में भी करदी कि दर्बार व सर्दार हमारा कहना नहीं मानते हैं इस पर कौलनामे की तर्दीद का हुक्म आया कि जो दस्तूर कदीम से जारी है वही रक्खो राजके थाने सर्दारों ने अपने गांवोंसे उठा- दिये और देवगढ़ वालों ने मेरा गांव आसूणा फिर जब्त करलिया सिर्फ सियाली फस्ल का हासिल हमने लिया साहिब से अर्ज़ की तो फर्माया कि जब सर्दार छटूंद जमा करावेंगे, तब तुम्हें तुम्हारा गांव मए हासिल के दिलाया जावेगा, अभी यहां से रोकड लिये जाओ.

संवत् १६१३ के श्रावण में महता शेरसिंहजी व गोपालदासजी को एजेण्ट साहिब के पास रफ़े नफ़ाक के वास्ते भेजा, लेकिन् साहिब ने कुछ लिहाज न किया, मृगशिर में साहिब बहादुर फिर दौरे पर आये तो बेदले रावजी ने और मैंने महताजी को मौकूफ करने के लिये कहा और मीर- मुन्शी ने भी बहुत कोशिश की. तब साहिब ने कहा कि काम दर्बार चाहे उससे ले मगर इनकी आबरू में फ़र्क़ न पडना चाहिये.

साहिब उदयपुर से अहमदाबाद को रवाना हुए, क्योंकि ज्यॉर्ज लॉरेन्स साहिब की छोटी लडकी, जो जयपुर के एजेण्ट बेनन साहिब को ब्याही थी, विलायत से आई थी, ये उसे लेने जाते थे मगर कर्नेल् हेनरी लॉरेन्स साहिब ने आबू से बम्बई पहुंचकर इन्हें चिट्ठी भेजी कि आप न आवें, मैं लेता आऊंगा, यह चिट्ठी टींटोई के मकाम पर पहुंची, इसलिये साहिब वहांसे लौटकर १५

दिन तक डूंगरपुर के ज़िले में दौरा करते हुए खैरवाड़े आये कर्नल् हेनरी लॉरेन्स साहिब भी मिस को लेकर खैरवाड़े में आमिले.

उदयपुर में महता शेरसिंहजी को मौकूफ़ करके महता गोकुलचन्दजी को प्रधान मुक़र्रर किया और महता शेरसिंहजी के लिये सुरं गड़वादी थी, जो महाराणाजी श्री स्वरूपसिंहजी के इन्तिक़ाल के बाद लॉरेन्स साहिब ने उखड़वादी और पंचौली मथुरादासजी की भी मौकूफ़ी का हुक्म हुआ. वे खैरवाड़े से उदयपुर आये. महता शेरसिंहजी की मौकूफ़ी और गोकुलचन्दजी की तक़र्रुरी का इत्तिलाई ख़रीता लेकर बेदले रावजी व महता गोपालदासजी ऋषभदेवजी के मकाम पर पहुंचे और दूसरा मकाम पर्शाद में हुआ, महता गोपालदासजी ऋषभदेवजी का पूजन करने के लिये पीछे रहे और कहदिया कि फिर ख़रीता लेकर साहिब के पास चलेंगे, साहिब ने महता शेरसिंहजी की मौकूफ़ी और ख़रीता आने की ख़बर सुनली थी. तीसरे पहर रावजी बेदला साहिब के पास गये और पीछे से मैं महता गोपालदासजी के साथ ख़रीता लेकर साहिब के पास गया. तब साहिब नाराज़ हुए कि ख़रीता कल आया और हमारे पास देर से क्यों लाये? उस वक्त बेदले राव साहिब बख़्तसिंहजी ने साहिब से बहुत खैंचकर अर्ज़ की, तब साहिब ने फ़र्माया कि लाओ हम रावजी के मुलाहज़े से लेते हैं. रावजी ने यह भी बड़ी ख़ैरख़्वाही की कि जिसकी तारीफ़ नहीं होसक्ती और ख़ासकर मुझ पर बड़ा इहसान हुआ कि जिसका शुक्रिया अदा नहीं करसक्ता.

वहां से रवानह होकर चावड होते हुए भींडर आये. कर्नेल् हेनरी लॉरेन्स साहिब भींडर तक साथ थे वहां महता गोकुलचन्दजी बहैसियत प्रधान, साहिब की मुलाक़ात को आये, उनको सलाम कराकर रुख़सत दिलाई. बादह् वेदले रावजी व महता गोपालदासजी को भी रुख़सत दी पौष में कर्नेल् हेनरी लॉरेन्स साहिब तो लखनऊ के चीफ़ कामिश्नर मुक़र्रर होकर डाक में वहां गये और राजपूतानह रेज़िडेन्सी का चार्ज कर्नेल् ज्यॉर्ज लॉरेन्स साहिब ने लिया आबू पर वकील नथमलजी सुराणा थे वह भी महता शेरसिंहजी के साथ मौक़ूफ़ कियेगये और महता भगवतसिंहजी वकील मुक़र्रर हुए, नथमलजी सुराणा को सदर दीवानी पर मुक़र्रर किया.

पौष में मैंने अपनी बडी लड़की की शादी पचोली अर्जुनसिंहजी जालौरी के साथ करदी.

फाल्गुन में नीमच व आबू के दोनों अमलों को साथ लेकर कर्नेल् ज्यॉर्ज लॉरेन्स साहिब आबू को रवानह हुए, गंगापुर के मकाम से मुझे व एजेन्सी के अमले को रुख़सत दी कि छावनी को जाओ. साहिब आबू गये और पन्द्रह दिन बाद् कप्तान शोर साहिब आये. इनकी ख़बर सुनकर मैं चित्तौड़ गया लेकिन् वह नींबाहेड़े होकर आये, इसलिये मैं भी वहां पहुंचा और पेश्वाई की. शोर साहिब का मिज़ाज निहायत अच्छा था. संवत् १९१३ के वैशाख में साहिब मौसूफ़ डाक में उदयपुर आये श्री दर्बार ने मुझे हुक्म फ़र्माया कि साहिब की मुलाकात कुर्सियों पर न हो, हस्व दस्तूर क़दीम हो, ऐसी तजवीज करो. साहिब को समझाकर कुर्सियां मौक़ूफ़ कराईं.

श्री दर्बार बहुत ख़ुश हुए और मोतियों की कण्ठी मुझे अता फ़र्माई. साहिब उदयपुर से जरीदा तौर पर वैशाख में आबू गये और आठ दस दिन बाद मुझको भी बुलाया; मैं नाल के रास्ते से आबू पहुंचा. उसी दिन मेरठ की छावनी लुटजाने की ख़बर पहुंची. कर्नेल् ज्यॉर्ज लॉरेन्स साहिब ने अजमेर जाने की तय्यारी की और शोर साहिब को भी रवानह होने का हुक्म दिया और उसी नाल के रास्ते से उदयपुर आये. इस अरसेमें नीमच की फ़ौज भी बिगड़ी और उसके अफ्सरों ने वहां मेरे बंगले पर आकर बख़्तावरसिंहजी व बाबू ख़ूबचन्दजी से कहा कि हमारे साथ चलो, नीमच में दर्बार मेवाड़का अमल करादें. उन्होंने इन्कार करके कहा कि श्री दर्बार के हुक्म बग़ैर हम नहीं आसक्ते. फिर वे लोग ग्वालियर के वकील पण्डित बलवन्तराव को नीमच में लेआये और छावनी को बर्बाद कर तोपों में कीले ठोककर चलेगये. यह ख़बर सुनकर बख़्तावरसिंहजी व लाला रौशनलाल-जी को मैंने उदयपुर बुलालिया. मुन्शी हाजी मुहम्मदख़ां ने बाग़ी फ़ौज को खाना दिया, यह सुनकर साहिबने उनको मौकूफ़ करके एक मौलवीको मुन्शी मुक़र्रर किया और थोड़े दिन बाद उसे भी मौकूफ़ करके काश्मीरी पण्डित ज्वालासहाय को उसकी जगह दी. नायब मुन्शी मुहम्मदहसन व डॉक्टर राहतअली बाग़ियों में मिलगये; तब नकूम के थानेदार शहाबुद्दीनजी को नायब मुन्शी का उहदह दिया. नीमच के साहिब लोग भागकर केसूंदा और जमलावदे चलेगये. वहां पण्डित यादवराय, पटेल रामसिंह और पटेल केरींग ने इनको अपनी हिफ़ाज़त में रखकर बाग़ियों के हाथ से बचाया.

इसमे बेगम रावतजी ने भी बहुत मदद दी थी, जिसका हाल शोर साहिब ने अपनी रिपोर्ट में भी लिखा था. कितने ही साहिब लोग उदयपुर चले आये, श्री दर्बारने उन्हे जगमन्दिर में रक्खा और बहुत खातिर तवाजो की. यह सब हाल शोर साहिबने अपनी रिपोर्टमें सदरको लिख भेजा था. फिर साहिबके हुक्म मूजिब कोठी पर जाबिते के लिये फौज का एक निशान और महता फूलचन्दजी को तईनात किया. ज्येष्ठ तक साहिब कोठी पर रहे, फिर नीमच गये. जाते वक़ जाबिते के वास्ते फर्माया. इस पर महता शेरसिंहजी व हमीरजी चौधरी को मए भवानी पल्टन के कढ़ाई सौ या तीनसौ आदमियों की भीड़भाड़ से नीमच भेजा वहां पहुचकर साहिब ने छावनीके बन्दोबस्त के लिये मुझे तो वहीं छोड़ा और महता शेरसिंहजीको साथ लेकर नीमचकी बाग़ी फौज का पीछा जहाजपुर तक किया महता गोपालदासजी भी चित्तौड़ से उनके साथ होगये थे, छावनी में सुपरिन्टेण्डेण्ट लाइड साहिब और कोटा के एजेण्ट ब्रिटन साहिब थे, पन्द्रह बीस दिन मे शोर साहिब भी लौट आये इस अरसे में कुल रियासतों से फौजें आगई थीं लेकिन सिपाहियों के दिल बिगड़े हुए थे, रातके वक़्त कोई किसी बंगले मे आग लगाता, कोई कुछ और ही फ़साद कर बैठता था इस तरह की बिदअतें करना शुरू किया, चुनान्चि उदयपुर की फौज भी बदल गई और ज़ाहिर किया कि बनिये आटे में हड्डियां मिलाकर देते हैं, बल्कि चन्द महाजनों को पीट भी डाला कोतवाल मुहम्मदखां ने मुझे कहलाया कि इस तरह की वारिदातें होती है कुछ बन्दोबस्त करना चाहिये मैंने सबको बुलाकर समझाया

कि मैं भी हिन्दू धर्म रखता हूं. यह कहकर आटा मंगाया और पानीमें छान-कर आग पर रक्खा तो उसमें बिलकुल हड्डी मालूम नहीं हुई. तब मैंने कहा कि कहो तो इस आटे की रोटी बनवाकर खाऊं कि जिससे तुम्हारा शक रफ़ा हो. उन लोगों ने कहा कि हम को गेहूं मंगादो और पिसनहारी बुलवादो, हम अपने सामने पिसवालिया करेंगे. उन लोगों की मन्शा के मुवाफ़िक़ गेहूं व पिसनहारियों का बन्दोबस्त करादिया और हिन्दू मुसल्मान दोनों को अच्छी तरह समझादिया. यह सब हाल शोर साहिब ने "ए मिसिंग चैप्टर ऑफ़ दि इण्डियन म्यूटिनी" के नाम से जो किताब सन् १८८८ ई० में छपवाई है, उसमें तहरीर फ़र्माया है. बहुत मुद्दत के बाद यह किताब छपवाई गई, इससे उस किताब के सफ़े ८४ की १६ वीं सतर में मुझे ब्राह्मण करके लिखा है, कायस्थ लिखना चाहिये था. कप्तान लाइड साहिब ने एक खरीता श्री दर्बार के नाम मेरी सिफ़ारिश में लिख भेजा, जो अब भी राज्य में मौजूद होगा, विक्रमी १९१४ के श्रावण में शोर साहिब व कर्नेल् जैक्सन ने सलाह की कि नींबाहेड़े में मुसल्मान हैं, पहिले नींबाहेड़ा उनसे छीनलेना चाहिये. इस बात को और साहिब लोगों ने भी पसन्द किया. शोर साहिब ने महता शेरसिंहजी से और मुझ से मदद मांगी, यह बात हमने उदयपुर लिखभेजी, उस पर जवाब आया कि अभी अपने यहां सर्दारों का बखेड़ा है; लेकिन् हमको यह मौक़ा मुनासिब मालूम हुआ, श्री दर्बारको फिर अर्ज़ी लिख भेजी कि मदद देना बिहतर होगा, तब श्री जी हुज़ूरने मेरे चचा अचलदासजी व पंचौली हरनाथजीसे राय ली. उन्होंने जवाब दिया

कि वहांसे जो लिखा है वह ठीक ही है, तब उदयपुर से दो घुड़तोप और एक कम्पनी व पचास सवार लेकर पचौली दिलीचन्दजी व घोटावाला चतुर्भुजजी को भेजा और हुक्म दिया कि सादड़ी के आसपास रहना, फिर जैसा मौका हो करना इधर महताजीने सादड़ी, कान्होड़, बान्सी, बेगम, भदेसर, अठाणा, सरवाण्या, दारू, बीनोता और उस ज़िले के छोटे बड़े सर्दारों को कागज़ लिखकर बुलाया कि इस वक्त अंगरेजों को यह मदद देना श्री दर्बार की बड़ी ख़िदमत बजालाना है, इसलिये लिखे मुवाफ़िक जमइयत लेकर तारीख मुक़र्ररह पर आ हाज़िर होना; जो हाज़िर होंगे जमीन वगैरह से हर तरह फायदह उठावेंगे. भाद्रपद में ही यह इरादह था, मगर बारिश ने रोक दिया और यह ख़बर सुनकर साहिबज़ादे व बख्शी नींबाहेड़ा ने तीनसौ जवान भरती करलिये महताजी इन्हीं दिनों में बीमार होगये थे. संवत् १९१४ आश्विन कृष्णा १ के दिन की सलाह ठहरी, भाद्रपद शुक्ला १५ की पीछली रात्रि को चन्द्रग्रहण था, मोक्ष होने बाद नीमच से फौज रवानह हुई. सवारों के एक ग्रुप में साठ सवार और दो छोटी तोपें थीं, जेनरल जैरसन साहिब, कर्नेल् शोर साहिब एजेण्ट और चन्द दूसरे साहिब लोग भी साथ थे. एक नागपुरी हथनी मेरी सवारी में, दूसरी गुमानी और दो एक हथनिया सर्दारों की भी साथ थीं. सुबह होते होते नींबाहेड़े से उत्तर को मौज़े जल्यापीपल्या में पहुंचे नींबाहेड़ा यहां से डेढ़ कोसकी दूरीपर था. महता फूलचन्दजीने जो फौजके साथ थे, अमल तय्यार की और यह कहकर सबको दी कि लड़ाई का वक्त है इसे लेलो. चुनाचि मैंने भी उनकी मनुहार

क़ुबूल की, एक छत्री जो नींबाहेड़े के इधर आध कोस पर थी, साहिब वहां ठहरगये और फ़र्माया कि चाय वग़ैरह पीलें और आप लोग भी कुछ खालो, फिर साहिबज़ादे व बख़्शी को बुलाकर हम समझावेंगे कि या तो हथियार डालकर निकल जाओ, वर्ना तोप शुरू होती है, यह कहकर गोपाल चोबेदार, जो गंगल जमादार का भाई था और गौरी चपरासी को उन्हें बुलाने के लिये भेजा, इतने में मेवाड़ के सर्दारों की जमइयत व भले आदमी और सब अठाणे रावत् दीपसिंहजी व दारू रावत् भवानीसिंहजी आपहुंचे और सब नाश्ता करने लगे. बुख़ारकी कमज़ोरी से महताजी को यहां ग़श आगया. यह हाल देखकर मुझे बहुत परेशानी हुई, एक घड़ी के बाद महताजीको होश आया और कुछ तसल्ली हुई. फिर नाश्ता करके हम सब फ़ारिग़ हुए. इस अरसे में साहिबज़ादा और बख़्शी, साहिब के पास आगये. साहिब ने फ़र्माया कि हथियार रखकर निकल जाओ, वर्ना तोपें शुरू होती हैं. उन्होंने जवाब दिया कि सिपाही लोग नहीं मानेंगे हम उनको समझा आवें, साहिब ने गोपाल और गौरी चपरासी को इनके साथ भेजा. शहर में जाकर साहिबज़ादे और बख़्शी ने दर्वाज़े बन्द कराकर पत्थर चुनवादिये और बख़्शी ने गोपाल के हाथ पर तलवार मारी कि हाथ ज़ख़्मी होगया और यह व चपरासी डरकर भागे और घरों में छिपते फिरे. बख़्शी ने तोपें चलाना शुरू करादिया, उसके जवाब में हमारी तरफ़ से भी तोपें शुरू हुईं. और नीमच दर्वाज़े पर तोपें जालगाईं. रास्ते में कीचड़ बहुत था, तोपें फंसगईं. साहिब लोगों ने घोड़ों से उतरकर तोपों को सीधी करना चाहा,

मगर न हुई, तब हथनियों से खिचवाकर सीधी कीगईं और फिर दागना शुरू किया यहांपर चित्तौडसे सवाईसिंहजी भी जमइयत लेकर आपहुंचे और महताजीसे कहा कि आपकी अद्धा नहीं है आप डेरे पधारें, मैं हाजिर हूं वे डेरे पर गये.

दर्वाजे के सामने साहिब लोग थे, एक तरफ़ सवाईसिंहजी व फूलचन्द-जी और दूसरी तरफ दारू रावतूजी और मैं था. फौज करीब तीन हज़ारके एकट्ठी होगई थी. मुखालिफों की तरफ से तोप, जुजावल, रामचगी और बन्दूकें चलरही थीं और इधर से भी बराबर जवाब दिये जाते थे. इसी मौके पर छोटी सादडी से सिंगवी बहादुरमलजी भी आगये थे वह दर्वाजा बहुत मजबूत था नहीं टूटा. तीन प्रहर बजगये, तब सर्दारों ने अमल लेना शुरू किया मेरे पास खुशहालसिंहजी कामदार और जोरजी चपरासी साकिन नीमच खड़े थे जोरजी ने अठाणे रावत् दीपसिंहजी के पास जाकर अमल ली और एक मक्या (मक्कीका भुट्टा) लेकर मेरे घोड़े के करीब खडा हुआ खारहा था. खेत में मक्की पकी हुई थी, फ़ौजी लोग भी भोड तोडकर खाने लगे इतने में एक गोला आया और एक मिट्टी के टीले से टकराकर जोरजी के मुंह पर लगा, लगते ही उसका दम निकलगया और लाश उठवाकर दाग दिलवादिया. इसके सिवा और भी दो चार आदमियों व घोडों को गोले लगे शाम होजाने व दर्वाजा न टूटनेके सबब बमूजिब हुक्म साहिब बहादुर उस दिन लडाई बन्द रही अगर यह फौज राणीखेड़े की तरफ मगरिब में जाती तो दर्वाजा टूटकर हल्ला होजाता

और पूरी कामयाबी हासिल होती. ग़रज़ शाम होजाने के बाद तमाम फ़ौज नदी उतरकर अपने डेरों पर आगई; सब लोग भूखे थे, सर्वराह का कुछ बन्दोबस्त न था और साहिबने नींबाहेड़ा के चारों तरफ़ पहिरे बिठाने का हुक्म दिया, लेकिन् सिपाही भूखे थे इसलिये नहीं गये. रातको मैदान खाली पाकर साहिबज़ादा और बख्शी सिपाहियों समेत निकलकर मगरे में चलेगये, जब पहर भर रात बाक़ी रही तो साहिब ने सब को तय्यार होने का हुक्म दिया. दिन निकलने से पहिले फ़ौज दर्वाज़े पर पहुंचगई, महाजन वग़ैरह रअय्यत सामने आई और अर्ज़ की कि गांव खाली है कबज़ा करलीजिये. तहक़ीक़ कियागया तो हक़ीक़त में गांव खाली पाया. साहिब ने हुक्म सुनाया कि तमाम लोग अपनी अपनी फ़ौज समेत जबतक कि दूसरा हुक्म न हो यहीं ठहरें और हमारे साथ के सवार शहर को लूटें. जब लूट खतम हुई तो साहिब ने कहा कि आप ऐसा बन्दोबस्त करो कि अब कोई किसीको न लूटे, तब मैं और सवाई-सिंहजी कचहरीमें गये और तमाम जगह पहरे वग़ैरह बिठाकर पुख़्तह बन्दोबस्त करादिया, फिर साहिब से कहा कि यह क़दीम से हमारा है, इसलिये हमको मिलना चाहिये, साहिब ने फ़र्माया कि मैं लाट साहिब के पास रिपोर्ट भेजताहूं जब तक कोई हुक्म वहांसे न आवे, ख़ालिसाई बन्दोबस्त रक्खो, पीछे आप के सुपुर्द करादिया जावेगा. महताजी ने जवाब दिया कि बग़ैर हुक्म श्री दर्बारके हम बन्दोबस्त नहीं रख सक्ते. मैंने उनसे कहा कि मैं अर्ज़ लिखकर मंज़ूरी मंगादेता हूं. यह कहकर उदयपुर फ़तह की

खुशखबरी लिख भेजी और उसमें बन्दोबस्त की बाबत महताजी के नाम हुक्म होजाने के बारेमें भी लिखदिया, जिस पर मञ्जूरी का हुक्म आगया और महताजी के व मेरे नाम खुशी के रुक्के लिख बख्शे गये. मेरे नाम के रुक्केकी नकल पहिले बाब में दर्ज है

आठ मकाम नींबाहेड़े में रहे साहिब ने साहिबज़ादे व बख्शी को भगादेने की तुहमत नींबाहेडेके पटेल तारा पर लगाकर उसे तोपसे उडादेने की तजवीज़ की, तब मैंने व महताजी और सवाईसिंहजी ने उसकी बहुत कुछ सिफारिश की और कन्होड के पन्नालालजी बाबेल ने भी कहा, लेकिन् कुछ न माना और उस बूढ़े पटेल को तोप से बंधवाकर उड़ादिया.

जोरजी चपरासी की औरत को श्री जी हुज़ूर ने १००) रुपये नक़द क्रियाचर के वास्ते अता किये और चार रुपये माहवार हीन हयात कर बख्शे, जो संवत् १९३५–३६ तक बराबर मिलते रहे.

साहिब की तरफ़ से महता फूलचन्दजी को २००) रुपये और पैदलोंको १० रु०), सवारों को १५) रु० और कामदारोंको ५०) रु० से १५०) रुपये तक इन्आम दियागया.

१५०) रु० महताजीके कामदार कुन्दनलालजी पचोली चितौड़ वालेको.

१५०) रु० मेरे कामदार पंचोली खुशहालसिंहजी को.

५०) रु० लाला रौशनलालजी नाइब को.

१००) रु० मेरी हथनी नागपुरी के महावत को.

५०) रु० महताजीकी हथनी गुमानी के महावत इलाहीबख्श को.

सवाईसिंहजी ने मुझे कहा कि अपने भी गांव जागीर लिखवा लें. मैंने जवाब दिया कि जब नींबाहेड़ा अपने खालिसे होजावेगा तब श्रीदर्बार खुद ही बख़्शेंगे पहिले से लिखाना मुनासिब नहीं है.

नींबाहेड़े से चलकर छावनी में आये. महताजी नींबाहेड़े में रहे, सवाईसिंहजी चित्तौड़ गये, सर्दारों को भी रुख़सत दिलाई और कहदिया कि खालिसा होने पर जागीर मिलेगी.

इसके बाद शोर साहिब व लाइड साहिब की रिपोर्ट पर भी हुक्म आगया कि बेगम रावत्‌जीको २०००) रुपये कल्दार, जमलावदाके पटेल रामसिंह को १२००) रुपये कल्दार, केसूंदाके पटेल केरींगको १२००) रुपये कल्दार, व केसूंदाके हाकिम पण्डित जादवराव को १२००) रुपये कल्दार, सर्कार से मिले और दोनों पटेलोंको श्रीदर्बार की तरफ़से कड़े व सरोपाव और बारह बारह बीघा ज़मीन दिलाईगई.

मृगशिरमें बाग़ी फ़ौज, जिसका सरपरस्त शाहज़ादह फ़ीरोज़शाह था, मन्दसोर पहुंची और वहां क़बज़ह करलिया. नींबाहेड़े का बख़्शी भी उस के साथ था, उसने महताजीके व मेरे नाम ख़त भेजा कि शाहज़ादे फ़ौज लेकर आते हैं, सबराह का बन्दोबस्त कर रखना; अगर फ़र्क़ पड़ा तो इन्शा अल्लाह मेरा नाम बख़्शी है, देबारी तक घोड़ों को पानी पिलाऊंगा. इसके बाद दस हज़ार फ़ौज लेकर यह नीमच पर चढ़ आया और चार घड़ी दिन बाक़ी था कि परेड की तरफ़ तोपें दाग़ना शुरू किया. मेरा बंगला नीमच और छावनी के बीच में था, फ़ौज की ख़बर सुनकर शोर

साहिब व विलियम साहिब ने कहा कि कोठी के पास आजाओ, लेकिन् इस ख्याल से कि छावनी वाले यह समझेंगे कि डरकर भाग आये, अपना बगला नहीं छोड़ा मेरे पास भवानी पल्टन के पूर्बिये और रिसाले के सवारोंमें से कुछ मुसल्मान थे, साहिबने कहा कि ये लोग बदमाश हैं, इन्हे यहां से रुखसत देदो इसलिये इन आदमियों को कुछ सामान साथ देकर सादड़ी भेजदिया और जब गोलन्दाजी होने लगी हम किले के पास आखड़े हुए और साहिबके साथ मैं जाखड़ा हुआ इस अरमे मे सवाईसिंहजी भी चित्तौड से आगये थे, रात होने पर जेनरल जेक्सन साहिब, शोर साहिब, सवाईसिंहजी, फूलचन्दजी और मैं दारू आये, छावनी के साहिब लोग किले मे घुसगये और किले के दर्वाजे बन्द करलिये. सदर के लोग अपना अपना मुह लेकर अठाणे, पीपल्ये, चित्तौड़ व जावद वगैरहमे भाग आये बागियोंने छावनी लूटकर जलादी, तमाम छावनी और मेरा बगला वगैरह बर्बाद होगया. दुश्मनों ने अपनी दोनों तोप जिनके नाम काला पहाड़ व फतह लश्कर थे, बगाणा के मैदान में खड़ी कर किले पर गोलन्दाजी शुरू की.

दारू मे शोर साहिब के पास बिछाने व ओढ़ने तक को न था, मैंने अपना गदेला, चादर व रजाई वगैरह साहिब के पास भेजदिया दारू रावतजी के यहां मक्कीकी रोटी और चावल तय्यार थे, सो साहिब लोगोंने खाये हमारे लिये पूरियां वगैरह बनवाई गई, रात को दर्वाजे और उसके करीब के मन्दिर में हम सब सो रहे, दूसरे दिन दारू में जियादह ठहरना

मुनासिब नहीं समझा गया, क्योंकि छावनी से बहुत क़रीब था. साहिबने फ़र्माया कि बहुत दूर तो न चलना चाहिये, केसूंदा को चले चलो. चराग़ जलने के वक़्त रवाना हुए और धनेरिया के क़रीब होते हुए केसूंदा पहुंचे. वहां गढ़ी में साहिब ठहरे, खाने पीने और सोने के लिये खाट वग़ैरह का बन्दोबस्त करादिया. फूलचन्दजी साहिब के पास रहे; सवाईसिंहजी के साथ चित्तौड़की जमइयत थी, वे बड़ के नीचे उतरे. मेरे साथ पांच खानगी नौकर थे, मैं पटेल की पौल में जा ठहरा और थोड़ेसे चांवल व मक्की का आटा दस्तयाब हुआ, उसे पकवाकर खाया. साहिब ने सवाईसिंहजी को हुक्म दिया कि दो सवार रास्ते पर मुक़र्रर करदो कि अगर कोई दुश्मन छावनी की तरफ़ से आते हुए नज़र आवें तो फ़ौरन ख़बर देवें. सवारों ने पिछली रात को आकर खबर दी कि बाग़ी लोग आपहुंचे, यह सुनते ही कुछ पर्देशी भाई भाग निकले और सादड़ी, नींबाहेड़ा व बाड़ी बीनोतेकी तरफ़ चलेगये. यह हाल देखकर सवाईसिंहजी ने मुझे बुलाकर कहा कि अपने आदमियोंमें से कई तो भागगये और जो बाक़ी हैं उनकी तरफ़से भी हर तरह का अन्देशह है, इसलिये साहिबका छावनी के नज़दीक रहना ठीक नहीं है. यह सब सोच विचार कर तीनघड़ी रात बाक़ी रहे साहिब के पास गये और जगाकर कहा कि छावनीके नज़दीक रहना ठीक नहीं है. हमारे साथके बहुतसे लोग भाग गये और जो हैं उनका भी भरोसा नहीं है. साहिब बोले हम सब को फांसी देंगे. दुबारा अर्ज़ किया कि इस वक़्त तो यहां से चलना ठीक है, तब फ़र्माया कि अच्छा ज़ुरूरियात से फ़ारिग़

होकर और चाय पीकर चलेंगे, मुझे बुखार आता था, साहिब ने कहा कि आप बीमार हो, छोटी सादड़ी चले जाओ मैं डेरे पर आया और स्नान करके नित्य नियम करने लगा. इस अरसे मे साहिब वहांसे रवानह होकर छावनी के पास होते हुए किले के नज़दीक पहुंचे और सीटी दी साहिब लोग ऊपरसे देख रहे थे, उन्होंने दर्वाजा खोल दिया दोनों साहिब अन्दर गये और साहिब लोगोंसे मिलकर वापस आये इतनेमें मैं भी वहां पहुंच-गया और उधर से बागियोंके सवार आगये. उन्हें देखकर सब तितर बितर होगये. साहिब लसरावनको चलदिये, मैं दारू को चलागया, वहां घबरा-हट जियादह फैल रही थी. फिर मैं साहिब की मन्शा के मुवाफिक सादडी चलागया. शिवदासजी कायन्या व बागड़्या राठौड़, जो सवाई-सिंहजी के साथ ऊटपर सवार थे, वे दुश्मन के हाथ से मारेगये फूलचन्द जी साहिब के साथ लसरावन गये और अच्छी खिदमत की, लेकिन किसी सबबसे वे बेरुख्सत उदयपुर चलेगये, जिससे साहिब नाराज होगये, साहिब के पास महताजी पूरा जाबिता छोडगये थे. सवाईसिंहजी भी चित्तौड़ चलेगये, क्योंकि वहां कोई नहीं था. छावनीमें किलेके साहिब लोगों ने बगाएं की तोपके मुह में गोला लगाकर चर्खे से गिरा दी बागियों के पास दस हज़ार फौज थी, अगर चाहते तो नींबाहेड़ा या सादड़ी खाली करालेते, परन्तु वे लोग छावनीमें ही रहे. दस बारह दिन बाद कर्नेल् कीटिंग साहिब तीन हज़ार के क़रीब सर्कारी फौज लेकर मालवेकी तरफ से आये और मन्दसौर के मक़ाम पर बागियों को सख्त सज़ा दी बहुतों को गिरिफ्तार

किया और कितने एक मारेगये; वहांसे नीमच आये. सर्कारी फ़ौजके आते ही बाग़ी लोग अपना अपना मुंह लेकर भागगये; जो गिरिफ्तार हुए थे उनमें से कइयों को फांसी दी और बहुतों की आंखें बन्धवाकर बन्दूक़ की बाढ़ से मरवाडाला. कीटिंग साहिब ने शोर साहिब को चिट्ठी लिख-कर बुलवाया और शोर साहिब का हुक्म मिलने पर मैं भी छावनी गया और कीटिंग साहिब से मुलाक़ात की. छावनी का बन्दोबस्त करके फ़ौज वापस गई और छावनी फिर से आबाद हुई.

माघ में शोर साहिब उदयपुर आये, श्री दर्बार नाहरमगरे थे, इससे साहिब भी वहां तशरीफ़ लेगये. वहां से दो दिन बाद श्री दर्बार साहिब समेत उदयपुर आये. इस अरसे में महताजी नींबाहेड़ेसे और सवाईसिंहजी चित्तौड़ से आगये थे. नींबाहेड़े की फ़तह के इनआम में महताजी को दो हज़ार का ज़ेवर कंठी, सरपेच व पहुंचें बख्शकर हुक्म फ़र्माया कि नींबा-हेड़ा खालिसह होने पर पांच हज़ार की जागीर बख्शी जायेगी और सवाईसिंहजी को एक हज़ार का ज़ेवर कंठी व सरपेच बख्शा और हीरेके कड़े एक हज़ार की क़ीमतके मुझे अता फ़र्माये और हुक्म दिया कि नींबा-हेड़ा खालीसह होने पर तीन हज़ारकी जागीर बख्शी जायेगी; फूलचन्दजी को मोतियों की कंठी क़ीमती ५००) रुपये की अता फ़र्माई और ऐसी ही कंठी महता गोपालदासजी को बख्शी.

होली व गणगौर उदयपुरमें हुई, मैंने एक दोनाली बन्दूक़ विलियम साहिब की मारफ़त विलायत से मंगाकर श्री दर्बार के नज़र की. दर्बार ने

मुझे उसके एवज़में फतहचाण बख्शी, जो अब तक मेरे पास मौजूद है. इन दिनो मेरा डेरा जैन के मन्दिर मे था, खुशी का जलसा वहीं किया.

शोर साहिब वैशाख में खैरवाडे गये और पचीस दिन वहां रहकर यहां वापस आये. ज्येष्ठ में छावनी गये; छावनी का बगला जलगया था, उसे फिर बनवाने के लिये महताजी को हुक्म दिया, जो पुरोहित शम्भुनाथ-जी पल्लीवाल की निगरानी से बनवाया गया. जेनरल जैक्सन साहिब छावनी से मौकूफ हुए, तब वह शोर साहिबके साथ उदयपुर आये और श्री-जी हुजूरसे अमरशाही पघड़ी, जामा और तुर्रा छोगा मांगा कि विलायत जाकर हम पहिनेंगे ये सब चीजें श्री दर्बार ने अता फर्माई.

विक्रमी १६१५ के श्रावण में बागी लोग मेवाड़ में होकर निकले यह सुनकर साहिब छावनी से रवानह होगये, मेरे ऊंट सादड़ीमें थे जिससे साथ रहने में एक दिन की देर होगई साहिब ने दर्बार के नाम खरीते में यह लिख भेजा कि मेरे पास कोई मोतमद नहीं है, श्री दर्बारने साह जोरावर-सिंहजी सूराणा व राय सोहनलालजी को भेजदिया, जो हीता के मकाम पर साहिब के पास आपहुंचे और मैं भी वहीं जा शामिल हुआ खरोंद होकर ईटाली में मकाम हुआ फिर आकोले होते हुए कपासन आये. आकोला में जोरावरसिंहजी के नाम हुक्म आया कि उदयपुर चले आओ, इन्हे रुखसत दिलाकर रवानह किया ढींकड्या राधाकृष्णजी बारगीरों के सवार लेकर चित्तौड़ गये, साहिब कपासनसे चित्तौड़ होकर छावनी आये. राय सोहनलालजीको भी रास्तेसे रुखसत दिलादी

विक्रमी १९१५ के भाद्रपद में सर्कारी फ़ौज होशंगाबाद जाती थी, उसके साथ ही शोर साहिब भी रवानह होगये मह्ता शेरसिंहजी को सावण गांव से रुख़्सत दी और मैं बराबर साथ रहा. मणासे, कुकड़ेश्वर होकर गरोट पहुंचे. वहां कोठारी शिवचन्दजी से मुलाक़ात हुई. फिर मालवे में नलखेड़ा पड़ावा की तरफ़ होते हुए सारंगपुर आये यहां फ़ौज कुछ दिन ठहरकर आगेको रवानह हुई, फ़ौज के साथ दो हथनी नागपुरी व लक्ष्मी नामी भेजी, हम सब बर्सात के सबब कालीसिंध के पार न उतर सके, वहां पन्द्रह मक़ाम करने पड़े, तमाम लोगों ने तक्लीफ़ उठाई; मेरे डेरे में और दूसरे जो थे बीमार थे. शोर साहिब के वास्ते राज से पालकी साथ थी, उसके सब कहार भागगये. तब गरोट से कोठारी शिवचन्दजी की मारफ़त मियाना मांग लिया, जो सारंगपुर से मुझे बैठने को दिया, और नदी उतरने पर सारंगपुर से आगे बढ़े, साहिब बारह बारह चौदह चौदह कोस पर मक़ाम करते, जिससे अमले वाले पीछे पीछे आते. मैं गरोट तक मियाने में आया; फिर मियाना तो शिवचन्दजी कोठारी के पास भेजदिया और हथनी पर सवार होकर आगे बढ़ा, कानड़ आगर की छावनी होकर गंगराड़ आये. आगे दो नदियां कालीसिंध और चम्बल रास्ते में आईं. साहिब पहिले दोनों नदी उतरगये; मैं कालीसिंध उतरकर चम्बल के किनारे आया. वहां के कीरों ने ख़बर दी कि नदी फिर चढ़ आई है उतार नहीं है. लाचार रातभर वहां ठहरना पड़ा. दूसरे दिन इलाहीबख़्श महावत ने कहा कि अगर इन्आम मिले तो सब सामान

हथनी पर रखकर उतार दूं. गरज कि चार पांच बार में उस हथनी के जरिए से तमाम सामान उतरवादिया, इतने में शाम होगई. फिर मैं और पचौली मोडीरामजी हथनी पर बैठकर पार हुए. यह हथनी पागल थी, जो आदमी इसके सामने आता उस पर हमला करती और पानी में सिर भीगजाता तो गोता लगा जाती थी, मगर परमेश्वरकी कृपा से खैरियतके साथ पार उतरगये. पचौली खुशहालसिंहजी व लाला रौशनलालजी, जो पहिले पार उतरचुके थे, मए कुल सामान के तीन कोस आगे बढ़कर गाव में ठहरे. मुझे सीतामऊ जाना था और रात का वक्त था, रास्ता भूलकर सीतरोद गांव ज़िले नाहरगढ़ में जानिकले रास्ते में ग्वालियर का नाइब आपाजी व एजेण्टी के पंडित रामरावजी मिले, जो नाहरगढ़ को जाते थे वे वहां ठहरगये और उन्होंने सबैराह वगैरह का सब बन्दोबस्त करादिया. आपाजी ने पूछा कि किधर जाना है ? मैंने कहा कि सीतामऊ होकर मन्दसोर जाऊंगा यह सुनकर उन्होंने मन्दसोर के हाकिम बाबा हापट्या के नाम कागज लिख भेजा. मैं सीतामऊ गया, वहां पर पचौली हुलासराय मिलने को आये और राजाजीकी तरफ से सबैराह पहुंचाई यहां से मन्दसोर पहुंचे बाबा हापट्या ने बडी खातिर की. फिर मल्लारगढ़ गये, तहसीलदार मूलचन्दजी ने खूब सन्मान किया, वहां से छावनी में आये और आश्विन मास वहीं पूरा हुआ

विक्रमी १९१५ के कार्तिक में साहिब उदयपुर आये; शहर व तालाब पर उम्दह रोशनी हुई इसी अरसे मे अणींदा की बारी की तरफ से

बाग़ियों के निकलने की ख़बर मिली. शोर साहिब रवानह हुए; मैं और राधाकृष्णजी ढींकड़्या बारगीरों के सवार लेकर साथ गये और खेरोदे व भगरवाड़ होकर नकूम पहुंचे. वहांसे जीरण होकर प्रतापगढ़ आये. वहां डेरे खड़े हुए थे कि बाग़ी लोग आगये; प्रतापगढ़ से पूर्व एक नले के इस ढावे पर साहिब अपने हमराहियों के सिवा उदयपुर और नींबाहेड़ा के लोगों को लेकर जाखड़े हुए; दूसरे किनारे पर बाग़ी थे. दोनों तरफ़ से लड़ाई शुरू हुई और तोप बन्दूक़ चलने लगी. सिन्धी मियां दादखां जो साथ था, उसने अच्छी बहादुरी दिखाई. दो घड़ी रात गई होगी कि बाग़ी निकल भागे. रात को साहिब ने वहीं क़ियाम फ़र्माया. सुबह होते ही सत्ताईस कोस डग गांव तक बाग़ियों का पीछा किया. राधाकृष्णजी व बारगीरों के सवार साहिब के साथ गये; मैं प्रतापगढ़ से मन्दसोर तक आया, बाबा हापख्याने दर्वाज़े तक पेश्वाई की और हाथ पकड़कर हथनीसे उतारा. और खाने पीने का बन्दोबस्त अच्छी तरह करादिया; शहर के बाहिर नई सराय में डेरा कराया. ग़रज़ सब तरह से ख़ातिर की. मैं वहां से नीमच आया और साहिब व राधाकृष्णजी भी आपहुंचे. साहिबने राधाकृष्णजी को व सवारों को रुख़सत दी. श्री दर्बार ने इस ख़िदमत के एवज़ एक गांव राधाकृष्णजी को अता फ़र्माया.

विक्रमी १९१५ के माह में एक मेम साहिबा नसीराबाद जाती थी, उसे शोर साहिब नसीराबाद तक पहुंचाने गये और मुझे बनेड़ छोड़गये; वहां से आठ दिन बाद वापस आये और मेवाड़ में बाग़ियों के आने की

खबर मिली साहिब भीलवाडे होकर हमीरगढ़ आये वहां से मुझे तो गंगापुर भेजा और आप चित्तौड गये, नीमच से सामान मंगाकर और नौकरों को व मुन्शी गुल्लूजी को साथ लेकर गंगापुर तशरीफ लाये और गुल्लूजी को कुवारिये भेजा कि वहां से बागी लोगों की खबर हमको देना, वे कुवारिया होकर कांकडौली आये. सर्कारी फौज का बागियों से कोठा-र्या के गांव नवाण्याके मैदान में मुकाबलह हुआ और दुश्मन भाग निकले, सर्कारी फौजने तअक्कुब किया, साहिब और मैं पीछेसे पहुचे कांकडौली मे साहिबने दो घोड़े मांगे, जिनमें एक तो मन्दिर से मंगाया और एक पचौली खुशहालसिंहजी ने अपना दिया खुशहालसिंहजी हथनी पर सवार हुए, गुल्लूजी ऊंटपर बैठकर हुक्म के मुवाफिक फौज के पीछे गये और मैं कपा-सन होकर ताणे आया राज देवीसिंहजी दर्वाजे पर बैठे थे, उन्होंने मुझे ठहरनेके लिये कहा, मैंने कहा मौका नहीं है यहांसे रीते व डूंगले होकर छोटी सादडीमें आया गुल्लूजी बहादुर थे, मगर दौडसे घबराकर सादड़ीमें ठहरगये. साहिब सादडी से जीरणको रवानह हुए. यह ऐसा मौका था कि रास्तेमें तीन दिनतक बराबर रोटी बनवाना नसीब न हुआ. गुल्लूजी सादडीसे चित्तौड गये और मैं छावनी आया. वहां हेडक्लर्क विलियम साहिब थे, जिन-का मिजाज नेक था. शोर साहिबका खत बूड़े गांवसे हेडक्लर्क के पास आया कि वकीलको जल्द भेजदो, विलियम साहिब ने मुझे रवानह होनेके लिये कहा. तीसरे पहर रवानह होकर नाराणगढ़ होता हुआ बूडामें पहुचा, आधी रात चलीगई थी यहां सर्कारी फौज थी, आराम किया. दूसरे दिन चंदवासे

पहुंचे. यहां से दुश्मन अक्सर भागचुके थे, सिर्फ़ तीनसौ बाक़ी थे, उनके हथियार छीन लिये और सार्टिफ़िकट देकर उनकी तसल्ली की. फ़ौज आगे बढ़ी; शोर साहिब छीपा बड़ौद व फूल बड़ौद होकर गागरौनके घाटेसे पाटन की छावनी पहुंचे. राजरणा वहां मौजूद नहीं थे, राधाकृष्णजी पासवान्या ने मिहमानी वग़ैरह भेजी. मेरे पास कुछ शीरीनी व सौ रुपये नक़द भेजे. मैंने रुपये वापस करदिये, मगर हुज्जत ज़ियादह होनेके सबब ५०) रखने पड़े, जो इन्ऋाम वग़ैरह में सर्फ़ हुए. फाल्गुन शुक्ला १४ को वहां रहे, दूसरे रोज़, पाने होली के दिन सुबह ही साहिब ने कूच किया और मैंने अर्ज़ की कि पाटन देखकर हाज़िर होऊंगा. मैं पाटन गया और तालाव की पालपर ठहरा, द्वारिकानाथजी के दर्शन किये; फिर शह्र देखकर छावनी आया. शाम को बलदेवजी व कल्याणदासजी पंचौलीने खाना खिलाया. मामाजी निहालचन्दजी वहां मौजूद न थे, वहां से डेरेपर आकर रवानह हुआ. झालरापुरेमें हुल्करकी छत्री देखी, जहां खड़ी मूर्त्ति है और हमेशह पूजन होता है, इसवक़्त एक लड़का नाच रहा था और नक्कारख़ाना बज रहा था. यहांसे रामपुरे व मणासे होकर छावनी में आगया और दौरा ख़तम हुआ.

विक्रमी १९१५ के चैत्रमें नींबाहेड़े से महताजी को मौक़ूफ़ कर अजीत सिंहजी व ढींकड़्या राधाकृष्णजी को भेजा. विक्रमी १९१६ श्रावण शुक्ला १३ को गादी उत्सव था. इसलिये मैं साहिब से रुख़सत लेकर उदयपुर आया. श्री दर्बार गोवर्द्धनविलास विराजते थे. वहां मेरी तरफ़ से गोठ हुई. भाद्रपदमें मैं पीछा छावनी गया. मैंने और गोपालदासजी महता ने श्री-

जी हुजूर के हुक्म मूजिब विलियम साहिब की मारफ़त शोर साहिब को वाक़िफ़ कर धूला पटवारीका ठेका नींबाहेडेका तुड़वा दिया, कोठारी केसरीसिंहजी को प्रधान मुकर्रर करने की मंजूरी मंगाई और मुल्लां नज़रअ़लीजी ने शरफअलीका हक़ खारिज करके दाऊदको पाटवी करार दिया, सो पीछा शरफअली का हक़ बहाल कराया लॉरेन्स साहिब के विलायत जाने पर जयपुर के एजेण्ट ईडन साहिब क़ाइममक़ाम एजेण्ट गवर्नर जेनरल मुक़र्रर हुए जब गवर्नर जेनरल हिन्द आगरे आये, ईडन साहिब उनके पास गये, और शोर साहिब के नाम खत भेजा कि नींबाहेड़े के जमाखर्च का हिसाब लेकर आगरे आवें

इस साल कार्तिक में महता गोकुलचन्दजी मौकूफ होकर कोठारी केसरीसिंहजी को प्रधाने का काम मिला. बेदले रावजी, कोठारीजी और महता गोपालदासजी साहिबसे मिलनेको छावनी आये. साहिब कोठारीजी को रुखसत देनेके लिये बंगलेपर आये और वहां दावत, नाच वग़ैरह हुआ. इस अरसे में शोर साहिब के नाम आगरेसे लिखा आया कि यहां न आओ, सिर्फ हिसाब भेजदो, इस वास्ते जल्द ही हिसाब का टोटल मिलाकर भेज दिया और साहिब का जाना मुल्तवी रहा. मृगशिर में ईडन साहिब के छावनी आने की खबर थी, इसलिये महता गोपालदासजी को उदयपुर से जहाजपुर पेशवाई के लिये भेजा. इन्होंने वहां पहुंचकर साहिबसे अर्ज़ की कि जब महाराणा साहिब से खानगी मुलाक़ात होगी, तब बहुतसे खानगी हालात आपको रौशन होंगे. साहिब जहाजपुरसे जाठ, भींचोर, रलगढ़,

सींगोली और जावद होकर छावनी आये. ईडन साहिब से मिलनेके लिये उनके लिखे मुवाफ़िक़ शोर साहिब जहाज़पुर को रवानह होगये थे, लेकिन न मालूम किस सबब से सांगानेर तक जाकर लौट आये. ईडन साहिबकी पेश्वाई के लिये सब साहिब लोग छावनी से जावद तक गये. शोर साहिब छावनी में ही रहे, बल्कि जब ईडन साहिब छावनी में आये, तब भी उनकी मुलाक़ात को न गये, सिर्फ़ ब्रुक साहिब के डेरे पर जाबैठे, वहीं ईडन साहिब आगये थे, सो मुलाक़ात होगई. ईडन साहिब के उदयपुर जाने से दो दिन पहिले शोर साहिब ने कहलाया कि मैं उदयपुर जाकर सर्बराह वग़ैरह का बन्दोबस्त करता हूं और पीछे से ईडन साहिबके साथ ब्रुक साहिब व जयपुरके एजेण्ट टेलर साहिब उदयपुर आये. मुलाक़ात हस्ब दस्तूर क़दीम हुई, याने कुर्सियां नहीं रक्खी गईं. दूसरे दिन ईडन साहिब ने एक सिकत्तर साहिब भेजकर शोर साहिबसे कहलाया कि मैं ख़ानगी मुलाक़ातके लिये दर्बारके पास जाता हूं. इस वक़्त शोर साहिब के पास मैं मौजूद था, उन्होंने जवाब में लिखभेजा कि अगर आप मेरे बग़ैर अकेले दर्बार के पास जायंगे तो मैं लार्ड साहिब को रिपोर्ट लिखूंगा. इस तह्रीर करने के पेश्तर मैंने उनको मना भी किया, मगर न माना.

इस तह्रीर को देखकर ईडन साहिब पहिले तो रुके, मगर फिर दर्बार के पास गये. मैंने इनके महलों में पहुंचने के पहिले ही यह कैफ़ियत श्री-दर्बार में अर्ज़ करदी थी. ईडन साहिब ने आते ही यह दर्याफ़्त किया कि आपने ख़ानगी मुलाक़ातके लिये हमें बुलाया या नहीं; अगर बुलाया है तो

एक खरीता लिखदीजिये कि जिसमे खानगी मुलाकातका मतलब हो. श्री दर्बार को बडा पसोपेश हुआ, आखिर सोच विचार कर यही कहा कि हमारी तरफसे तो आप दोनो साहिब बराबर हैं, आप दाना हैं, अच्छी तरह सोचले. साहिबने दानाई से फिर कुछ न फर्माया और कोठी चले गये

दूसरे रोज बेदले रावजी, कोठारीजी और गोपालदासजी को कुछ हाल दर्याफ्त करने के लिये कोठीपर बुलाया. गोपालदासजी के कहने के मुवाफिक साहिब यह समझे थे कि शोर साहिब से महाराणा साहिब नाराज हैं, इसलिये खानगी मुलाकात चाहते हैं. गोपालदासजी की घोड़ी कोठीके बागके करीब चमकी, जिसमे वह गिरगये और घरको लौटगये. बेदले रावजी व कोठारीजी साहिब के पास गये और हाल दर्याफ्त करने के बाद रुख्सत दी

ईडन साहिबने यहा से जाने बाद रास्तेमे से शोर साहिब की बेपर्वाई और बगैर हुक्म नीबाहेडा लेलेने की शिकायती रिपोर्ट लिख साहिब की तब्दीली चाही इसपर शोर साहिब की जगह टेलर साहिब एजेट जयपुरकी तक्र्रीका हुक्म आगया. शोर साहिब उदयपुरसे नीमच गये, मै भी साथ था. यह साहिब फाल्गुनमे विलायत चले गये. टेलर साहिब के आने तक इनका काम छावनी के सुपरिन्टेन्डेन्ट डेनी साहिबने अजाम दिया टेलर साहिब के आनेकी खबर सुन मैने श्री दर्बारमे अर्जदाश्त भेजी और यह लिख दिया कि इनका मिजाज बहुत तेज है और निगाह टेढ़ी

है शायद मेवाड़पर ज़ियादह डिगरियां करेंगे, इसमें मेरी बदनामी होगी, दूसरा वकील मेरी जगह भेजदें. श्री दर्बारने हुक्म भेजा कि दूसरा वकील नहीं है, साहिब डिगरी करेंगे तो देखा जायगा.

नींबाहेड़ेके मुआमलेमें श्री दर्बार शोर साहिब के भरोसे रहे, जिससे लॉरेन्स साहिब के पास कुछ पैरवी न की. लॉरेन्स साहिब नाराज़ थे और ये व ईडन साहिब एकमत हो रिपोर्ट करचुके थे, बल्कि यह भी लिख चुके थे कि नींबाहेड़ा टौंक वालोंको मिलना चाहिये और वहां से मंजूरी भी आचुकी थी. टेलर साहिब वैशाखमें छावनी आये, थोड़े दिन बाद हुक्म दिया कि हम उदयपुर जावेंगे डाकका बन्दोबस्त करादो; डाक बैठगई और मैं भी उनके साथ उदयपुर आया. श्री दर्बार गोवर्द्धनविलास विराजते थे, दूसरे दिन साहिब मुलाक़ात के लिये आये. श्री दर्बार के दुश्मनोंकी तबी-अ़त अलील थी, इसकी पहिले साहिब को इत्तिला देनेके लिये मुझे फ़र्माया. जब मैंने इत्तिला की तो साहिबने कहा कि हमारी मुलाक़ात के वक्त महा-राणा साहिब पौढ़े रहें यह ठीक नहीं. मैंने अर्ज़ किया कि बीमारीमें अदना आदमी भी खाटसे नहीं उठता, फिर यह तो रईस हैं, आप ही ग़ौर फ़र्मा-लीजिये. साहिब अगर्चि नाराज़ हुए, मगर कुछ सोच समझकर मुलाक़ात मंजूर की. जिस वक्त साहिब मुलाक़ात के लिये गोवर्द्धनविलास आये, श्री जी हुज़ूर पलंगपर पौढ़े रहे और साहिब नीचे बैठे थे. श्री दर्बारने मिज़ाजपुर्सी भी न फ़र्माई, थोड़ी देर बाद साहिबने रुख़्सत मांगी, इत्र पान देकर रुख़्सत बख़्शी. कोठीपर आते ही बेदले रावजी व कोठारीजीसे

कहा कि दर्बारने हमको कुछ भी न समझा, अच्छा हम कल जावेंगे, डाकका बन्दोबस्त होना चाहिये हुक्म मुवाफ़िक़ डाक बैठादीगई, मैंने साहिबसे अर्ज़ किया कि मैं गोवर्द्धनविलास जाकर दर्बार से रुख्सत ले पीछे आऊंगा; मैं दूसरे दिन गोवर्द्धनविलास गया, तीसरे पहर हुक्म मुवाफ़िक़ कोठारीजी कोठीपर गये और मुझे भी रुख्सत बख़्शी. मैंने अपनी हवेली आकर सब आदमियोंको रवानह किया कि आगे चलो, मैं खाना खाकर आता हूं. इस वक्त मेरे व फूलचन्दजी के साथ के सवार, जो साहिब की अर्दलीमें रहा करते थे, शहरमें चले आये थे, कोठीपर कोई हाजिर नहीं था. और इस अर्से में छावनी से चन्द साहिब लोग खैरवाड़े जानेके लिये यहां आये, उनके वास्ते साहिबने हथनी मंगाई, दुर्गा चपरासीने मेरे कामदार पचोली खुशहालजी से कहा, उन्होंने जवाब दिया कि यह तो वकील साहिब की सवारी की है, दूसरी राजमें से मंगा देता हूं दुर्गाने साहिब से शिकायत करदी, साहिबने कामदारको बुलाकर धमकाया, उसने अर्ज़ की कि हुजूर मैंने इन्कार नहीं किया, यह अल्बत्ता कहा था कि यह वकील की सवारी की है, दूसरी राजसे मंगादेता हूं. साहिब बोले कि बस यह वकीलका कुसूर है इसके बाद खानसामां सांडिये पर सामान रखकर बैठने लगा तो सांडीवालने सामान रखने से रोका, साहिब गुस्सेमें थे ही, उसे पिटवाया फिर रवानगीके वक्त सवार भी हाजिर न मिले बेदले रावजीने अपने सर्दार चहुवान रामसिंहजी को साथ करदिया. जाते वक्त साहिब बेदले रावजी से कहगये कि

वकीलको मौकूफ़ कर दूसरेको भेजना. मैं मकानसे घोड़ेपर सवार हो, हाथीपौल तक पहुंचा; गोपालदासजी महता भी वहीं पहुंचे थे कि साहिब की रवानगी की तोपें सुनीं; कोठी न गये और घोड़े दौड़ाकर साहिबके पास जा पहुंचे. साहिब म्यानेमें थे, मैंने सलाम कर अर्ज़ की कि गोपाल-दासजी आये हैं तो सिर नीचा कर बोले कि शहरको चले जाओ. साहिब को नाराज़ देख मकानको लौट आये. रास्तेमें चार्ल्स साहिब, जो विलि-यम साहिबके पेन्शन लेनेपर जयपुरकी एजेण्टीसे यहां आये थे, मिले और कहा कि आपसे साहिब ख़फ़ा हुए और मौकूफ़ीका हुक्म देगये हैं. चार्ल्स साहिब विलियम साहिबके बड़े भाई ऑगस्टिन साहिबके छोटे बेटे थे; इनके बड़े भाई जोज़फ़ साहिबके पुत्र टॉमस विलियम साहिब आज कल उदयपुर में स्टेट इन्जीनियर हैं. मैं वहांसे कोठी गया, वहां रावजी व कोठारी-जीने कहा कि साहिब मौकूफ़ करगये हैं, मैंने यहकह कर कि साहिब की मर्ज़ी है, जो कागज़ात मेरे पास थे, कोठारीजी सौंपदिये. उन्होंने कहा कि गोवर्द्धनविलास चलकर श्री दर्बार से तो अर्ज़ करदें. मैं इन्कार कर घर आया और कोठारीजीने दर्बार से अर्ज़ की कि साहिब के साथ एक आदमी तो ज़ुरूर चाहिये, हुक्म हो तो फूलचन्द को भेजदें. हुक्म होने पर फूलचन्दजी भेजे गये.

फिर साहिबने छावनीमें मेरे नाइब रोशनलालजी को बुलाकर हुक्म दिया कि पंचायत के वक्त दफ्तरमें हाज़िर हो. उन्होंने इन्कार किया कि वकील की अदम मौजूदगीमें डिगरियां ज़ियादह हों तो इसका

जिम्मेवार कौन हो, मैं नहीं जाऊंगा. इसपर पंचायत बन्द होगई. मीर मुन्शी हाजी मुहम्मदखां, जो शोर साहिब के जमानेमें मौकूफ होचुके थे, विलायतसे जेनरल लॉरेन्स की सिफारिशी चिट्ठी आनेपर फिर मुकर्रर हुए.

मुझे उदयपुरमें डेढ़ महीना गुजरा होगा कि श्री दर्बार के नाम लाट साहिब का खरीता आया—"शोर साहिब की रिपोर्टसे मालूम हुआ कि राव बख्तसिंहजी, महता शेरसिंहजी और सलूंबरवाले अर्जुनसिंहजीने गदर के वक्त सर्कार को अच्छी मदद दी और यह खास श्री दर्बार के नौकर हैं. इनको श्री दर्बार से इन्आम मिलना चाहिये"

टेलर साहिबने ईडन साहिब के नाम आबू लिख भेजा कि वकील बगैर पचायत का काम बन्द है, ईडन साहिब ने लिखा कि 'अर्जुनसिंहजी की लाट साहिब भी सिफारिश लिखते हैं, फिर तुम्हारा मौकूफ करना ठीक नहीं, दर्बार को इख्तियार है चाहे जिसे भेजें और जिसको भेजे उससे काम लो तब टेलर साहिबने बेदले रावजी के नाम चिट्ठी लिखी कि अर्जुनसिंहजी को भिजवादो और फहमाइश करदो कि हमारे हुक्म की तामील करे.

रावजीने श्री दर्बारसे अर्ज की, हजूरने मुझे हुक्म बख्शा. मैं विक्रमी १९१६ के आषाढ मे मस्लहत समझकर फिर छावनीको गया मेरे जानेके पेश्तर ही नींबाहेड़ा टाक वालोको मिलनेकी बाबत सदर से हुक्म आचुका था दर्बारने महता अजीतसिंहजीको हुक्म बख्शा कि तुम जाकर नींबाहेड़ा

सुपुर्द कर आओ; उन्होंने जानेसे इन्कार किया कि मैं सुपुर्द करने तो न जाऊंगा. श्री दर्बार उनपर नाराज़ हुए और महता बख़्तावरसिंहजीको भेजा, जिन्होंने ज्येष्ठ शुक्ल पक्षमें नींबाहेड़ा उनके सुपुर्द करदिया. टौंकके वकील मुन्शी तहव्वुरअलीख़ां थे. साहिबने नींबाहेड़ेका हिसाब मुफ़स्सल तलब किया; तब उदयपुर से आषाढ़में चौधरी हमीरजी, पंचौली लालचन्दजी, बेनीरामजी मिश्र, पंचौली देवीदासजी नागौरी, बौल्या देवीलालजी और वैद्य रखबदासजी आये. टौंककी तरफ़से मुन्शी ज़ुहूरअलीजी आगये. हिसाब के रूबकारीके वक्त साहिब टौंक वालोंकी तरफ़ बोलकर मेवाड़ वालोंकी ग़लती बताते थे और मैं मेवाड़ की तरफ़ से जवाब देता था, इससे साहिब नाराज़ होते थे.

विक्रमी १९१७ श्रावण व भाद्रपद तक बराबर रूबकारी होती रही, नींबाहेड़े वालोंके हाथी घोड़े जो लूटके वक्त हाथ आये थे सब वापस दिये. आश्विन में ईडन साहिब अजमेर आये और टेलर साहिब भी वहां आने को तय्यार हुए तो मैंने जो लोग हिसाब समझाने को उदयपुरसे आये थे उनको रुख़सत देनेके लिये अर्ज़ की तो इन्कार कर कहा कि हम साथ लेजायेंगे; जैसे कि ऊंट की नकेल खैंचकर लेजाते हैं उसी तरह लेजायेंगे. बहुत कोशिशके बाद औरोंको तो रुख़सत दिलाई और चौधरी हमीरजी, पंचौली लालचन्दजी, मिश्र वेणीरामजी और बौल्या देवीलालजीको साथ लिया.

साहिब छावनीसे नींबाहेड़े आये, वहां ख़ुशी २ ढीला और दावत

वगैरह कुबूलकी, फिर चित्तौड आये, नीबाहेडे जाना मैंने मुनासिब न जाना और साहिबसे अर्ज की चित्तौड़के किलेदार महाराज चन्द्रसिंहजीने मुझे बुलाया है, हुक्म हो तो एक दिन पहिले चित्तौड चला जाऊं साहिब ने मजूर फर्माया और मैं अठाणा केली होकर चित्तौड आया, दूसरे दिन साहिब तशरीफ लाये, चित्तौड हाकिम सुराणा जोरावरसिंहजी साहिब की पेशवाई को गये, मगर गलतीसे डाढ़ी बन्धी रहगई, साहिबने आतेही मुझसे पूछा कि यह कौन शख्स है, हमारे सामने डाढ़ी बांधकर आया, क्या इसकी डाढ़ीमें गर्दा पड़ता था ? मैंने अर्ज की कि यहांका हाकिम है, घोडेपर सवार होनेके वक्त डाढ़ी बांधने का दस्तूर है, दर्बार की सवारीमें भी बंधी रहती है, यह सुनकर खामोश होगये फिर मैंने दर्याफ्त किया कि हाकिम मिज्मानी लेकर किस वक्त हाजिर हो तो तीन बजे का वक्त बतलाया और कुछ फूलोंके गुलदस्ते मगाये. मैंने साहजी को लिखभेजा कि तीन बजे आना और गुलदस्ते अभी जल्दी भिजवादेना साहजी को देर हुई, चार बजे आये और कुछ शीरनी व गुलदस्ते लाये. साहिबको सवार होनेकी ताकीद थी, इसे देखकर झुझला गये और फर्माया कि थोडेसे फूल मगाये वह भी अबतक न आये, चले जाओ हम मिज्मानी नहीं रखते, तब मैंने अर्ज की कि नीबाहेड़ेकी रखली और यहांकी न रखनेमें हमारी अच्छी न दीखेगी. फर्माया कि हम भी यही चाहते हैं इसके बाद यहां से बनेड़े गये, राजाजी साहिब की मुलाकात के वास्ते आये और बकाया जर की वुसूलीके लिये राजकी तरफ से वहां दस्तक जारी थी, उसके उठानेके

लिये कहा. साहिबने मुझसे दर्याफ्त फर्माया कि यहां धौंसपर कौन है. मैंने कहा कि पंचौली अखैनाथजी रुपया वुसूल करने को आये हैं. उनको बुलाने का हुक्म दिया; वे आये और सलामकर बैठगये. साहिबने पूछा कि यह कौन है ? मैंने बतलाया कि यह अखैनाथजी हैं, जिनको हुजूरने बुलाया था. साहिबने कहा नहीं हमने नहीं बुलाया. अखैनाथजीसे बोलो उठो उठो चले जाओ. मैंने अर्ज़ की कि यह इज्जतदार हैं और आपके बुलाने से आये हैं, यह मुनासिब नहीं, यह सुनते ही मुझसे भी उठ जाने के लिये कहा; तब मैंने अखैनाथजी से कहा कि आप जाइये. फिर मैंने साहिब से कहा कि ऐसा वर्ताव करना मुनासिब नहीं है, तो बोले धौंस अभी उठवा दो. मैंने कहा इसमें मेरा इख्तियार नहीं है, कोठारीजी के नाम लिखना चाहिये. तब उनके नाम लिखा गया.

साहिब यहां से अजमेर पहुंचे. हमीरजी चौधरी के भाई जवानजी की बेटी की निस्बत गजमलजी लूण्या के यहां की थी, उन्होंने मिलने को घर बुलाया. हमीरजी के साथ आबू वकील जवानमलजी और मैं गया; साथ में लवाज़िमा हस्ब जैल था-याने चार म्याने, दो हाथी, सौ पचास आदमी और चालीस सवार साथ थे, उनकी तरफ़ से नाच रंग हुआ, मुन्शी हाजीमुहम्मदखांजीने हमारी ज़ियाफ़त की, नाच के लिये चार पांच रंडियों के तायफे और भांड मशीता काला कद्दू वग़ैरह मौजूद थे, जलसा बहुत अच्छा था, इस जलसे में एजेंटी व रेज़िडेंटी के अमले के लोग व शहर के सेठ साहूकार व टौंक नव्वाब के एक हक़ीक़ी भाई और एक

रहीजाद भाई भी शरीक थे. फिर बाबू मूलचन्दजीने जिनसे मैंने अंग्रेजी सीखी थी, जियाफ़त और नाच वगैरह का जलसा दिया. यह विक्रमी १९११ से १९१३ तक मेरे पास रहे थे, विक्रमी १९१४ के गदर में नौकरी छोड़कर घर चले आये थे.

पुष्करजी में स्नान कर अजमेर से कूच किया, ईडन साहिब छावनी के रास्ते राजनगर आये और टेलर साहिब व ब्रुक साहिब रायलां, भगवानपुरा, धागीर व कुवारिया होकर राजनगर दाखिल हुए. उदयपुर से पेशवाई के लिये राव बख्तसिंहजी, कोठारी केसरीसिंहजी और महता गोपालदासजी आये टेलर साहिबने कांकरौली की दो गायें मांगीं, गोपालदासजीने मगादीं, लेकिन साहिब को पसन्द न आईं. अन्नकूट के समय कोठारीजी, हमीरजी चौधरी, लालचन्दजी पचौली और मैं रुखसत ले नाथद्वारे गये साहिब का लश्कर देमली हो उदयसागर पहुंचा. मैं और कोठारीजी नाथद्वारे से उदयपुर गये, वहां से बेदले रावजी, कोठारीजी मैं और गोपालदासजी साहिब के पास उदयसागर पहुंचे साहिबने मुझसे पूछा कि क्या गायें तुमने भेजीं मैंने अर्ज की कि मैं तो रुखसत लेकर नाथद्वारे गया था, मुझे खबर नहीं तब गोपालदासजी पर खफा हुए कि हमारे लिये ऐसी गायें भेजीं कि जो कुसाईमें कटवाने के लाइक थीं, हम इसका बदला तुमसे लेंगे बाद उदयसागरसे उदयपुर आये.

हमीरजी चौधरी स्वरूपविलास में दर्बार के मुजरा करने आये थे, मुजरा करते हुए गश आगया, उसी वक्त पालकी में डालकर घर पहुंचाया, पहुंचते ही दम निकल गया.

साहिब के उदयपुर आनेसे एक दिन पहिले महता घणजी मरगये, उनकी औरत सती हुई; इनको नाईमें दाग़ दिया गया था. ईडन साहिबने इस ख़बरको सुनकर श्री दर्बारसे मुलाक़ात न की और कूचकर खैरवाड़े होते हुए विलायतको रवानह हुए. कर्नेल् ज्यॉर्ज लॉरेन्स साहिबके विलायतसे आनेकी ख़बर मिली, इसलिये यहां से बेदले राव बख़्तसिंहजी, देलवाड़े राज फ़तहसिंहजी, कोठारी केसरीसिंहजी और पंचौली अखैनाथजी को पेश्वाई के लिये भेजा, इनके साथ मैं भी था. कर्नेल् लॉरेन्स वहां से उदयपुर आये, श्री दर्बार से मुलाक़ात हुई; फिर बेदलेरावजी, कोठारीजी, मैं और गोपालदासजी महता कोठीपर गये. टेलर साहिब व लॉरेन्स साहिबने कहा कि गोपालदास हमारे पास न आवे, इसलिये वह लौट आये.

लॉरेन्स साहिब एक दो मक़ामके बाद आबू गये और मुन्शी हाजीमुहम्मदखां को साथ लेगये, उनकी जगह मौलवी गुलाममुहियुद्दीनख़ांजी रखगये. टेलर साहिब छावनीको रवानह हुए. नींबाहेड़ेका हिसाब तै होनेपर टोंक वालोंके रुपये बाक़ी निकले, वह दिलाये गये. अमले के मौलवी मुन्शी मुझे हाजी मुहम्मदखांजीका दोस्त जानकर टेलर साहिबके सामने मेरी बुराई किया करते थे; एक दिन साहिब नींबाहेड़ेके हिसाबकी बाबत मुझपर ख़फ़ा होकरसख़्त लफ़्ज़ बोल उठे. मुझे बर्दाश्त न हुई, मैंने कहा, हाकिम को नाशाइस्ता अल्फ़ाज़ मुंहसे निकालना मुनासिब नहीं यहां मैं इस्तेफ़ा पेशकर उदयपुर लिखता हूं, जवाब आनेतक बंगलेमें

रहूंगा और हुक्म आनेपर उसकी तामील करूंगा, अब आपके पास न जाऊंगा.

यह सब हाल मैंने श्री दर्बारको अर्ज़ीमें लिख भेजा और यह भी लिख-दिया कि हाकिम नाराज़ हैं, काम किस तरह चले; दूसरे को भेजदें. इसके जवाब में हुक्म आया कि साहिब खरीता लिखकर रुख़सत दें तो लेकर चले आओ. इसी अरसेमें टौंक वालोंने साहिबसे कहकर मौजे हींग-वाण्या पर्गने आकोला व चाखुरडा इलाके टौंकका सीमका फैसला, जो पहिले कर्नेल् लॉरेन्स साहिबके वक्तमें होचुका था, अज़सरे नौ करानेका हुक्म दिलाकर एजेन्टीके पंच वकील, मुन्शी मौलवीके नाम हुक्म सादिर फर्माया और मेरे नाम यह हुक्म आया कि पंच वकील, मौलवी मुन्शी सरहदपर जाते हैं, तुम भी साथ जाकर फैसला करालो. मैंने कैफियत लिख भेजी कि यह फैसला पहिले लॉरेन्स साहिब के अहदमें होचुका है, साहिब इसको बदलना चाहते हैं, मुझे यह मंजूर नहीं है, मैंने आपसे इस्तेफे की बाबत कहदिया है और उदयपुर दूसरे वकील के वास्ते लिख दिया है, अब जाते वक्त जमीन खोकर जाऊं, यह मुझसे नहीं होसक्ता, आप हाकिम हैं खुशी हो सो करें.

दूसरे दिन पंच वकील, मुन्शी सरहद पर गये, मेवाड़का गांव आकोलेके जिलेमें था, इससे मैंने पचोली देवीलालजीको सवार के साथ कागज लिख भेजा कि ये लोग आते हैं, इनको पहिले के फैसले व सुबूत से वाकिफ करदेना. वकीलोंके जाने बाद साहिबने नाइब मुन्शी शहाबुद्दीनजी

से पूछा कि मेवाड़ वकील गया, उन्होंने कहा नहीं. तब दुर्गा चपरासी को भेजकर मुझे कहलाया कि तुम पंच वकील गये हैं, वहां जाओ. मैंने कहलाया कि आप पहिले के फ़ैसले को उलटते हैं इसलिये बग़ैर हुक्म उदयपुर के नहीं जासक्ता, दुबारा फिर दुर्गाके साथ कहलाया कि तुम इसी वक़्त चले जाओ, वर्ना तुम्हारे हक़में अच्छा न होगा. मैंने कहला भेजा कि मेरे ऊंट सादड़ी हैं और श्री दर्बार के हुक्म बग़ैर मैं नहीं जाऊंगा; फिर एक पर्चा लिख भेजा कि इसी वक़्त चले जाओ वर्ना अच्छा न होगा. मैंने फिर इस पर कैफ़ियत लिख भेजी कि मैंने उदयपुर दूसरे वकील के बाबत लिखा है, अब मैं ज़मीन खोकर बदनामी उठाकर नहीं जाऊंगा. तब साहिबने ख़रीता लिखने के लिये शहाबुद्दीनजी को हुक्म दिया कि लिख दो-" वकील सुस्त है और हुक्म की तामील नहीं करता; इसलिये दूसरा वकील जल्द भेज दो हमारा दौरा है" और रौशनलाल के नाम पर्वाना लिखो कि "दूसरा वकील आवे, जबतक यहां का काम अंजाम दो" यह ख़रीता व पर्वाना शामको मेरे पास आया, तब रातके वक़्त तमाम हिसाब मोदी वग़ैरह का कामदार की मारफ़त करादिया और सवार को सादड़ी भेजकर तीन हज़ार रुपये मंगाये और ऊंट भी मंगालिये. पौषी पूनम के पन्द्रह दिन बाक़ी थे, वहां तक सबकी तनख़्वाह व देना चुकाकर रसीदें कराली. दूसरे दिन मुलाक़ातियों को दावत दी और नाच रंग का जल्सा किया. फिर पिछली रातको रवाना हो सादड़ी आया, सुबह साहिब को ख़बर हुई कि वह गये, तब रौशनलालजी

को बुलाकर धमकाया कि वकील कैसे चला गया. उन्होंने अर्ज़ की कि आपने रुखसती खरीता लिख दिया, वह लेकर चलेगये, तो फर्माया कि तुमने उनको खरीता क्यों दिया इन्होंने जवाब दिया कि यह आपने कहलाया नहीं था.

मैंने उदयपुर आकर सब हाल श्री जी हुजूर से अर्ज़ करदिया साहिब छावनी से दौरेपर रवानह होने लगे, रौशनलालजी को साथ चलने के लिये कहा, इन्होंने जवाब दिया कि मैं बीमार हू, साथ चलने की ताकत नहीं है यहा सुपरिन्टेन्डेन्टी में काम होगा वह करता रहूगा. इसपर खफा होकर बोले कि मैं तुम्हे मौकूफ करदूगा. यह कहकर साहिब तो दौरेपर गये, रौशनलालजीने यह हाल यहा लिख भेजा मैने श्री दर्बार से अर्ज़ कर-दिया श्री दर्बारने फर्माया कि आदमी होशियार है, यहां बुलाले इसलिये उन्हें यहा बुलालिया और नौकर करादिया. टेलर साहिब दौरा करते हुए डूगरपुर आये, वहां से खरीते में लिख भेजा कि वकील वगैर रुखसत चला गया फिर जब साहिब उदयपुर आये, श्री दर्बारने बेदले रावजी व कोठारीजी को कोठीपर भेजा कि ये दोनों खरीते लिये जाओ और कहना कि एक में वकील को मौकूफ कर रुखसत देनेका जिक्र है, दूसरे मे उसके वगैर रुखसत चले आने का लिखा है किसपर अमल किया जावे. वकील है तो यही है दूसरा नहीं है, रावजी व कोठारीजी पेश्तर मुन्शी वगैरह से मिले, उन लोगोंने कहा कि अभी साहिब से इनके निस्बत कुछ न कहो, थोड़े दिन के लिये दूसरा वकील भेज दो. फिर मैं साहिब को

समझाकर इन्हें बुलवालूंगा. रावजी और कोठारीजीने दर्बारमें आकर अर्ज़ किया तो हुक्म दिया कि अभी सादड़ी पंडित रघुनाथराव को लिख दो कि हाल वहां का काम अंजाम देता रहे.

सादड़ीके मुझे १५००) देने थे, जिसमें ११००) रुपये तो महता गोपालदासजी व ढींकड्या उदयरामजी की मारफ़त श्री जी हुज़ूरने बख़्शे और कोठारीजी केसरीसिंहजी के यहां दर्बार की पधरावनी हुई, उस दिन कोठारीजी की तरफ़ से महता गोपालदासजी, ढींकड्या उदयरामजी, नाथूलालजी को और मुझे कंठी व सरोपाव दिया, उस मोतियों की कंठी के २००) रुपये आये. बाक़ी रुपये घर से जमा कराकर रसीद लेली.

फिर टेलर साहिबने आबू लॉरेन्स साहिब को मेरी शिकायतें लिख भेजीं और उन्होंने दर्बारमें लिखा. मैं विक्रमी १९१७ के वैशाख में हुक्म के मुवाफ़िक़ आबू गया और सब हाल साहिब बहादुरको वाक़िफ़ किया, तो साहिबने फ़र्माया कि तुम्हारा कुछ कुसूर नहीं है, साहिबका मिज़ाज तेज है. तुम एक बार नीमच जाओ. मैं साहिब को चिट्ठी लिखता हूं. मैं उदयपुर आया और यह सब हाल दर्बार से अर्ज़ किया, तो हुक्म दिया कि कोठारीजी छावनी जाते हैं, इनके साथ एक बार और हो आ; यह साहिब को समझा देंगे; चुनाचे आषाढ़ शुक्ल १५ को मैं और कोठारीजी यहां से रवानह हुए, एक दिन एकलिंगजी की महा पूजा देखी, फिर छावनी गये, वहां कोठारीजी व सेठ चन्दनमलजीने साहिब से कहा, लेकिन् उन्होंने न माना तो मैंने केसूंदे आकर मक़ाम किया और दर्बार

में अर्ज़ लिख भेजी कि हुक्म हो सो करू हुक्म आया कि चला आओ. मैं यहां हाज़िर हुआ, दर्बारने हुक्म फर्माया कि मर्ज़ी हो तो आबूकी विकालत पर जा, मैंने अर्ज़ की कि वहां से तीन २ वर्ष में आना होता है, इस वास्ते यह तो ठीक नहीं.

विक्रमी १६१८ आश्विनमें कुरावड़ रावत ईश्वरीसिंहजी और सलूम्बर का हुमड मौखचन्दजी को आसींद रावत खूमानसिंहजी, महता गोपालदासजी व मेरी मारफत हुक्म फर्माया कि सलूम्बर रावत केसरीसिंहजी को उदयपुर लेआओ. अब मेरे शरीर का भरोसा नहीं है, अब मैं गोद लेकर राजका काम रावत केसरीसिंहजी को सुपुर्द करदूं. इसपर इन्होंने अर्ज़ की कि श्री दर्बार सलूम्बर पधारकर रावतजीको लावें. फिर गोद लेवें जब बेदले रावजी से सलाह पूछी तो रावजीने अर्ज़ की कि दर्बार को इख्तियार है, जैसी मर्ज़ी हो करें.

विक्रमी १६१८ आश्विन शुक्ला १० के दिन पहिले माला व जानवरों की पुस्तकसे शगुन लिये कि गोद आज ले या दीवालीको इस वक्त कोठारी केसरीसिंहजी, महता गोपालदासजी, ढींकड्या तेजरामजी, उदयरामजी, जोतिषी बिजयरामजी, मैं और महासाणी रतनलालजी वगैरह हाज़िर थे, शगुन उसी दिनके आये तब श्री परमेश्वरोंका चित्र मंगाकर, पुरोहित श्रीलालजीसे पूजन कराया और उसके सामने चिट्ठियें डाली तो चिट्ठी भी उसी दिनके लिये आई तीसरे पहर बेदले रावजीको बुलाकर फर्माया कि आज गोद लेनेकी सलाह है. उन्होंने कहा जो मर्ज़ी हुजूरकी इस वक्त

महाराज शंभुसिंहजी और सर्दार पासवान गोवर्द्धनविलास पांडेजीकी ओवरी के दर्वाज़े में बैठे थे, मुझे हुक्म दिया कि बाहिर देख भतीजजी (शंभुसिंहजी) हैं? दर्वाज़े पर देख आकर अर्ज़ की कि हैं. फिर मुझे व गोपालदासजी महता को फ़र्माया कि उन्हें गणेश चौपाड़ में लेजाकर पोशाक पहिना लाओ. हम लोग पोशाक पहिनाकर ले आये. कुंवरजी बापजी शंभुसिंहजीने श्री दर्बार के नज़राना किया. फिर बेदले राव बख्तसिंहजी, पारसोली राव लक्ष्मणसिंहजी, आसींद रावत खुमानसिंहजीने कुंवरजी बापजी के नज़राना किया. इस वक्त श्री जी हुज़ूरने बापजीको फ़र्माया कि बेदले रावजी के हुक्म में रहना, फिर और भी सर्दार पासवानोंने नज़रें कीं. फिर महाराजकुंवार घोड़े सवार होकर महलों पधारे, तमाम ठकुराणियों को मुजरा व नज़राना कर किश्ती सवार हो पीछे गोवर्द्धनविलास पधारे. यह सिर्फ़ पैंतीस दिन कुंवरपदे में रहे.

श्री दर्बार को दिवाली से बीमारी ज़ियादह बढ़ी और कार्तिक शुक्ला ४ के दिन चार लाख रुपया संकल्प किया. इस समय चालीस लाख रुपया खज़ानेमें नकद मौजूद था. चालीस लाख रुपये महलोंसे नावमें रख गोवर्द्धनविलास मंगाकर गणेशचौपाड़ में रखादिये और सुवर्ण का गोला छत्तीस हज़ार का दान करने के लिये बनवाकर पलंगके नीचे रखा लिया और पुरोहित श्रीलालजी को हुक्म दिया कि अन्तकाल की सर्व सामग्री यहां तय्यार रक्खो, वक्त पर कुछ लाना न पड़े और जब अख़ीर वक्त क़रीब देखो, गोशाला में मुझे लेजाना, पहर पहर के फ़ासिले से वैद्य

और हकीम नब्ज देखते थे. कार्त्तिक शुक्ला १२ को पहर रात गये बावाजी बल्लभदासजीने नाड़ी देखकर कोठारीजी से कहा कि नाडी तीन दिन की है, हम सबने अभी गौशाला में लेजाना मुनासिब न समझा, पहिले पासबानजी के लिये एक गरीब घोडा तजवीज करलिया और एक रूमाल मे गगारज, तुलसी व शालिग्रामजी बांधकर पास रखदिये कार्त्तिक शुक्ला १३ को पहर दिन चढ़े श्री दर्बारने हुक्म फर्माया कि अब गौशाला मे लेचलो हम लोगोने पलग उठाकर गौशाला मे पधराया, वहा पद्म. नाथजी को हुक्म फर्माया कि श्यामनाथ कहा करता था कि अन्त समय ओ ३ सों ३ कहना चाहिये. उन्होंने कहा बहुत ठीक है. फिर किसी कदर सन्निपात सा मालूम हुआ.

फिर बाबाजी रामरत्नजीने नब्ज देखकर कहा कि अब चौदह पहर की नाड़ी है कार्तिक शुक्ला १३ की रात को तक्लीफ जियादह रही, सेक वगैरह इलाज होता रहा चतुर्दशी के दिन हुक्म दिया कि भैस, पाड़ा यहां (गोवर्द्धनविलास) न रहे और बोलने न पावे, ये खराब समझे जाते हैं यहा तीन दिनसे बुरे शगुन होते थे, याने रात को उल्लू बोलता और तीन दिन तक गीदड़ भी बराबर बोलते रहे भाद्रपद में असोईका शगुन लेनेको, जो एक खास तरीके पर होता है, मुझे और गोपालजी ढींकड़्या को भेजा. ज्योतिषी विजयरामजी व महता गोपालदासजी भी साथ गये दो महीने के शगुन आये शगुन अच्छे नहीं थे

चतुर्दशी के दिन तीसरे पहर महासाणी रत्नलालजी को हुक्म दिया

कि स्वामीजी सदानन्दगिरजी को पूछो कि देहान्त समय मुहरों का बिस्तर हो या गंगा मिट्टी, गऊरज, गोबर वग़ैरहका. वह पूछ आये और गंगा मिट्टी, गऊरज वग़ैरह ही ठीक बतलाया. तब स्वामीजी के कहे मुवाफ़िक़ पुरोहित श्रीलालजीने नीचे बिछात गादी कराकर पलंग से नीचे पधराये. फिर हुक्म मूजिब श्रीलालजी स्वामीजी से पूछने गये कि श्री जी हुज़ूर गंगाजल के घड़े सिर पर डलवाना चाहते हैं, जिससे कि प्राण मुक्त होजावें, स्वामीजीने कहा कि गंगाजल तो उत्तम है, परन्तु इसमें आत्मघात होता है. फिर दर्बार ने कपिला गाय मंगाकर पूजन किया और परमेश्वरों का चित्र हर वक्त सामने लिये रहने को कहा और उसका भी पूजन किया.

दीया बत्तीके वक़्त बेदले रावजी वग़ैरह सर्दारों को रुख़्सत दी और महाराज काकाजी दलसिंहजीसे फ़र्माया कि राज करने में कई पाप लगते हैं, आपका मैं इह्सानमन्द हूं, श्री दर्बार इनकी निस्बत अक्सर यह फ़र्माया करते थे कि बन्दूक़ का निशाना लगाने में यह हमारे उस्ताद हैं. श्री दर्बार भी बन्दूक़ अच्छी लगाते थे, फिर इन्हें भी रुख़्सत दी. श्री दर्बार ने फ़र्माया कि जिसको कुछ मांगना हो मांगे. पानेरी गोपालजीने रुपये मांगे. ६०००) हज़ार बख़्शे गये बादहू मुझे भाषा रामचरित्र पढ़ सुनाने के लिये फ़र्माया. मैं सात घड़ी रात गये तक सुनाता रहा, फिर मैं हाथ मुंह धोने गया और पुरोहित पद्मनाथजी से कहगया, वे सुनाते रहे. मैं वापस आया और गादी के पास बैठगया. साहजी ज़ोरावरसिंहजी पास बैठे थे,

श्री दर्बार को कुछ नींद आई, पहरपर दो बजे आंख खुलगई, हुक्म दिया कि मुझे बिठाओ, सबने उठाकर बिठलाया अपने हाथोंही नाड़ी देखकर कहा कि सब दूर होजाओ पुरोहितजी वगैरहने सब सामग्री इकट्ठी कर आसन लगा रक्खा था श्री जी हुज़ूर को आसन पर बिठाकर अष्ट-महादान आदि कराये. बाद तीन हिचकियां आईं और देवलोक पधार-गये. इस वक्त शम्भुसिंहजी को गोवर्द्धनविलास से महलों पधराया, और कार्त्तिक शुक्ला १५ की सुबहको पासवानजी एजांबाई अगरखी, पाजामा पहिन दुपट्टा ओढ़ बाहिर पधारे आमींद रावतजीने अर्ज की कि अपने यहां पाजामेका दस्तूर नहीं है, घाघरा पहन लीजिये, फर्माया कि अब काहेका दस्तूर है पासवानजीने श्री दर्बारके पहिननेका सब जेवर पहिना और बहुतसे जेवरसे थालियां (तब्त) भरवालीं, कुछ वहां लुटाया, कुछ रास्ते में और वैकुंठीके आगे लुटाया गोवर्द्धनविलाससे कृष्णपोल होकर भटियानी चौहटेसे जगदीशके चौकमें आकर, थोड़ा जेवर श्री ठाकुरजीके भेट किया और थोड़ा अबामाता वगैरहके मन्दिरोंमें भेजा, फिर सेरे बाजार महा-सातियां पधारे, वहा दाह कर्म हुआ तमाम शहरके गली कूचोंमें हाहाकार मच रहा था. गद्दी विराजने की बाबत शामको रावत खुमानसिंहजीने कहा कि पन्द्रह दिन की देर हो तो रावत केसरीसिंहजी आजावें, लेकिन् उमराव सर्दारोंने न माना दस्तूर मूजिब दरीखाना हुआ टेलर साहिब दौरेपर थे, उन्होंने बेदले रावतजीको कागज लिख भेजा कि मैं आऊं तबतक शम्भुसिंह-जीको गोवर्द्धनविलासमें रखना रावतजीने कहा यह कभी नहीं हो सक्ता.

पासवानजी के सती होनेके सबब आसींद रावतजी को आसींद जाने की रुख़सत दी और महता गोपालदासजी को खैरोदे भेजा. यह वहांसे काठोरये चले गये.

※ जिल्द पहिली समाप्त ※

※ शेष हाल जिल्द दूसरी में छापा जायगा ※



॥ जीवन-चरित्र ॥

दूसरा हिस्सा.

सहीवाला अर्जुनसिंहजी,

मिनिस्टर महकमह खास व मेम्बर महद्राजसभा.

श्रीमान् महाराजाधिराज महीमहेन्द्र परम प्रतापी धीर वीर

महाराणाजी श्री १०८ श्री फतहसिंहजी

बहादुर जी. सी. एस. आई के अहदमें

बनकर तय्यार हुआ.

राज्य उदयपुर.

सम्वत् १९६७ विक्रमी

वैदिक-प्रेस, अजमेर में मुद्रित

(दूसरा हिस्सा)

मृगशिर में जेनरल जॉर्ज लारेन्स व कर्नेल टेलर साहिब उदयपुर आये, इन्होंके चौकमें आम दर्बार हुआ और नीचे लिखे मुआफ़िक़ पञ्च सर्दार मुकर्रर हुए:—

बेदले राव बख़्तसिंहजी	देवगढ़ रावत रणजीतसिंहजी.
गोगूंदे राज लालसिंहजी.	भींडर महाराज हमीरसिंहजी.
भैंसरोड़ रावत अमरसिंहजी	कोठारी केसरीसिंहजी
महता शेरसिंहजी.	पुरोहित श्यामनाथजी

इसके बाद मैंने अपने आसूणा गांवकी बाबत जो देवगढ वालोंकी तरफसे था और रावत रणजीतसिंहजीने ज़ब्त करलिया था, उसके लिये श्री दर्बार से अर्ज़ की और पञ्च सर्दारोंसे भी दर्ख्वास्त की तो सर्दारोंने तजवीज़ की कि यह गांव देवगढ़ वालोंका है, इन्हें दूसरा दिया जावे, चुनाचे चीकलवास गांव बख़्शा गया आसूणाके हासिलके ५०००) रुपये बाकी थे मगर मौका न देख सब्र किया.

विक्रमी १९१८ आषाढ़में गुमानसिंहजीका ब्याह हुआ, राजसे ५००) रुपये बख़्शे गये, बिनोली निकली और ५१) रुपयेका सिरोपाव अता हुआ, विवाहका सामान कुराबडकी हवेलीमें किया गया यह हवेली कदीमसे हमारे बुजुर्गोंकी बनाई हुई है, लेकिन् महाराणाजी श्री भीमसिंहजीके वक्त में खाली पड़ी थी सो महाराज भगवानदासजी मांगकर ग्हरे उनके मरने बाद कुराबड रावजीने खाली देख मांगी और उसमें डेरा किया परस्पर की मुहब्बत और मुलाहिज़ेके सबब यह हवेली उनके कब्ज़ेमें रहगई, जो

अब तक चली आती है. लेकिन् गुमानसिंहजीके व्याहसे डेढ़ महीने बाद पंडित रत्नेश्वरजीके वास्ते हवेली खाली करनी पड़ी थी; क्योंकि यह महाराणा शंभुसिंहजीको पढ़ानेके वास्ते मुक़र्रर हुए थे; इनके लिये महलोंके क़रीब मकानकी ज़रूरत थी.

श्री जी हुज़ूरने विक्रमी १९१८ चैत्रमें मुझे भैंसरौड़ रावत अमरसिंहजीको लेने भेजा, मैं भैंसरौड़ पहुंचा, उसके एक दिन पहिले रावतजी के पुरोहित रामचन्द्रजी गुज़र गये, उनके साथ उनकी औरत सती हुई. इस मौक़ेपर टेलर साहिब तो विलायत गये, थे और ईडन साहिब इनकी जगह आगये थे. उन्होंने यह सती होनेकी ख़बर सुन अमरसिंहजीको पंच सर्दारीसे दूर करदिया. इसलिये रावतजी उदयपुर न आये और मैं वापस आया. गोगूंदे राज भी उदयपुर नहीं आये, इनके मौतमद पंच सर्दारोंके शामिल रहते थे; अदालत दीवानीका काम महताजी अजीतसिंहजी करते थे. फिर यह तो शेरसिंहजीके बेटे सवाईसिंहजीके गोद रहकर पंच सर्दारोंमें होगये और दीवानीका काम इनके भानजे अभयचन्दजी करते रहे. जब मिस्लें बहुत चढ़गई, तब ईडन साहिबने हुक्म दिया कि दीवानी पर कोई दूसरा मुक़र्रर किया जावे, तब पंच सर्दारोंने मुझे व साहजी ज़ोरजीको बुलाकर कहा. मैंने इन्कार किया तो फ़र्माया कि करना पड़ेगा और यह कहकर हम दोनोंको नज़ाना करा दिया. मैं पन्द्रह दिन तो दीवानीमें गया और वहांका काम बेक़ाइदे देखकर श्री दर्बारसे अर्ज़ करदी, और जाना बन्द किया जोरावरसिंहजी चार महीने तक काम करते रहे.

फिर एजेण्ट साहिबने मौलवी निज़ामुद्दीनखांजीको दीवानी व फौजदारी पर मुकर्रर किया और कोतवाली, जेलखाना भी इन्हींके तहतमें कर दिया. विक्रमी १९१९ कार्त्तिकमें कोठारीजीको कैद कर एकलिंगजी भेज दिया. माघ मासमें डींकड़्या जगन्नाथजी गणेशलालजीकी बरात ईडर गई तो गणेशलालजीके पिता मुझे और पचोली पद्मनाथजीको साथ लेगये. विक्रमी १९२० श्रावण शुक्ल ३ के दिन पञ्च सर्दारीकी जगह अहालियान दर्बार मुकर्रर हुआ इसमें महता गोकुलचन्दजी व पंडित लक्ष्मणरावजी नियत हुए. इस वर्षमें मौलवी निज़ामुद्दीनजीकी बहुत शिकायतें हुईं और रय्यत कोठीपर पुकारू गई. शहरमें हड़ताल डाल नगरसेठ वगैरह सब लोग आबू पुकारू जानेके लिये गोगूंदा पहुंचे. तब सबने श्री दर्बारसे अर्ज़ की कि रय्यतको मनालेना बिहतर है, इनका आबू पुकारू जाना बिहतर नहीं तब सेठजी वगैरहको गोगूंदेसे वापस बुलाया, ये सब सहेलियोंकी वाड़ीमें ठहरे, शामको वहां श्री दर्बार तशरीफ लेगये और सबको शहरमें साथ ले पधारे तमाम दुकानें खुलगईं, साहिबने मौलवी से कहकर इस्तैफा पेश करादिया

विक्रमी १९२० में आषाढ़ शुक्ल १ के दिन दीवानीके काम पर मुझे मुकर्रर किया, एक दुशाला अता फर्माया और १००) रुपये माहवार तनख्वाह करदी और सदर फौजदारी पर राय मोहनलालजी मुकर्रर हुए. मैंने लाला रोशनलालजीको घरसे बुलाकर दीवानीमें नौकर कर लिया

एवेली में जगह तंग थी, इसलिये रोशनलालजी की राय से विक्रमी

१९२१ वैशाखमें जगह बनवाना शुरू किया, जो विक्रमी १९२७ तक जारी रहा और उम्दह मकान तय्यार होगया.

विक्रमी १९२२ में ईडन साहिबने महाराणाजी श्री शंभुसिंहजीको इख़्तियार दिया. लॉरेन्स साहिब पेन्शन ले विलायत गये और ईडन साहिब उनकी जगह रेज़िडेन्ट मुक़र्रर हुए और यहां एजेन्टीपर निक्सन साहिब आये.

विक्रमी १९२३ में मैंने अपनी छोटी लड़कीकी शादी महासाणी रतनलालजी के बड़े पुत्र मोतीलालजीके साथ की; जो आजकल मांडलगढ़के हाकिम हैं. इस शादीमें राजकी तरफ़से ५००) रुपये बख़्शाऊ मिले थे. इसी सालमें घाटीपर की जगह बर्सातमें गिरगई, वह रौशनलालजीकी मारफ़त दुमन्ज़िला बनवाई गई.

विक्रमी १४२४ आश्विनमें निक्सन साहिबने विलायत जाते वक्त कोठारीजीको प्रधान बनानेके लिये श्री दर्बारके नाम चिट्ठी भेजी, जिसपर पौष कृष्ण १ याने श्री जी हुज़ूरके जन्मोत्सवके दिन कोठारीजी प्रधान मुक़र्रर हुए और अहालियान दर्बार मौकूफ़ हुआ.

माघ मासमें सेन्ट्रलइन्डियासे डेली साहिबके आनेकी ख़बर मिली, निक्सन साहिब विलायतमें थे; मुझे नीमचकी छावनी भेजा, मैं वहां आठ दिन तक रहा, जब साहिब न आये तो तार दिया. गूनेकी छावनी से जवाब आया कि हम नहीं आवेंगे. इसी अर्सेमें मेरे पिता शिवशिंहजी का देहान्त हुआ. ख़बर आतेही तीजके दिन ४ बजे बग्गीकी डाकमें

रवाना हुआ, सो नकूम के पास विलड़ीकी चौकी पर आया, वहां से दूसरे दिन म्यानेकी डाकमें रवानह होकर पहर रात गये घर पर जा पहुचा क्रियाके लिये सर्कार से मुझे ७००) रुपये बख़्शाऊ मिले

चैत्रमे कर्नेल् कीटिंग साहिब रेज़िडेन्ट राजपूताना की कोटड़ेके रास्ते आने की खबर आई, मुझे पेश्वाई के लिये भेजा. चैत्री पूर्णिमा को मैं रखबदेवजी पहुचा, दर्शन किये, वहांसे खैरवाड़े गया, जहां मेकेन्जी साहिबने कहा कि साहिब आते थे, मगर थोडे दिनके लिये आना मुल्तवी रहा, तब मैं उदयपुर आया. फिर आषाढ़ मे आनेकी ख़बर आई, मैं कोटड़ेकी छावनी पहुचा. कीटिंग साहिब से मिला, मेस्सन साहिब भी वहां मौजूद थे, मैंने कीटिंग साहिब से अर्ज की कि आप गदरमें नीमच तशरीफ लाए थे, तब उन्होंने मुझे पहिचान कर कहा, हां! मैं फौज लेकर आया था और तुमको शोर साहिब के पास देखा था. फिर कोटड़ेसे कूंचकर खैरवाडे आये, बेदले रावजी पेश्वाई के वास्ते आये, हस्ब दस्तूर मुलाकात हुई फिर उदयपुर आये, तबीयत दुरुस्त न होने के बाइस श्री दर्बार ने पेश्वाई नहीं की, साहिब ने महलों आते वक्त बेदले रावजी से व मुझ से कहा कि दर्बार को दो चार कदम हमारे साम्हने आना चाहिये, श्री दर्बार से अर्ज किया और हुज़ूर ने मञ्ज़ूर फ़र्माया, साहिब महलों आये हस्ब दस्तूर मुलाकात हुई, साहिब ने पूछा कि कोठारीजी किसके कहने से प्रधान किये गये. श्री जी हुज़ूरने फ़र्माया कि निक्सन साहिब के लिखने और कहने से, पर उनकी चिट्ठी मौजूद है साहिब ने कहा

कि अगर वह होते तो उनसे जवाब लिया जाता, ख़ैर कोठारीजी कहां हैं उनको बुलवाइये. कोठारीजी बुलाये गये साहिब ने हुक्म दिया कि खड़े रहो, हम पूछें उसका जवाब दो, उन्होंने जो साहिबने पूछा उसका साफ़ साफ़ जवाब दिया; तब हुक्म दिया कि चौकी पर बैठ जाओ मैं रिपोर्ट करूंगा, इसके बाद साहिब दो तीन दिन रहकर आबू चले गये, फिर कर्नेल् हेचीसन साहिब एजेण्ट हुए.

विक्रमी १९२५ मृगशिर में कहतसाली के सबब ग़ल्ले के महसूल बाबत तमाम रियासतों से मोतमिद कर्नेल् कीटिंग साहिब ने अजमेर बुलाए थे. मुझे यहां से भेजा, कीटिंग साहिब के पास राय सोहनलाल-जी वकील थे, मैंने अजमेर जाकर साहिबसे मुलाक़ात की, साहिबने फ़र्माया मेरी मन्शा ग़ल्लेका महसूल कम करने की है, आप इसमें ज़िद न करना, मैंने अर्ज़ की कि यह कोई बड़ी बात नहीं जैसा आप चाहेंगे होगा, साहिबने कहा मैं तपास करूंगा, दूसरे दिन ग्यारह बजे इजलास क़रार पाया. मैं साहिबसे मिलने बाद मीरमुन्शीके पास गया. उन्होंने कहा कि साहिब की मन्शा है कि कलके इजलास में तमाम मोतमिदों को एलफाबेटिकल आर्डर से बिठावें याने जिनके नामका पहिला हर्फ़ A. B. C. D में पहिले आवे वह ऊपर रहे और पीछे आवें नीचे बैठें, मैंने कहा यह बेजा है,उन्होंने जवाब दिया यह तो विलायतका दस्तूर है और हमेशाके लिये नहीं है. बाद मैं और रायजी सेठजी फ़्रामजीके पास गये उनसे सब हाल कहा, उन्होंने जवाब दिया कि आप जयपुर, जोधपुर वग़ैरह मोतमिदोंसे सलाह मिलालो

तब नाइब वकील लाला रतनलालजीको मोतमिदोंके पास भेजा, लेकिन् उन लोगोंने कहा इसमें कोई हर्ज नहीं, साहिबकी मर्जी है वह ठीक है

इजलासके दिन मैंने ब्रुक साहिबको वाकिफ किया उन्होंने अपने दामाद वैली साहिबको भेजकर कीटिंग साहिबसे कहलाया कि गलफावेटिक ऑर्डरमें उदयपुरके मोतमिदोंकी हतक होती है, मगर साहिबने न माना, तब ब्रुक साहिबको भेजा. कीटिंग साहिबने कहा कि जयपुर, जोधपुरके मोतमिद आकर बैठ गये, ग्यारह बजनेका वक्त है, अब क्या होसक्ता है, अगर उनको मंजूर न हो तो न आवें, मैंने सोचा कि न जाने में बदनामी है जाकर जैसे बिठाया बैठ गया, इजलासमें जयपुरके एजेण्ट बेनन साहिब भी मौजूद थे, इत्तिफाक रायसे गल्लेका महसूल कम करनेका हुक्म हुआ. बेनिन साहिबने तमामको इतर पान बांटा और बरखास्त हुई, दूसरे दिन मैं और वकील राय सोहनलालजी साहिबसे मिलने गये, मैंने कहा कि अबतो आपने आजमालिया, लेकिन् ऊपर नीचे बिठलाये इस वास्ते श्री दर्बार मुझसे जुरूर नाराज होंगे, साहिबने कहा नहीं मैं कर्नेल् ईडन साहिब को चिट्ठी लिख देता हूं कि मैंने अपनी मर्जीसे ऐसा किया है और यह कहकर चिट्ठी लिखदी, मैंने कहा कि यह तो ठीक है, आप श्री दर्बारके नाम खरीता लिख दीजिये, साहिब ने इस मज़मूनका खरीता लिख दिया, मैं वहांसे पुष्कर स्नान कर उदयपुरको रवानह हुआ (१)

(१) लाला ज्वालासहायने वकाए राजपूतानाकी अव्वल जिल्द ३५८ सफहमें यहांतक साहबके मुंहसे गालीतक कहना मुन्दर्जिह लिखा है, महाराणा अर्जुनसिंह लिखना चाहिये था.

विक्रमी १९२६ आश्विन में क़हतसाली और टिड्डियोंके आनेके सबब ग़ल्लेको बहुत नुक्सान पहुंचा. इसलिये कीटिंग साहिबके आबूसे गढबोर होकर मेवाड़में आनेकी ख़बर आई. मैं बमूजिब हुक्म श्री जी हुज़ूर गढबोर होकर सात्याके मक़ाम पर पहुंचा. बागौर महाराज समर्थसिंहजी का इन्तिक़ाल होगया था और उनकी जगह उनके छोटेभाई महाराज शक्तिसिंहजीका हक़ था, मगर श्री दर्बारने इनके छोटे भाई महाराज सोहन-सिंहजीको बैठा दिया सात्याके मक़ाम पर साहिबने इस बारेमें बहुत हुज्जत की कि शक्तिसिंहजी को क्यों नहीं बिठाया. मैं बराबर जवाब देता रहा, साहिब बोले कि तुम दर्बारकी मर्ज़ीके मुआफ़िक़ बोलते हो; मैंने अर्ज़ की उनका निमक खाता हूं उनकी मर्ज़ी मुआफ़िक़ बोलना फ़र्ज़ है, इसपर साहिबने फ़र्माया कि ठीक है, लेकिन् दस बीस मुक़द्दमोंमें इन्साफ़ हो और एकआध में बेइन्साफ़ी होजाय तो निभ सक्ता है. मैंने साहिबको अच्छी तरह समझाकर मन्जूर कराया और कोठारीजी की तरफ़का शक भी रफा करादिया. साहिबने फ़र्माया कि सदरमें हमने रिपोर्ट की थी कि रईसकी उम्र कम है, बग़ैर प्रधान जवाब किससे लिया जावे अब मन्ज़ूरी होना चाहिये. वह रिपोर्ट मंज़ूर होकर आगई हैं, कोठारीजीको कह देना कि काम होशियारीसे करें ग़ाफ़िल न रहें. यह बात होने बाद मुझे वहींसे रुख़सत दी और कहा कि आपके साथ लवाज़िमा बहुत है, मुल्क में क़हतसाली है, यहींसे आप जाइये. मैं गढबोर हो चारभुजाके दर्शन कर उदयपुर आया और श्री दर्बारसे सब हाल अर्ज़ किया सुनकर खुश हुए,

इसी वर्ष के कार्त्तिक में कर्नेल् कीटिंग साहिब के मेवाड़ में आने की ख़बर आई, मुझे पेश्वाई के लिये हुक्म दिया, दीवाली के दिन मैं यहां से रवानह होकर अजमेर गया और साहिब से मुलाक़ात की, कार्त्तिक शुक्ला १५ को पुष्कर स्नान किया, दूसरे दिन अजमेर से कूच हुआ तो नसीराबाद, बांदन-वाड़ा, बरल हो रूपाहेली आये, बरल में ख़ल्लासियों ने राय सोहनलालजी से पूछा था कि डेरे कहां खड़े करें, उन्होंने कहा कि हमारे नाम तो रूपाहेली का हुक्म है, डेरे तुम्हारी ख़ुशी हो वहां खड़े करो, ख़ल्लासियों ने सड़क का बंगला जो गांव से कोस भर दूर था, छोड़ कर गांव के क़रीब डेरे जा लगाये थे, जब सुबह बरल से साहिब रवाना हुए तो राय सोहनलालजी व गिर्दावर मुहम्मदबख़्श उनके साथ थे, जब सड़क से गांव का रास्ता अलग हुआ तो साहिबने पूछा कि यह रास्ता कहां जाता है रायजीने अर्ज़ की कि रूपाहेली को, यह सुन साहिब चुप होगये मगर डेरेपर पहुंचकर घोड़ेपर से उतरतेही नायब श्यामलाल को बुलाकर हुक्म दिया कि एक गारद साथ लेजाकर मेवाड़के मोतमिद व वकील के डेरे यहांसे एक कोस हटवादो. सोहनलालजी व मुहम्मदबख़्श तो यह सुनतेही रौंद चले गये जो यहांसे एक कोस पर था मुझे यह मालूम न था, जब श्यामलाल ने आकर कहा मैंने इसका सबब पूछा, लेकिन उसे कुछ मालूम न था, मैं भी रौंद चलागया, दूसरे दिन कूच कर रायता आये साहिब ने इंजीनियर कर्लाग साहिब और दफ़्तर के लोगों से दर्याफ़्त किया कि रूपाहेली यहीं है, उन्होंने कहा हां बड़ी रूपाहेली यही है साहिब को यह शक होगया

था कि हमने वड़ी रूपाहेली का हुक्म दिया और यह छोटी में ले आये. यह शक दूर होने के बाद साहिब ने हमें तीन बजे बुलाया, रायजी ने कहा आधघंटा पहिले चलें चुनाचे हम ढाई बजे पहुंचे, देखते ही साहिब ने चपरासी भेजा कि अभी ढाई बजे हैं, हम दफ्तर के डेरों में जाने लगे कि फिर चपरासी भेज बुलाये सो हम शामियाने के नीचे चौकियों पर जा बैठे, साहिब फलॉंग साहिब से बातें कर रहे थे, जमादार वृन्दावन को भेजा कि उनको शामियाने के बीच में जहां हवा आती है बैठाओ, थोड़ी देर बाद साहिब बाहर आये, कहा हमसे भूल हुई हमने जाना था कि आप लोग अपनी सरबराह के फ़ायदे के वास्ते ले आये और सड़क देखने की गरज़ से आया था, मैंने जब दफ्तर से और फ़लॉंग साहिब से पूछा तो मालूम हुआ कि यही बड़ी रूपाहेली है. मैंने अर्ज़ की कि आप हाकिम हैं, आपकी ग़लती तो क्या है, मगर हमारी हतक अलबत्ता हुई कि तमाम लश्करमें मशहूर होगया कि मेवाड़ वालोंको लश्करसे बाहिर निकाल दिया. साहिब बोले किसीने नहीं सुना. मैंने अर्ज़ की कि अगर कुसूर है तो अव्वल आपके दफ्तरका है कि पर्चेमें बड़ी रूपाहेली लिखी है, जिससे सरबराह भी वहीं हुई. दूसरे खल्लासियोंका है कि आपसे बग़ैर दर्याफ्त किये डेरे खड़े कर दिये; इसके सिवा वकीलका कुसूर समझ लीजिये, मगर मेरा डेरा क्यों बाहर करवाया गया. साहिबने फ़र्माया कि मुआफ़ करो, मैंने अर्ज़ की कि आप हाकिम है, इसके बाद रुखसत दी और हम लोग डेरोंपर आये. इस रंजिशसे दिलने तो चाहा था कि वकील को साथ ले

उदयपुर चले, मगर सोच समझ कर वहीं चुप रहे.

रायला से मूसे डेरा हुआ, वहांसे शाहपुरे आये यहां मुझे बुलाकर साहिबने कहा कि मैं जहाजपुर जाता हूं आप उदयपुर जाइये मैंने जहाजपुर तक साथ चलनेकी अर्ज की तो फर्माया कि अब तक्लीफ न करो, मैं सीखका खरीता लिखवा कर डेरेपर भेज दूंगा, बाद इत्र पान देकर रुखसत दी

खरीता आतेही मैं उदयपुर को रवानह हुआ, यहां आकर खरीता श्री दर्बार के नज्र किया, कर्नेल् निक्सन साहिब उस वक्त मौजूद थे, जब सब हाल मैंने अर्ज किया तो साहिबने फर्माया कि आप वकीलको लेकर क्यों नहीं चले आये ? मैंने अर्ज की कि इरादा तो यही था, मगर आपके नाराज होनेका खौफ था

विक्रमी १९२६ के आश्विन मे महक्मह् खास मुकर्रर किया गया और काम महताजी पन्नालालजीके सुपुर्द् हुआ पौषमे साहिब रेजिडेण्ट के ठेबर याने जयसमन्द होकर उदयपुर आनेकी खबर मिली मे उनके इस्तकबाल के लिये सलूंबर भेजा गया. बारह दिन बाद साहिब बहादुर के साथ ठेबर होकर उदयपुर आया श्री दर्बारके दुखणाकी तक्लीफ थी पेश्वाई नहीं हुई फाल्गुन मे महताजी मुर्लीधरजी को और मुझको सालेड़े व धारताके फैसलेके वास्ते भेजा, फैसलाकर मीनारे गड़वा दिये

विक्रमी १९२७ भाद्रपद में कोठारी केसरीसिंहजी मौकूफ हुए और अहालियान फिर मुकर्रर हुआ; काम- महताजी गोकुलचन्दजी व पण्डित लक्ष्मणरावजीके सुपुर्द किया. महताजी गोकुलचन्दजीके मांडलगढ जाने

पर महता रुघनाथसिंहजी काम करते रहे.

कार्त्तिक में लार्ड मेयो अजमेर आये और दर्बार हुआ. जिसमें राजपूतानहके सब रईस बुलाये गये थे, श्री जी हुजूरने शुरू आश्विनमें मुझे भेज दिया कि पेश्वाई, सरबराह और डेरोंकी जगह वगैरहका बन्दोबस्त हो जावे. मेरे साथ एक हिसाब दफ्तरका कामदार हिसाब लिखनेके लिये और गोदावाला चतुर्भुज और नहरोंगी कामके लिये लाला ज्वालाप्रसादजी साथ थे, गुमानसिंहजी भी साथ आये थे, अजमेर पहुंचकर एजेण्ट गवर्नर जेनरल ब्रुक साहिबसे मिला. उन्होंने फ़र्माया कि मैं तो लार्ड साहिबकी पेश्वाईके लिये आगरे जाता हूं. आप यहांके कमिश्नर कप्तान रिप्टन साहिबसे मिलिये; वह सब बन्दोबस्त करादेंगे. चुनांचि मैं और वकील राय सोहनलालजी साहिब मौसूफसे मिले और उन्होंने तमाम सरबराह वगैरह का बन्दोबस्त करा दिया. डेरोंके लिये तारागढ़के नीचे पूर्व दिशा तजवीज़ हुई. श्रीदर्बारकी पेश्वाईके लिये कोटाके एजण्ट ब्रिटन साहिबके बेटेको तीन मन्जिल मेवाड़ की हद तक हुर्डाके क़रीब बरल गांव भेजा, इस मौकेपर दूसरे रईसों की पेश्वाई सिर्फ तीन २ मील हुई थी.

जब श्री जी हुजूर पधारे और नसीराबाद मुकाम हुआ तो मैंने वहां हाज़िर हो सब हाल अर्ज़ किया. दूसरे दिन वहांसे श्री दर्बार बग्घी सवार होकर रवानह हुए एक बग्घीमें महाराज सोहनसिंहजी, राणावत उदेसिंहजी, ढींकड़्या उदयरामजी और मैं था. सामने सड़कपर कोटे महारावजीकी सवारी

जानी देखकर श्री जी हुजूर ने हुक्म फरमाया कि तुम्हारी बग्घी आगे लेजाकर महारावजीसे अर्ज कर ठहरादो हम भी आते है सो दोनों साथही बैठ जावेंगे, हमने अपनी बग्घी आगे बढ़ाई यह देखकर महारावजी ने अपनी बग्घी को और भी तेज की और दूर निकलगये हमने अपनी बग्घी रोक ली, श्री दर्बार अजमेरसे इधर २ कोसपर मोखमपुरे पहुंचे, यहां डेरा खड़ा था, उसमें ठहर गये और मुझे अजमेर जाकर निक्सन साहिबको वाकिफ कर वापस आ हाजिर होनेके लिये हुक्म दिया. मैं हुक्म मूजिब निक्सन साहिबको वाकिफ कर वापस आया, चार बजे निक्सन साहिब व कमिश्नर रिप्टन साहिब वगैरह पेशवाईके लिये मोखमपुरे आये मुलाकातके बाद हाथियोंपर सवार हो, श्री जी हुजूरको डेरोंपर पहुंचा कर तमाम साहिब लोग अपने अपने बंगलेको गये.

लार्ड साहिबके आनेकी तारीख मुकर्रर हुई उस दिन तीन बजे तमाम रईस अजमेरसे दोकोस पी पी हाफिज जमालके चिल्लेके पास सड़क के दोनों तरफ इस तरह खड़े थे सड़कके पश्चिम तरफ श्री दर्बार कृष्णगढ़ महाराज पृथ्वीसिंहजी, अलवर महाराज शिवदानसिंहजी झालावाड़के राजराणा पृथ्वीसिंहजी और श्री दर्बार के हाथी के आगे केलावे ठाकुर वगैरह चार पांच सर्दार घोड़ोंपर सवार खड़े थे, खवासीमें आसींद रावत खुमानसिंहजी थे, दर्बारके हाथीके पीछे हथनीपर पेहले रावत बख्तसिंहजी और उनके पीछे मैं बैठा था पासवानी राव लछमणसिंहजी वगैरह सर्दार घोड़ और हाथियों पर सवार थे.

सड़क के बाईं तरफ़ पूर्व दिशामें जोधपुर महाराज तख़्तसिंहजी, कोटा महाराव शत्रुशालजी, बूंदी रावराजा रामसिंहजी और टौंकके नव्वाब हाफ़िज़ इब्राहीम अलीखांजी मौजूद थे.

जोधपुर महाराजने पहिले श्री दर्बारसे मुजरा किया. दर्बारकी निगाह उधर न थी, बेदले रावजी ने अर्ज़ की महाराजने फिर मुजरा किया, श्री दर्बारने भी मुजरा किया और दुतर्फ़ी चोबदार मिजाज की खुशी पूछनेके लिये भेजे गये.

फिर लार्ड साहिब आये; ब्रुक साहिब साथ थे, उन्होंने अर्ज़ की कि यह महाराणा साहिब हैं लार्ड साहिब कुर्सीके हौदेमें थे, खड़े हुए और घुटने तक टोपी उतारी, श्री दर्बारने भी खड़े होकर मुजरा किया, फिर महाराजा जोधपुर की तरफ़ देख कमर तक टोपी उतारी, महाराजाने खड़े होकर मुजरा किया, बाद दूसरे रईसोंसे दस्तूर के मुवाफ़िक़ टोपी उतार कर सलाम लेते हुए रवानह हुए. लार्ड साहिब के पीछे रेज़िडेन्ट ब्रुक साहिबका हाथी था, इन के पास दाहिनी तरफ़ श्री दर्बारका और बाईं तरफ़ जोधपुर महाराजका हाथी था, इनके बाद मेवाड़ एजेन्ट निक्सन साहिब, फिर कोटा, बूंदी वगैरहके एजेन्ट और रईसोंके हाथी थे. इस जुलूसके साथ लार्ड साहिब अपने डेरोंपर रौनक अफ़रोज़ हुए और रईसोंको रुख़सत दी, दो घड़ी रात गये लार्ड साहिबके सेक्रेटरी और निक्सन साहिब वगैरह लार्ड साहिब की तरफ़से तमाम रईसोंके डेरोंपर मिज़ाज़ की खुशी पूछने को गये.

दूसरे दिन दर्बार हुआ, एक एक रईसके साथ नौ नौ सर्दार गये, लाट साहिब चारबजे वहां तशरीफ लाये उमराव सर्दार खास खास पासबान कुर्सियों पर बैठे थे, सबने नज़ाना किया शौकिया बातोंके बाद इत्र पान हुआ और लार्ड साहिब अपने खेमेगाहको तशरीफ़ लेगए, इस बड़े दर्बारमें हमारे महाराणा साहिब बहादुरकी सबसे अव्वल नशिस्त थी जोधपुर महाराजने दूसरे नम्बर की नशिस्त चाही थी, वह न मिली, बल्कि निक्सन साहिबके नीचे बिठलाते थे, इसलिये वे दर्बारमें नहीं आये, इसपर लार्ड साहिब नाराज हुए, पहिले सुननेमें आया था कि महाराजा ग्वालियर, जावद और नीमचका ज़िला सर्कारके हाथ बेचना चाहते हैं, श्री जी हुजूरने ब्रुक साहिब की मारफत लार्ड साहिबसे कहलाया कि ये ज़िले क़दीमसे हमारे है, लड़ाई झगड़ेके ज़मानेमें कब्जेसे निकल गये हैं. अब हमको वापस मिल जावें और वाजिब रुपये ठहर जायँ कि तो जीम्र के मुवाफिक हम रुपये पहुचाते रहेंगे इसपर लार्ड साहिबने इकरार किया कि मैं तजवीज़ करूगा.

लार्ड साहिब के अजमेर रवानह होनेके बाद महाराज जोधपुर पहर रात गये जरीदा बग्घीमे बैठकर श्री दर्बारके डेरोंपर आये और खानगी मुलाकातके बाद श्री दर्बार को बग्घी सवार करा अपने डेरोंपर पधराए वहां भी खानगी तौरपर रस्मि मुलाकात अदा हुई और शराबकी मनुहार वगैरह होकर श्री दर्बार वापस पधारे. दूसरे दिन सुबह मैं ब-मूजिब हुक्म निक्सन साहिब को महाराजा जोधपुरके आने जाने का

हाल वाक़िफ़ करनेको गया, उस वक्त एजेंटीके वकील मामाजी अखेचन्दजी मौजूद थे. साहिबने फ़र्माया कि आप दोनों दर्बारमें जाकर मेरी तरफ़से अर्ज़ करो कि बूंदी वाले बेटी देनेको तैयार हैं, आपसमें सुलह कर लेना अच्छा है और पाटन वालोंको गद्दीपर लेबैठें. तब मैंने अर्ज़ की कि बूंदीके बारेमें तो श्री दर्बार हर्गिज़ मंज़ूर नहीं करेंगे और पाटनके बाबत अगर आप दर्बारसे कहेंगे तो शायद मंज़ूर फ़र्मा लेंगे.

कृष्णगढ़ महाराज पृथ्वीसिंहजी खानगी तौरपर दर्बार के डेरे पधारे. खाना वहीं खाया और श्री दर्बार भी खानगी मुलाक़ातके लिये उनके यहां पधारे थे. कार्त्तिक शुक्ल १३ को गुमानसिंहजी की बीमारीके सबब मैं रुख़सत मांगकर उदयपुर चला आया. अजमेरमें मेरी ख़िदमतसे श्री दर्बार हर तरह खुश रहे.

अजमेरसे लौटते वक्त नसीराबादके मुक़ाम पर निक्सन साहिबके कहने से पाटनके राजरणा पृथ्वीसिंहजी को गद्दीपर बैठक दी. बाद चित्तौड़ होकर उदयपुर पधारे. अजमेरमें जब श्री दर्बार लार्ड साहिब के डेरेपर पधारे थे, उस वक्त शाहपुरा राजाजी ने जो वहां पहिलेसे बैठे हुए थे, दर्बार की ताज़ीम नहीं की, श्री दर्बारने नाराज़ होकर अजमेर हीसे काछोला पट्टे की ज़ब्तीपर मेरे भाई बख्तावरसिंहजी को भेज दिया था, जहां आषाढ़ी पूनम तक खालसा रहा.

इसी आषाढ़में श्री दर्बारने अहालियान का महकमह तोड़ दिया और आठ महकमें क़ाइम कर मालके महकमह क़ोठारी केसरीसिंहजी,

हिसाब दफ्तर पर मह्ता जालमसिंह्जी को, दीवानी पर मुझे, फौजदारी पर राय सोह्नलालजी, देवसथान पर कोठारी छगनलालजी, ज़ेवर के कारखाने पर साह्जी जोरावरसिंह्जी और परचूनी काम के मह्कमे पर ढींकड्या उदयरामजी को मुकर्रर फर्माया और विक्रमी १९२८ भाद्रपद में आबूकी विकालत पर मेरे भाई बख्तावरसिंह्जी को भेजा.

कार्त्तिक मे ब्रुक साहिब श्री दर्बारको तमगा देने के वास्ते उदयपुर आये, मैं इनकी पेश्वाईके लिये अजमेर भेजा गया था, तमगे के दर्बारके दिन सुबह्को कर्नल् ब्रुक साहिब ने यहांके एजेंट निक्सन साहिबको हुक्म दिया कि महाराणा साहिब सिंहासन पर बैठते हैं सो न बैठे. और ऊपर जो छोटा शामियानह खड़ा होता है वह भी न हो और शाह्पुरे व बनेड़े वाले साम्हने न बैठे. निक्सन साहिब श्री दर्बारके पास महलों आये और ऊपर लिखी बातें कह्गये, श्री जी हुजूर ने मुझे बुलाकर हुक्म फ़र्माया कि खुद एजेण्ट साहिब इन तीनों बातोंके वास्ते मना करगये हैं लेकिन् कोई तजवीज होसके तो करो, मैंने अर्ज की कि मैं ब्रुक साहिब से मिलूं और जैसी नजर मे आवे कर आऊं, हुजूर ने फर्माया अच्छा तब मैं कोठी पर कर्नल् ब्रुक साहिबके पास गया. और अर्ज की कि निक्सन साहिब आपके हुक्म मूजिब तीन बातें श्री दर्बार से अर्ज कर आये हैं, साहिब ने कहा हां हमने हुक्म दिया है. मैंने अर्ज की कि आप बहुत मुद्दत से रियासतों में हैं, तमाम कानून व क़ाइदोंसे अच्छी तरह वाकिफ हैं फिर न मालूम यह क्योंकर दिया गया

शामियानह के नीचे सिर्फ दर्बार ही का सिंहासन नहीं रहता, बल्कि आपकी कुर्सी भी उसी के नीचे रहती है. फिर क्या हर्ज है ? शाहपुरे और बनेड़े वाले किसी के नीचे नहीं बैठते, इसलिये उनके वास्ते साम्हने की बैठक मुक़र्रर है. क्योंकि बत्तीस सर्दार बैठते हैं, बांईं तरफ़ उमरावों के कुँवरों की नशिस्त है. और सिंहासन श्री महाराणा स्वरूपसिंहजी के वक़्त से रक्खा जाता है अब कैसे मौक़ूफ़ होसके. आप दाना हैं और रियासत की बहितरी चाहनेवाले हैं, फिर ऐसा हुक्म क्योंकर फ़र्माते हैं, साहिब ने कहा अच्छा शामियानह मामूली रहे, बनेड़ा व शाहपुरा बीच में नहीं ज़रा हटकर बैठें और सिंहासन हमारी कुर्सी से ऊंचा रहता है और मुलम्मे का है. मैंने अर्ज़ की कि आप के लिये भी कुर्सी सिंहासनके बराबर रखवादी जायगी तब यह बात भी साहिबने मंजूर करली.

यह सब हाल श्री दर्बार से मैंने अर्ज़ किया सुनकर बहुत खुश हुए. उस दिन चांदी की कुर्सी रक्खी गई, जब से चांदी की कुर्सी रक्खी जाती है.

इसी संवत् के पौष में श्री जी हुजूर ने मुझे हुक्म दिया कि जब तक जावद, नीमच का काम बाक़ी है, ब्रुक साहिब के पास रहो. पौष कृष्ण ६ को यहां से रवाना होकर देवली की छावनी साहिब के लश्कर में जा पहुंचा. साहिब से मुलाक़ात हुई फिर यहां से कूंच हुआ, जयपुर के इलाक़े नासरदे डेरे हुए, मैं भी देवली से राजमहल देखकर नासरदे आया. यहांसे डिग्गी, मालपुरे और सांगानेर होकर जयपुर पहुंचे. डिग्गी में ठाकुरजी कल्याणरायजी के दर्शन किये. जयपुरमें माजीके बागके पास डेरे हुए,

आठ मुकाम रहे, शहर गलताजी, वगैरह मुकाम देखे फिर प्रतापेश्वरजी और गोविन्ददेवजी के दर्शन किये माः बख्तावरसिंहजी भी साहिब के साथ थे. मेरा जियादह दिन तक साहिब के हमराह रहना मुनासिब समझ सदर दीवानी के काम पर राय सोहनलालजी को कायम मुकाम मुकर्रर फर्माया.

फिर यह खबर सुनने में आई कि लार्ड मेयो साहिब जजीरए एण्डमन (कालेपानी) में एक कैदी के छुरी मार देने से मर गये. यह सुनते ही कर्नल् ब्रुक साहिब ऊटगाडीमें सवार हो आगरे को रवाना हुए और मुझे व लशकर को रुखसत दी. हम लोग बगरू, चादर, सीदरी, किशनगढ़ होकर अजमेर आये, साहिब आगरे से रेल में बैठकर कलकत्ते पहुंचे जब ब्रुक साहिब वापस अजमेर आये तो फर्माया कि लार्ट साहिब के मारे जाने से अब इस मुआमले में देर है, आप उदयपुर जाइये, मैं फिर बुलालूगा तबमैं फाल्गुन शुक्ल १९ के दिन उदयपुर आगया दवात-पूजन के दिन श्री दर्बारने बेदले रावजी व महताजी पन्नालालजी की मारफत कहलाया कि मर्जी हो तो दीवानी का काम करे वर्ने अपीलका. अर्ज किया कि दीवानी का काम तो आठ वर्ष तक कर चुका हूं, अपील का अब मेरे सुपुर्द होना ठीक है, लेकिन् उसके लिये एक महकमह मुकर्रर होजाना चाहिये. पचौली अखेनाथजी व ढींकड्या उदयरामजी, मालके महकमेमें बैठकर काम करते हैं उस तरह पर मुझ से न होगा. हुक्म हुआ कि महकमह मुकर्रर होजावेगा इसी अर्से में गणगौर का त्यौहार

आगया और लच्च चंडी का काम भी शुरू था. वैशाख में धींगा गणगौर के दिन श्री दर्बार ने हुक्म फ़र्माया कि अपील का महकमह फिर मुक़र्रर कर देंगे. एक वार जावद और नीमच के मुआमले की कोशिश के लिये आबू जाना चाहिये. इसलिये मैं वैशाख शुक्ल ८ को कूच कर आबू देसूरी के रास्ते होकर गया. इन्हीं दिनों में वीकानेर के महाराज सर्दारसिंहजी का देहान्त होगया, उन्होंने अपने जीतेजी दो लड़कों को पास रक्खा था. इनमें से एक को गोद लेने का विचार था. इन लड़कों में एक तो महाराणा शम्भुसिंहजी के मामा महाराज लालसिंहजी के बेटे डूंगरसिंहजी और दूसरे खड्गसिंहजी के बेटे हरीसिंहजी थे. रिश्तेदारी में दोनों बराबर थे. वीकानेर महाराज के दो राणियां एक भटियाणीजी, दूसरी पुंगलानीजी थीं. महाराजा के देवलोक होने पर पण्डित मनफूल व एजेंट ब्रिटन साहिब और आधे सर्दार, मुत्सद्दी व एक ठकुरानी हरीसिंहजी की गद्दीनशीनी चाहते थे और दूसरी ठकुरानी व सर्दार मुत्सद्दी लालसिंहजी के बेटे डूंगरसिंहजी को चाहते थे.

इस मुआमले में मेरे नाम श्री दर्बार का खास दस्तख़ती रुक्क़ा आया कि साहिब को अच्छी तरह समझाकर डूंगरसिंहजी के लिये रिपोर्ट करानी चाहिये और मंजूरी मंगानी चाहिये. इसमें तुम्हारी दोनों रियासतों में पूरी चाकरी मालूम होगी और चुनाचे हुक्म मूजिब ब्रुक साहिब को खूब वाकिफ़ कर दिया. साहिब ने उदयपुर की वातपर निगह रख इस बात को वाजिबी समझकर लार्ड साहिब के नाम रिपोर्ट करदी. और ब्रुक

साहिब की कोशिश से लार्ड साहिब ने रिपोर्ट मजूर फर्माकर डूगरसिंहजी के वास्ते मजूरी भेजदी. दर्बार का ख्वास रुक्का मेरे पास मौजूद है, बहूजी साहिब बीकानेरीजी ने धवाजी बदनजी की मारफत इस मुआमले में कोशिश करने के वास्ते लिखाया और लालसिंहजी की तरफ से भी धाय-भाई रघुलालजी के मारफत लिखा पढ़ी होती रही उदयपुर से आबू तक पैदलो की डाक बिठादी गई थी. जब श्रावण में मजूरी आगई और यह खुशखबरी मुझे बुलाकर ब्रुक साहिब ने सुनाई मुझे बड़ी खुशी हुई और उनका शुक्रिया अदा किया गया और मैंने उदयपुर तार दिया, जो महताजी पन्नालालजी ने श्री दर्बार और बहूजी साहिब को मालूम किया. उनको मोतियों की कंठी अता हुई.

लार्ड साहिब ने मजूरी के साथ ही ब्रुक साहिब को लिख भेजा था कि बीकानेर जाकर गद्दीनशीनी का दस्तूर अदा कर देना. इसलिये ब्रुक साहिब का दौरा आश्विन में करार पाया और ब्रुक साहिब के नाम उदयपुर व बीकानेर से शुक्रिये के ख़त आये और उदयपुर से लिखा आया कि अगर साहिब आश्विन में दौरा करेंगे तो डूगरसिंहजी इतने दिन तक खाली बैठे रहेंगे और त्यौहार के दिन हैं, इनमें रस्म दस्तूर रस्मियात अदा न होंगी तो अच्छा न दीखेगा. इस वास्ते मिहर्बानी कर रियासतों के दस्तूर मूजिब गद्दीनशीनी का दस्तूर कर देने का हुक्म होना चाहिये. फिर जब साहिब वहा जायें तब सरकारी दस्तूर अदा करें.

इस बाबत भी साहिब को समझा कर बीकानेर के एजेण्ट ब्रिटन

साहिब के नाम चिट्ठी लिखा भेजी कि रियासत के दस्तूर के मुवाफ़िक़ गद्दीनशीनी करादो, फिर मैं आऊंगा तब सर्कारी दस्तूर अदा कर दूंगा. ब्रिटन साहिब ने ब्रुक साहिब के लिखे मुवाफ़िक़ महाराज डूंगरसिंहजी को गद्दीनशीन कर दिया. बीकानेर महाराज ने इसकी शुक्रगुजारी में श्री दर्बार के नाम लिख भेजा कि यह राज्य आपका दिया हुआ है, इस काम के खतम होने तक मुझे आबूपर चार महीने हो गये थे, ब्रुक साहिब ने कहा कि जावद, नीमच के काम में अभी बहुत देर है, अभी जाओ. तब मैं विक्रमी १९२६ भाद्रपद शुक्ल १२ को उदयपुर आगया. श्री दर्बार बहुत खुश हुए.

आश्विन कृष्णा ७ के दिन अपील का महकमह मुकर्रर हुआ, अमला भरती कर, काम मेरी निगरानी से होना शुरू हुआ. नावका कारख़ाना इन्हीं दिनों में मेरे सुपुर्द कर दिया. मगशिर कृष्णा ऽऽ के दिन सदर फ़ौजदारी का काम, जो भींडर कुंवर मदनसिंहजी करते थे, मेरे सुपुर्द हुआ, पौष कृष्णा १ के दिन श्री जी हुज़ूर का जन्मोत्सव था, उस दिन बेदलेरावजी की मारफ़त बीकानेर की चाकरी के इनाममें मोतियों की कंठी, शिरोपाव और एक हज़ार की रेख का गांव दूधा अता फ़र्माया. गांवकी सनद का परवाना जागीर के हाल में नक़ल किया गया है. सदर फ़ौजदारी का काम मैंने चार महीने तक किया. बाद कर्नैल् निक्सन साहिब के विलायत जाने पर जब कर्नैल् हेचिसन साहिब एजेण्ट हुए तो उनसे मुन्शी सामिन अलीखांजी ने अर्ज़ की कि एक बार फ़ौज़दारी का काम फिर मेरे सपुर्द होजावे क्योंकि

पहिले मेरी बहुत हतक हुई है साहिब ने श्री दर्बार से अर्ज की कि फौजदारी का काम तो अच्छा चलता है मगर मुन्शी अर्ज़ोंऊ है, पहिले मौकूफ किये जाने मे इसकी हतक हुई है बूढ़ा आदमी है, एक बार उसे फिर मुकर्रर कर दीजिये.

श्री दर्बार ने मुझे फर्माया कि काम तुमने ठीक किया, लेकिन् इसपर साहिब कहते है सो मुन्शी को चार्ज दो, हस्ब हुक्म चैत शुक्ल १५ को चार्ज दे दिया, इन्हीं दिनो में ब्रुक साहिब पेनशन लेकर विलायत चले गये और आबू पर जयपुर एजेण्ट पेली साहिब मुकर्रर हुए. विक्रमी १९३० फाल्गुन में इनके उदयपुर आने की खबर आई कि हुर्डे के रास्ते आवेंगे, मैं पेश्वाई के लिये बागौर गया, वहा सुना कि साहिब इधर से न आवेगे तो मैं भी भगवानपुरे हो देवगढ़ पहुचा और वहा से लाला ज्वालाप्रसादजीको खबर लेने के लिये टाडगढ़ भेजा वहांसे खबर मिली कि साहिब लौट गये, मुझे देसूरी की तरफ होकर आने का ख्याल हुआ, इसलिये मैं दिवेर होकर जीलवाड़े चला गया, आठवे दिन साहिब आये, मुलाकात हुई, बहुत खुशी से पेश आये, यहां से राजनगर पहुचे, वहा बेदले रावजी पेश्वाई के लिये मौजूद थे, वहा से डाक मे बैठकर उदयपुर आगये बेदले रावजी और मै व भाई बख्तावरसिंहजी भी साथ ही डाक मे यहां आये, हस्ब दस्तूर मुलाकात हुई, उदयपुर मे दो दिन रहकर वापिस डाक मे राजनगर हो जीलवाड़े होकर देसूरी पहुचे देसूरी की नाल मे गणेश बड़ तक साथ रहा, बाद मुझे साहिब ने रुखसत दी, मै उदयपुर चला आया.

कर्नेल हेचिसन साहिब विलायत गये, उनकी जगह मेजर ब्राड फोर्ड साहिब आये. जो चार महीने रहकर कलकत्ते चले गये. और मुरार की छावनी से कर्नेल राइट साहिब प्रथम आषाढ़ में एजेंटी पर आये. आषाढ़ शुक्ला १३ के दिन बाबाजी साहिब गजसिंहजी और मैं फ़ौजके साथ गोडवाड़ के मीणों का जो मेवाड़ की सरहद में ग़ारतगरी करते थे; बन्दोबस्त करने को कैलवाड़े गये. थानेबन्दी कर बन्दोबस्त कर दिया. बाबाजी साहिब १५ दिन पहिले उदयपुर तशरीफ़ ले आये और मैं विक्रमी १९३१ भाद्रपद शुक्ल २ को उदयपुर आया.

विक्रमी १९३१ में भाद्रपद कृष्ण १३ के दिन श्री दर्बार ने महताजी पन्नालालजी को क़ैद कर दिया. और अपील का महकमह मौलवी अब्दुर्रहमानख़ांजी के सुपुर्द होगया. जब मैं कैलवाड़े से आया तो दर्बार ने फ़र्माया कि बेदले रावजी आजावें, तब तुम महकमह ख़ास का नज़राना करलेना. तब यह ख़याल किया कि अपील पर तो मौलवीजी मुक़र्रर होगये हैं और महताजी रोकण में हैं. इस मौके पर इन्कार करना मुनासिब नहीं है. मैंने अर्ज़ की जो हुक्म हो बजा लाऊं, शाम को बेदले रावजी आये उनको श्री जी हुज़ूर ने हुक्म फ़र्माया कि इनको नज़राना करादो, रावजी ने कहा कि गोकुलचन्दजी आजावें तो इनका और उनका साथ ही नज़राना हो जावेगा. फिर भाद्रपद शुक्ल १५ को गोकुलचन्दजी के आनेपर महकमह ख़ास का नज़राना हुआ, दर्बार की तबीअत इन दिनों अलील थी. फ़र्माया कि ज़ेवर सिरोपाव आज लोगे या तबीअत दुरुस्त

होने पर अर्ज की कि श्री एकलिंगजी जल्द सेहत बख्शे और गुस्ल हो जावे तब बख्शा जावे. मगर परमेश्वर को कुछ और ही मन्जूर था, बीमारी दम बदम बढ़ती चली गई यहां तक कि आश्विन कृष्ण १२ के दिन पहरेक रात गये देवलोक पधार गये, दूसरे दिन दाहकर्म के बाद सब सर्दार दरीखाने में जमा हुए, कर्नल् राइट साहिब भी शम्भुनिवास में आ गये थे सर्दारों ने मुझ से कहा कि साहिब से जाकर पूछो, मैंने शम्भुनिवास जाकर दर्यापत किया तो कहा कि पहिले जनाने में पूछना चाहिये, बाद सब सर्दार हमारे पास आवें तब तमाम सर्दारोंने जनानी ड्योढ़ी पर जाकर बड़ीजी साहिब बीकानेरीजी से अर्ज कराई तो बड़ीजी साहिब, माजी साहिब मेरतणीजी और दोनों महाराणियों ने ढींकड़या तेजरामजी की बहू व हीराबाई के हाथ हुक्म भेजा कि सज्जनसिंहजी को गद्दी पर बिठाओ, सब सर्दारों ने इस बात को कुबूल किया. और शम्भुनिवास जाकर साहिब से कहा कि जनाने में से सज्जनसिंहजी के वास्ते हुक्म है. साहिब ने पूछा कि आप सब को मन्जूर है ? तमाम सर्दारों ने जवाब दिया कि हमको भी यही मन्जूर है साहिब बोले कि रेजिडेन्ट पोली साहिब जयपुर हैं, मैं रिपोर्ट कर उनसे मन्जूरी मगालूं तब मैंने व रावजी बेदला ने साहिब से खेंचकर अर्ज की कि जनाने में सब सज्जनसिंहजी को कुबूल करते हैं और उन्हीं को तमाम उमराव सर्दारों ने कुबूल किया है, इसलिये गद्दीनशीनी के दस्तूर के लिये तो अभी इजाजत दीजिये, फिर आप रिपोर्ट कर मन्जूरी मगालेवें, साहिब ने कहा कि मैं जल्द ही रिपोर्ट

कर मन्जूरी मंगा लेता हूं. हमने जवाब दिया कि हमारे यहां गद्दी खाली नहीं रहती, इसकी आप जल्दी इजाज़त देवें; तब हुक्म दिया अच्छा दस्तूर मुआफ़िक़ करो, तब तमाम सर्दारों ने दरीख़ाने में आकर मुझ से कहा कि ख़ुश महलों से (कुंवर) सज्जनसिंहजी साहिब को महलों में लेजा पोशाक करा दरीख़ाने में पधराओ, मुझसे पहिले धवा मदनजी और रघु-लालजी के अर्ज़ करने पर ख़ुश महल के दर्वाज़े तक पधारे कि मैं भी जा पहुंचा और अर्ज़ की तब पांडेजी की ओवरी कुर्सी पर विराज पोशाक की, उस वक़्त बाबाजी शक्तिसिंहजी व कुरावड़ रावत रत्नसिंहजी भी वहीं आगये थे. पोशाक कर श्री जी हुज़ूर दरीख़ाने में पधार कर गद्दी पर विराजे, हाथी, घोड़े नज़र हुए, हटनाल खोलने और नौबत बजाने का हुक्म हुआ; हस्ब दस्तूर बेदले रावजी ने ज़ेवर पहिनाया. फिर दरी-ख़ाना बर्ख़ास्त हुआ. श्री जी हुज़ूर जनाने में बहूजी साहिब व माजी साहिब के पास मुजरा करने पधारे.

दूसरे दिन साहिब एजेण्ट ने फ़र्माया कि अब रियासत का काम कौन्सिल से होना चाहिये. बाज़े सर्दारों ने कहा कि कौन्सिल से काम में सुस्ती होगी. साहिब ने कहा, हम ख़ुद काम करेंगे. और गोकुल-चन्दजी व अर्जुनसिंहजी दोनों मिनिस्टरों से काम लेंगे.

गद्दीनशीनी का मुहूर्त मृगशिर शुक्ल २ को हुआ, उस वक़्त महताजी गोकुलचन्दजी के तिलक कर मोतियों के अक्षत (याने छोटे मोती) चढ़ाये गये और सरोपाव, मोतियों की कंठी, सिरपेंच और पहुंचे इनायत हुईं

और सोने की दवात सुपुर्द की गई बाद मेरे तिलक कर मोतियों के अक्षत लगाये, सरोपाव, मोतियों की कंठी और सिर्पेच अता हुआ बाद हुक्म हुआ कि इन दोनों को हाथियों पर चढ़ाकर इन की हवेलियों पर पहुंचा दो. उस वक्त गोकुलचन्दजी ने मुझ से कहा कि दर्बार की सुदृष्टि से हाथी पर तो हमेशह ही चढ़ते हैं, हवेली जाने और आने में देर होगी, चुनाचे वहीं हाज़िर रहे.

विक्रमी १९३१ माघ में सर लुईस पेली साहिब विलायत गये और राजपूताना की एजेण्टी पर मिस्टर लायल साहिब, जो फिर (सर एल्फर्ड लायल) लेफ्टिनेन्ट गवर्नर अजलाए मगरबी शिमाली होगये थे, मुकर्रर हुए. यह अजमेर से उदयपुर आते थे, मगर सर्कारी काम के सबब, चित्तौड़ तक आकर कर्नेल राईट साहिब को वहीं बुलाया और हुक्म दिया, के काम ठीक चलता है, लेकिन कौन्सिल मुकर्रर करना चाहिये राइट साहिब ने उदयपुर आकर हस्ब ज़ेल कौन्सिल में मेम्बर मुकर्रर किये और कोठी पर काम होने लगा

बेदले राव बख्तसिंहजी.	शिवरती बाबाजी गजसिंहजी
कानरवे राणावत उदयसिंहजी.	भाणेज मोतीसिंहजी.
महताजी गोकुलचन्दजी	सहीवाला अर्जुनसिंह.

इस के बाद श्री दर्बार की तालीम के लिये दीवान जानी बिहारीलालजी वकील भरतपुर के ७००) माहावार मुकर्रर कर भेजा इन के साथ जानी मुकुन्दलालजी आये और हिन्दी अंग्रेजी और फ़ार्सी पढ़ाना शुरू हुआ.

रियासत में इन दिनों चार हुक्म चलते थे, याने श्री दर्बार का एजेण्ट साहिब का, बहुजी साहिब बीकानेरीजी का और बावाजी साहिब शक्तिसिंहजी का ताहम काम बखूबी होता रहा.

पौषी पूर्णिमा के दिन श्री जी हुज़ूर ने मुझे "जीकारा,, बख़्शा और पगड़ी में लगाने का रुपहरी सुनहरी मांझा अता फ़र्माया. महताजी पन्नालालजी को उदयपुर से अजमेर जाने की इजाज़त मिली. इसी महीने में मेरे घर के तमाम लोग चि० गुमानसिंहजी बहिन, बेटी, जमाई वग़ैरह तीर्थयात्रा के वास्ते जयपुर, मथुरा, प्रयाग, काशी, गया, जगदीश तक गये. लौटते हुए अयोध्या होकर यहां आये चार हजार रुपया सर्फ़ हुआ.

मैंने माघमास में एजेण्ट कर्नेल राइट साहिब को हवेली महमान किया. खाना व नाच हुआ और साहिब बहादुर के एक हाथी, घोड़ा, सरोपाव और मोतियों की कंठी सिर्पेच नज़र किया. फिर इत्र पान के बाद जलसा बर्ख़ास्त हुआ. इस में बेदले राव बहादुर बख्तसिंहजी, पारसौली राव लक्ष्मणसिंहजी राणावत उदयसिंहजी, भाणेज मोतीसिंहजी, महताजी गोकुलचन्दजी, कोठारीजी छगनलालजी, सेठजी जवाहिरमलजी, सेठजी गंभीरमलजी और धायभाई रघुलालजी शरीक थे.

विक्रमी १९३१ फाल्गुन में कर्नेल राइट साहिब विलायत गये और कर्नेल हरबर्ट साहिब बग़दाद से यहां आये, इन का मिज़ाज तेज था. पहिले कविराज मुरारीदानजी वग़ैरह जोधपुर से निस्बत के वास्ते आये,

लेकिन शर्तें तै न होने के बाइस बेदले रावजी के मारफत श्री दर्बार की ईडर महाराज केशरीसिंहजी की बहिन से शादी करार पागई. वैशाख में विनायक का मुहूर्त हुआ, पहिला बनौला पुरोहित शिवराजजी के यहां, दूसरा महताजी गोकुलचन्दजी के यहा हुआ. ज्येष्ठ कृष्णा ७ के दिन मेरी हवेली पर पधारे, दिनभर विराजे, सुबह व शाम की गोठ हुई, केसरिया सरोपाव, कंठी, सिरपेंच, १ हाथी व १ घोड़ा श्री जी हुजूर के नजर किया, श्री महाराणा साहिब ने मुझे सोने के तोड़े इनायत किये, मेरे भाई बख्तावरसिंहजी को मोतियों की कंठी, भीमसिंहजी को सरोपाव और भाई रामसिंहजी को भी सरोपाव अता हुआ इस वक्त गुमानसिंहजी यात्रा में थे. श्री दर्बार दूसरे दिन श्यामलदासजी के यहां पधारे, गोठ वगैरह हुई देलवाड़े राज फतहसिंहजी ने मुझ से पूछा कि इनको क्या दिलाना विचार है, मैंने कहा कि अभी तो कुछ नहीं अब अर्ज करता हूं तब भींडर महाराज मदनसिंहजी, पारसोली राव लछमणसिंहजी, ठाकुर मनोहरसिंहजी, ताणेराज देवीसिंहजी ने भी यही कहा मैंने श्री दर्बार से अर्ज किया, फर्माया कि क्या दिया जावे ? मैंने अर्ज किया कि इख्तियार होने बगैर गाव तो दिया नहीं जा सक्ता, जेवर या ताजीम वगैरह बख्शे फिर श्री जी हुजूर ने ऊपर लिखे सर्दारों से ताजीम के लिये पूछा, तो सब ने कहा, ठीक है तब मुझे हुक्म दिया, कि नजराना करा दो, मैंने महासाणी रतलालजी की शामिलात से ताजीम का नजराना करा दिया

आषाढ़ शुक्ला ६ को ईडर में शादी हुई, मैं दर्बार की बरात में ईडर इस ख़याल से न गया कि साहिब कहेंगे कि बरात में इन्हों ने ज़ियादह ख़रच कराया क्योंकि श्री दर्बार को ज़ेवर व कपड़े वग़ैरह ख़रीदने का बहुत शोक था, दूसरे बहूजी साहिब को भी धर्म पुण्य की तरफ तवज्जो ज़ियादह थी इससे कुछ ख़रच ज़ियादह होने लगा बाज़े आदमियों ने हरबर्ट साहिब से शिकायत की कि अर्जुनसिंहजी दर्बार को सिखाकर ज़ियादह ख़र्च कराते हैं. हरबर्ट साहिब ने मुझे बुलाया और नाराज़ होकर बोले कि तुम दर्बार को सिखाकर ज़ियादा ख़र्च कराते हो, मैं तुम्हारी ज़ायदाद नीलाम कराकर तमाम रुपये वसूल कर लूंगा. मैंने सोचा कि दर्बार को तो इख़्तियार नहीं और साहिब चुग़लख़ोर के बहकाने से नाराज़ हैं; इस में किसी दिन नुक्सान की सूरत है, इस लिये इस्तैफ़ा देना ठीक है, तब देलवाड़े राज फ़तहसिंहजी ने व पारसौली राव लक्ष्मणसिंहजी ने जो पीछे से कौन्सिल के मेम्बर होगये थे, कहा इस्तैफ़ा न दो; मगर बेदले रावजी ने कहा कि इस्तैफ़ा देना ही बिहतर है. इसलिये आषाढ़ कृष्ण १३ को इस्तैफ़ा पेशकर दिया. एक महीने तक महता गोकुलचन्दजी ने काम किया, लेकिन साहिब के पसन्द न आया.

विक्रमी १९३२ के भाद्रपद में महताजी पन्नालालजी को अजमेर से वापस बुलाकर महकमह ख़ास पर मेरी जगह मुक़र्रर किया और महताजी गोकुलचन्दजी विक्रमी १९३४ तक रहे, लेकिन उन्हों ने महकमह ख़ास में जाना बन्द कर दिया था. भाद्रपद कृष्णा २ के दिन मुझे नाव में ऊपर

की बैठक बख्शी और नजरानह करा दिया. इस पर गोकुलचन्दजी [वगैरह ने ब वजह हसद अर्ज कराई कि नाव की बैठक प्रधान के सिवाय दूसरे को न होनी चाहिये, तब धायभाई रघुलालजी की मारफत श्री दर्बार ने यह हाल कहलाया. मैंने अर्ज करादी कि इसमें कुछ हर्ज नहीं, जिसमें दर्बार खुश रहें, वही बिहत्तर है, मैं तो तावेदार हूं भाद्रपद शुक्ल में, मैं बहुत बीमार हो गया था श्री जी हुजूर प्रिन्स आफ वेल्स की मुलाकात के लिये बम्बई पधारे, रवानह होने से उन से एक दिन पहिले मेरी सिहत पुर्सी के वास्ते मेरी हवेली पर शाम को पधारे थे. फाल्गुन मास में मुझे पूरी सिहत होगई. तब कर्नल हरबर्ट साहिब ने मुझे कोठी पर बुलाया और रघुलालजी को चारों रिसाले व शम्भु पल्टन के काम से मौक़ूफ कर महकमह खास में लिखा कि " यह काम सहीवाले अर्जुन सिंहजी के सुपुर्द किया जावे " श्री दर्बार ने महताजी पन्नालालजी की मारफत मुझ से पुछवाया, मैंने इस काम के लिये इन्कार कर दिया. तब रत्नलालजी महामानी के सुपुर्द हुआ और थोडे अर्से बाद मामाजी अमानसिंहजी के सुपुर्द हो गया

दीवान जानी बिहारीलालजी आबू गये और उनकी जगह सेठ फ्रामजी गार्डियन हुए जानी मुकुन्दलालजी, ट्यूटर मुकर्रर हुए, बम्बई से वापस पधार ने पर गवर्नर जेनरल हिन्द लार्ड नाथ ब्रुक साहिब यहां मिहमान हुए

विक्रमी १९३२ के श्रावण या भाद्रपद में श्री दर्बार की शादी कृष्ण-

गढ हुई. मृगशिर, शुक्ल १ के लग्न थे कार्तिक से बीनौले शुरू हुए. चि० भीम- सिंहजी का लग्न फाल्गुन में करार पाया था और श्रीजी हुजूर दिल्ली के शाही दर्बार में भी रौनक् अफ्रोज़ होने वाले थे कार्तिक शुक्ल १२ के दिन मेरी हवेली पधराये, दिन भर यहीं विराजे गोठ हुई उमराव सर्दारोंको निमंत्रण दिया गया, नाच राग रंग और इत्र पान हुआ. इसके बाद सिरोपाव नज़र कियागया. मृगशिर में हरबर्ट साहिब ने श्री दर्बार को इख्तियार दिया और इसी महीने में यहांसे रवानह होकर शाहपुरे, बनड़े होते हुए कृष्णगढ़ पहुंचे, शादी के बाद श्री जी हुजूर दिल्ली पधारे; यह पहिला ही मौका है कि महाराणा साहिब उदयपुर दिल्ली पधारे. चि० भीमसिं- हजी के व्याह के बाइस में कृष्णगढ़ से रुख़्सत ले उदयपुर आया. भाई रामसिंहजी दर्बार के साथ रहे और भाई बख़्तावरसिंहजी भी रेज़िडेण्ट राजपूतानह के हम्राह दिल्ली गये थे.

मृगशिर ही में कर्नैल ब्राडफ़ोर्ड साहिब रेजिडेण्ट राजपूताना विला- यत गये, इन की जगह जोधपुर से मेजर वाल्टर साहिब काइम मुक़ाम मुक़र्रर हुए. इस बात से हरबर्ट साहिब नाराज़ हुए; क्योंकि यह अपना हक़ समझे हुए थे, गुस्से में आकर गवर्नर जेनरल के पास इस्तैफ़ा लिख भेजा. वह मन्जूर हो गया हरबर्ट साहिब कृष्णगढ़ से विलायत चले गये. इनकी जगह कर्नैल इस्पी साहिब एजेण्ट मुक़र्रर हुए.

श्री जी हुजूर दिल्ली से नसीराबाद तक रेल में पधारे; यहां से घोड़ों की डाक लगी हुई थी, एक रात में नाहरमगरे पधार गये.

विक्रमी १९१३ फाल्गुन शुक्ल २ को चि० भीमसिंहजी की शादी चूंडावत खुमानसिंहजी के यहां हुई हाथी पर बैठकर तोरण बांधा, श्री दर्बार से १५००) रुपये अता हुए, बिनौली निकली, १००) रुपये का सरोपाव बखशा गया और रावले में से भी जनाने मर्दाने सरोपाव आये इस व्याह का कुल खर्च दस हजार करीब हुआ

इसी मास मे कर्नेल वाल्टर साहिब देवली की छावनी से उदयपुर आते थे, दर्बार ने मुझे पेशवाई के वास्ते भेजा और कर्नेल हरवर्ट साहिब ने जो बाबाजी शक्तिसिंहजी को सोन्याने भेज दिया था, उन के बाबत वाल्टर साहिब से बात चीत करके उन्हे वहा बुलाने को इजाजत लने के लिये भी फर्माया इसलिये मैंने देवली जाकर साहिब बहादुर से बाबाजी साहिब के बारे मे अर्ज की और अच्छी तरह उनके जहन नशीन कर दिया, कि यह मुनासिब नहीं कि बेटा राज करे और बाप बाहिर रहे या बेटे के राज में बाप को शहर मे आने की इजाज़त इस पर गौर फर्माइये और उनको बुलाने की इजाजत दीजिये. साहिब ने कहा कि एजेण्ट साहिब से रिपोर्ट करा दो, मैं मन्जूरी देदूगा साहिब किसी जरूरी काम के बाइस उदयपुर नहीं आये और मैंने आकर सब हाल श्री दर्बार से अर्ज कर दिया और कर्नेल इम्पी साहिब से रिपोर्ट कराकर मन्जूरी मगाकर बावजी साहिब को उदयपुर बुला लिया.

वैशाख मे कविराज श्यामलदानजी की सलाह से इजलास खास कायम हुआ और इस्न जेल मेम्बर मुकर्रर हुए

बेदले राव बख्तसिंहजी   देलवाड़े राज फ़तहसिंहजी •

पारसौली राव लक्ष्मणसिंहजी, बाबाजी गजसिंहजी.

सर्दारगढ़ ठाकुर मनोहरसिंहजी, ताणेराज देवीसिंहजी.

मामाजी बख्तावरसिंहजी, काकरवे राणावत उदयसिंहजी.

भाणेज मोतीसिंहजी, कविराजा श्यामलदासजी.

धधा बदनमल्लजी, महता बख्तसिंहजी.

महताजी पन्नालालजी, कानित्र (सहीवाला अर्जुनसिंहजी).

पुरोहित पद्मनाथजी

कृष्णगढ़ के महता महेशदानजी, व जामी मुकन्दलालजी को ऐक्स्ट्रा मेम्बर मुक़र्रर किया. मुन्शी अलीहुसेनजी सरिश्तहदार हुए. इस इज्लास में पहिले की तमाम चढ़ी हुई मिस्लें निकाल दी गईं, फिर कविराजजी व धधाजी के कुछ कहन सुन होगई, इस से धधाजी ने आना बन्द कर दिया, तामील के कागज़ात पर महता तख़्तसिंहजी दस्तख़त करते रहे. विक्रमी १९३४ के मृगशिर में श्री दर्बार दूसरी शादी करने ईडर पधारे, तब तख़्तसिंहजी को साथ लिया और दस्तख़त करने का हुक्म मुझे बख़्शा. ईडर से वापस आने बाद इज्लास ख़ास की एक मुहर बनवाई गई, जो मुझे दीगई और सब मेम्बरों को तक़र्रुरी के रुक़्क़े बख़्शे.

विक्रमी १९३६ की सर्दी की मौसिम में श्री जी हुजूर कृष्णगढ़ हो जयपुर महाराज रामसिंहजी के महमान हुए वहीं से फिर जोधपुर पधारे. विक्रमी १९३७ श्रावण शुक्ल १५ तक इज्लास में मैंने मुहर व दस्तख़त किये, बाद कविराज की सलाह से इज्लास ख़ास का नाम महद्राज सभा रक्खा

गया और पख्या मोहनलालजी को जो दीवान जानी बिहारीलालजी की सिफारिश से यहां नौकर हुए थे, सेक्रेटरी मुकर्रर फर्माया मोतीसिंहजी भाणेज और महेशदासजी मौकूफ किये गये कुछ दिन बाद शाहपुरे राजाधिराज नाहरसिंहजी भी इस सभा के मेम्बर मुक़र्रर किये गये फिर आसीन्द रावत अर्जुनसिंहजी, ब्रजनाथजी व शिवपुर महाराज रायसिंहजी भी मेम्बर मुक़र्रर हुए

विक्रमी १६३७ आषाढ़ मास में मेरी छोटी लड़की की शादी हुई, इस तक़रीब पर आषाढ़ शुक्ल ४ के दिन श्री जी हुजूर को हवेली पधराया, सुबह व शाम गोठ हुई, उमराव सर्दार भी बुलाये गये नाच राग रंग हुआ, अतर पान हुआ, श्री जी हुजूर के सरोपाव नजर किये गये.

विक्रमी १६३८ मृगशिर में लार्ड रिपन गवर्नर जेनरल हिन्द चित्तौड तशरीफ लाये राजपूताना मालवा की (अजमेर से चित्तौड तक) रेल खोली और श्री दर्बार को तमगा जी॰ सी॰ एस॰ आई॰ का दिया श्री जी हुजूर कार्त्तिक मास से ही चित्तौड पधार गये थे, वहीं मेहमानदारी का सामान निहायत उम्दा हुआ, जिससे हुस्न इन्तिजाम से गंभीरी नदी के किनारे दोनो खैमेगाह कायम कीगई और खैमों में आराइश हुई वह बयान नहीं हो सक्ती. मैं मृगशिर मे चित्तौड़ पहुचा, लार्ड साहिब सन् १८८१ ता॰ २२ नवम्बर को वहां रौनक अफरोज हुए थे, रेलवे प्लेटफार्म खूब सजाया गया था, तमाम रास्ते पर खैमेगाह तक फौज की सजावट काबिलदीद थी. श्री जी हुजूर रेलवे प्लेटफार्म तक पेश्वाई को पधारे,

फिर बड़े जुलूस के साथ हाथियों पर सवार हो लार्ड साहिब को ख़ैमेगाह तक पहुंचा कर श्री जी हुज़ूर अपनी ख़ैमेगाह को वापस पधारे, दूसरे दिन सुबह के वक़्त लार्ड साहिब के डेरे पर मुलाक़ात के लिये पधारे; बारह बजे आम दर्बार हुआ, तब श्री दर्बार को ख़िलअत व तग़मा दिया गया क़रीब २ बजे लार्ड साहिब बाज़ दीद की मुलाक़ात के वास्ते तशरीफ़ लाये शाम को दावत हुई, इस वक़्त की रोशनी और आतिशबाज़ी बहुत उम्दा मालूम होती थी; गरज़ लार्ड साहिब यहां आकर हर तरह ख़ुश रहे.

विक्रमी १९३९ में श्री दर्बार के दशयनों को बीमारी से ज़ियादह तक्लीफ़ हुई, चैत्र में जोधपुर महाराज जशवन्तसिंहजी और कृष्णगढ़ महाराज शार्दूलसिंहजी यहां मिहमान हुए, इन मिहमानान ज़ीशान की तशरीफ़ आवरी से इस साल गनगौर की सवारियों का लुफ्त बहुत ही बढ़ गया था, इसी वर्ष में बोहड़े रावत केशरीसिंहजी को, जो बग़ैर मंज़ूरी ठिकाने के मालिक बन गये थे, क़ैद किया और भींडर महाराज मदनसिंहजी के छोटे भाई रावत रत्नसिंहजी को वहां का मालिक बनाया.

विक्रमी १९४० आश्विन में श्री जी हुज़ूर ने तीस हज़ार रुपया ब-नज़र ख़ाविन्दी मुझे क़र्ज़ अदा करने के वास्ते चार आने के सूद पर बख़्शे, विक्रमी १९४१ के कार्त्तिक में श्री दर्बार जोधपुर पधारे वहां बीमारी ज़िया-दह होगई, तब पौष कृष्णा में यहां वापस पधारे, जिन्दगी ने वफ़ा न की, पौष शुक्ल ६ को देवलोक पधार गये, शहर भर में सन्नाटा होगया, जिधर देखो हाहाकार व हरएक की आंखों से आंसुओं की धारा जारी थी, दाह

कर्म वगैरह हुआ. ये दर्बार बडे बुद्धिमान क़दरदान और गुण की खान थे, सारे जहान मे इनका यश फैल गया था. तमाम विलायतो मे उदयपुर मशहूर होगया था. हरएक रियासती काम के इन्तिज़ाम का दुरुस्त होना इन्हीं की अक्लमन्दी थी.

इसी दिन शाम के वक्त उमराव सर्दार दरीखाने मे जमा हुए, कर्नल् वाल्टर साहिब एजेण्ट मेवाड भी शम्भुनिवास मे आ गये. मुझे बुलाया और सब सर्दारो से कहा कि पहिले जनाने मे दर्याफ़्त करो, तमाम लोग ज़नानी ड्योढ़ी पर गये, रावले मे हीराबाई व धीकड़्या उदयरामजी की यह के मारफत अर्ज कराई तो हुक्म हुआ कि तुम सब विचार कर मालूम कराओ सर्दारो ने वाल्टर साहिब से जाकर कहा कि सोहन-सिंहजी तो खारिज हो चुके और बाबा शक्तिसिंहजी बेटे की गद्दी पर नहीं बैठ सके, इसलिये हमारी राय फतहसिंहजी को गद्दी पर बिठाने की है. वाल्टर साहिब ने भी इस राय से इत्तिफ़ाक़ किया, फिर ज़नानी ड्योढ़ी जाकर अर्ज कराई तो यह तजवीज वहां भी सब को पसन्द आई. इस वक्त यहां बेदले राव तख्तसिंहजी, बेगम रावत सवाई मेघसिंहजी देलवाड़े राज फतहसिंहजी; मेजे रावत अमरसिंहजी, भींडर महाराज मदनसिंहजी, कुरावड़ रावत जैतसिंहजी, सर्दारगढ़ ठाकुर मनोहरसिंहजी वगैरह मौजूद थे, कविराज श्यामलदासजी इस गम के सबब अपनी हवेली को चले गये. और कह गये कि जो सब की राय हो, वह मुझे भी मंजूर है

महताजी पन्नालालजी, मैं और पुरोहित पद्मनाथजी ज़नानी ड्योढ़ी से वापस आये; गोदाम के ऊपर दरीखाने में जाबैठे. वहां महाराज मदनसिंहजी ने कहा कि अब सब सर्दार पोषाक कराने का हुक्म दें. इस पर सभों ने मुझे हुक्म फ़र्माया कि ऊपर लेजा कर पोषाक कराओ, मैंने श्री दर्बार से अर्ज़ किया कि ऊपर पधारें, बेगम रावत जी और कुरावड़ रावतजी ने श्री हुज़ूर का हाथ थाम लिया और ऊपर पधराए, पंचोली अखेनाथजी, महसाणी रत्नलालजी व पुरोहत पद्मनाथजी भी साथ थे. श्री दर्बार पांडेजी की ओवरी कुर्सी पर जा विराजे, पोषाक धारण कर दरीख़ाने में पधारे हस्ब दस्तूर दरीख़ाना हुआ, बादहू ज़नाने में पधार कर फिर महलों में पधारे.

विक्रमी १६४१ चैत मास में जयपुर महाराज माधोसिंहजी और कृष्णगढ़ महाराज शार्दूलसिंहजी गनगौर के दिनों में यहां मातम पुर्सी के लिये पधारे, जोधपुर महाराज जसवन्तसिंहजी फाल्गुन में और ईडर महाराज केशरीसिंहजी वैशाख में यहां मातम पुर्सी के वास्ते पधारे थे.

विक्रमी १६४१ में श्री जी हुज़ूर दाम इक्बालहू ने भींडर महाराज मदनसिंहजी, कुरावड़ रावत जैतसिंहजी, मामाजी अमानसिंहजी और कोठारी बलवन्तसिंहजी को महद्राजसभा का मेम्बर मुक़र्रर फ़र्माया.

विक्रमी १६४२ के कार्त्तिक में लार्ड डफ़रिन साहिब गवर्नर जेनरल हिन्दुस्थान यहां मिहमान हुए. लेडी डफ़रिन साहिबा भी साथ थीं. जिन्होंने यहां वाल्टर हास्पिटल का बुन्यादी पत्थर रक्खा.

विक्रमी १९४४ के माघमे कर्नेल् वाल्टर साहिब एजेण्ट गवर्नर जेनरल बहादुर ने त्याग वगैरह के बावत, जो रईसो व राजपूत सर्दारो की शादी मे चारण भाटो को दिया जाता है, एक कमेटी करने की गरज से सब रियासतों के मोतमिद अजमेर बुलाये इसलिये उदयपुर से देलवाडे राजराणा फतहसिंहजी व कविराज श्यामलदासजी को और मुझे भेजा ये दोनो सर्दार रेलमे गये, मैं मंजिल बमंजिल अजमेर गया, वहां आनासागर पर हाजी मुहम्मदखां की कोठी मे डेरा किया, बारह तेरह दिन तक रहे कमेटी मे शादी व गमी के खर्च की कमी के बावत और त्याग वगैरह के लिये चन्द कलमे मुफीद आम मुकर्रर हुई. इसके बाद वहां से रुखसत होकर मै अपने गाव दूथा होकर यहा आया.

विक्रमी १९४५ माघ मे फिर बुलाया, इसलिये हम तीनो आदमी फिर गये वहा देलवाडे राज व कविराजजी तो मसूदे की हवेली मे उतरे और मै तारागढ के नीचे रेल के कारखाने के करीब हाजी मुहम्मदखाजी के बगले मे ठहरा, अब की बार इस कमेटी का नाम वाल्टरकृत राजपुत्रहितकारिणीसभा रक्खा गया और कमेटी मे चन्द कलमे नई तजवीज होकर सब को रुखसत हुई

श्री महाराणा सज्जनसिंहजी के अहद मे एक देशहितकारिणीसभा गुलाबबाग मे हुआ करती थी, मे भी उसमें मेम्बर था विक्रमी १९४५ मे वाल्टरकृत राजपुत्रहितकारिणीसभा की एक शाखा देशहितकारिणीसभा यहा कायम हुई और हस्ब जैल उसके मेम्बर मुकर्रर हुए

बेदले राव तख्तसिंहजी. सलूंबर रावत जोधसिंहजी.

देलवाड़े राजरणा फ़तहसिंहजी. कविराज श्यामलदासजी.

महताजी पन्नालालजी. मैं (सहीवाला अर्जुनसिंह).

पुरोहित पद्मनाथजी. राव बख्तावरजी.

नथमलजी झोटा इसके सरिश्तेहदार मुक़र्रर हुए. विक्रमी १९४५ में ड्यूक आफ़ कोनाट मलिकह मुअज़्ज़िमा के छोटे बेटे जो बम्बई के कमान्डन इन्चीफ थे, यहां मिहमान हुए और देवाली के तालाब की पालका बुनियादी पत्थर रक्खा; वह पाल उनके नाम से कोनाट बन्द और तालाब श्री जी हुज़ूर के नाम से फ़तहसागर कहलाता है, विक्रमी १९४५ के आषाढ़ शुक्ल ६ को भंवर गुलाबसिंह का विवाह हुआ. श्री दर्बार ने १०००) एक हज़ार रुपया अना फ़र्माया, बिनोली निकली ५१) का सरोपाव बख़्शा गया.

विक्रमी १९४६ फाल्गुन में फिर अजमेर में कमेटी हुई, मगर शाहज़ादे एलबर्ट विक्टर की यहां आमदके सबब यहां से सिर्फ़ देलवाड़े राजरणा फ़तहसिंहजी भेजे गये, फाल्गुन कृष्ण १४ याने ता० १८ फ़ेब्रुअरी सन् १८९० ई० के दिन प्रिन्स एलबर्ट विक्टर, प्रिन्स आफ़ वेल्स के बड़े पुत्र यहां श्री दर्बार के मिहमान हुए. दर्बार आम में सब उमराव सर्दारों ने शाहज़ादे साहिब के नज़र की, मैंने भी एक मुहर नज़र की.

विक्रमी १९४६ वैशाख शुक्ल १२ को भीमसिंहजी का दूसरा विवाह देलवाड़े में पंचोली दौलतसिंहजी के यहां हुआ. श्री दर्बार से ५००) रुपये बख़्शाऊ मिले.

विक्रमी १९४८ मे छोटे महारावजी साहिब जो उन दिनो मेओ-कालेज में पढ़ते थे और यहां श्री बडे रावजी के साथ सगपन हुआ था, क्रकेट खेलने के लिये यहा पधारे, गुलाबबाग मे उनके वास्ते सब बन्दोबस्त राज मे किया गया, इसी साल मे चिरजीव पृथ्वीसिंहजी जिन को बवासीर की तकलीफ दो वर्ष से जियादह थी और बहुत कमजोर होगये थे, तबदील आब हवा की गरज से कार्तिक महीने मे आबू जाने के लिये यहा से रवाने हुए, अजमेर में अमरोहे के हकीमजी का इलाज शुरू किया गया इस सबब ठहर गये, यहां बीमारी का फिर दौरा शुरू होगया और खून बहुत जाने से नक्राहत हद से जियादह बढ़ गई और अजमेर ही में मृगशिर शुक्ला ७ को देहान्त हुआ, इस सख्त हादसे का बयान कलम से नहीं लिखा जा सक्ता. परमेश्वर की मरज़ी से लाचार होकर सब्र करना पडा.

विक्रमी १९४९ के फाल्गुन शुक्ला २ को तीन बाइयों का विवाह हुआ. चिरजीव हमीरसिंहजी की बाई नजर कुवर फरासखाने के दरोगा मोहन-लालजी के पोते और अर्जुनसिंहजी के बेटे केसरीसिंहजी को ब्याही गई, चिरजीव गुमानसिंहजी की बाई अजब कुवर तालके कामदार चतरसिंहजी को ब्याही और उनसे छोटी जस कुवर को नगीनाबाड़ी के कामदार किशनलालजी के भतीजे हरकृष्णजी के बेटे माधोलालजी को ब्याही.

विक्रमी १९४९ के चैत्र महीने में चिरजीव हमीरसिंहजी के महकमह सायर का काम सुपुर्द किया गया और सौ रुपया माहवार तनख्वाह के श्री जी

हुज़ूर ने कर बख़्शे और आषाढ़ में दीवाणी का काम भी सुपुर्द हुआ और ५०) की तरक़्क़ी कर बख़्सी और तरक़्क़ी होते होते विक्रमी १९५४ के साल में ३००) माहवार होगये. विक्रमी १९५० के मृगशिर शुक्ला २ को बड़े बापजी श्री नन्दकुंवर बाई का विवाह कोटे महारावजी श्री उम्मेदसिंहजी साहिब के साथ हुआ. कोटे से बरात अच्छी धूम धाम के साथ आई और यहां ज़ियादह धूम धाम के साथ सब रस्मियात अदा हुई.

विक्रमी १९५१ के भाद्रपद मास में महताजी पन्नालालजी ने यात्रा जाने के लिये ६ माह की रुख़सत ली, उस वक़्त भादवा सुद ११ को कोठारीजी बलवंतसिंहजी और मुझको शामलात से महकमे ख़ास का चार्ज लेने का हुक्म बख़्शा, ६ महीने तक इन्चार्ज रहे, बादह्‌ महताजी का इस्तेफ़ा पेश होनेपर हम दोनों महकमह ख़ास के मुस्तकिल मिनिस्टर मुक़र्रर हुए, श्री जी हुज़ूर दाम इक़बालहू ने कोठारीजी को पन्ने का कंठला और मुझको सोने का लंगर अ़ता फ़र्माये और मुझको ३००) माहवार तनख़्वाह कर बख़्शी और पुरदड़ी का नेग भी आधा कर बख़्शा.

विक्रमी १९५१ के आश्विन कृष्णा २ को चिरंजी भीमसिंहजी का तबादला कुम्भलगढ़ से मांडलगढ़ बमशाहरे १५०) माहवार हुआ. चैत्र कृष्णा ७ (शीतलाष्टमी) को श्री जी हुज़ूर कोठारीजी की हवेली पधारे, मामूली गोठ, राग, रंग, अतर पान वग़ैरह हुआ और शामको इनकी हवेली से सवारी बहुत धूमधाम से हुई.

विक्रमी १९५२ श्रावण कृष्णा १ के दिन नये सालकी गोठके बाबत

मेरी अर्ज कुबूल फर्माई और बाड़ी महलों में गोठ अरोगी वैशाख कृष्णा ३ धींगा गनगौर के दिन श्री जी हुजूर ने खाविन्दी फर्माकर मेरे मकान को पावन किया, सुबहही करीब ६ बजे हवेली पधारे. गोठ, राग, रग, अतर, पान हस्ब मामूल हुआ, सिरोपाव, जेवरकी किस्तिया नज़र की गई तीन पहर बजे श्री कुवरजी बावजी हवेली पधारे सिरोपाव, जेवरकी किस्तिया नजर हुई शामको कुवरजी बावजी महलों पधारे, श्री जी हुजूर ने मुझको तो रुपये ५००) की कठी सरोपाव वो चिरन गुमानसिंहजी, भीमसिंहजी, गुलाबसिंहजी को पाग दुपट्टे बख्शे. शामको धींगा गनगौर की सवारी हुई, श्री जी हुजूर राजघाट पधार नाव सवार हुए

विक्रमी १९५२ के मृगशिर में जोधपुर महाराज जसवन्तसिंहजी के परलोकवास होने से श्री जी हुजूर मातम पुर्सीके लिये जोधपुर पधारे

वैशाख कृष्णा ४ को कर्नेल् बायली साहिब जो नौ महीना की रुखसत पर विलायत जाने वाले थे, मिलने के वास्ते हवेली पर तशरीफ लाए, सिरोपाव जेवर की किस्तिया नजर हुई और अतर पान हुआ.

विक्रमी १९५३ मे श्रावण कृष्णा १ को साहिब एजेण्ट गवर्नर जेनरल जो दौरेमे उदयपुर तशरीफ लाये थे, सुबह बाज दिन की मुलाकात के लिये शम्भुनिवास तशरीफ लाए इस वजह से मेरी तरफ से गोठ मुल्तवी रही

विक्रमी १९५३ मे ता० २२ नवम्बर सन् ९६ मे लार्ड एलगिन वाईस

राय वो गवर्नर जेनरल कैसरेहिन्द यहां तशरीफ़ लाए, कोठी रेज़ीडेन्सी में क़याम फ़र्माया, शम्भुनिवास बड़ा खाना हुआ, उस दिन तालाब की रोशनी और आतिशबाज़ी बहुत उम्दा हुई.

बिक्रमी १९५४ इस साल मलका मोअज़्ज़मा क़ैसरहिन्द की साठ-साला ज़ुबिली का जलसा तमाम हिन्दुस्तान में बतारीख़ हुआ यहां भी दर्बार हुआ, जिसमें मेजर रेवनशा साहिब ने लाट साहिब का ख़रीता पढ़कर सुनाया, शामको शम्भुनिवास खाना हुआ और तालाबकी रोशनी वो आतशबाज़ी बहुत उम्दा हुई.

मेरी नशिस्त का मकान ना दुरुस्त होने की वजह से पूर्व की तरफ़के चौकमें नया मकान बनाना मृगशिर महीने में शुरू किया गया जो अब क़रीब ख़तम होने के है. मकान तीन मंजिल अच्छा बनगया है.

बिक्रमी १९५४ के श्रावण कृष्णा १ को मेरी तरफ़ से गोठ हुई, श्री जी हुज़ूर बाड़ी महलों में अरोगे.

कर्नेल् बाइली साहिब नेपालमें रेज़ीडेन्ट मुक़र्रर हुए और मेज़र रेवनशा साहिब जो इन्चार्ज थे यहां के रेज़ीडेन्ट मुस्तक़िल मुक़र्रर हुए. सर राबर्ट क्रास्थवेट साहिब मार्च में विलायत गये और जोधपुर के रेज़ीडेण्ट मिस्टर ए० मार्टिनडेल उनकी जगह एजेण्ट गवर्नर जेनरल मुक़र्रर हुए.



तीसरी फ़स्ल.

लिखावट वगैरह के बयान मे

मेरे नाम सर्दार व उमरावों के कागज़ नीचे लिखे काइदे मे लिखे आते हैं

बड़ी सादड़ी के राज साहिब शिवसिंहजी
का लिखा कागज़.

सिद्धश्री उदयपुर शुभस्थाने सहीवाला श्री अर्जुनसिंहजी जोग्य बड़ी सादड़ी सू राजराणा श्री शिवसिंहजी लिखावतां जुहार बांचजो अठाका समाचार श्री पीताम्बररायजी की कृपा सू कर भला है, राज का सदा भला चावे राज म्हारे घणी बात है.

दूसरे कागज की नकल.

सिद्धश्री उदयपुर शुभस्थाने सर्वोपमा सहीवाला श्री अर्जुनसिंहजी योग्य बड़ी सादड़ी सू राजराणा श्री शिवसिंहजी लिखावतां जुहार बांचसी अठाका समाचार श्री जीरी सुनज़र कर भला है राजरा सदा भला चावे राज म्हारे घणी बात है राज सिवाय काई बात नहीं अपरंच ॥

कोठारिया रावत केसरीसिंहजी की लिखावट.

सिद्धश्री उदयपुर शुभस्थाने सर्वोपमा सहीवाला श्री अर्जुनसिंहजी

योग्य श्री कोठारिया सूं श्री रावत श्री केशरीसिंहजी लिखावतां जुहार बांचसी अठाका समाचार श्री जी की सुनज़र कर भला है राजरा सदा भला चावे राज म्हारे घणी बात है अपरंच.

दूसरा काग़ज़.

सिद्धश्री उदयपुर शुभस्थाने सर्वोपमा राज श्री अर्जुनसिंहजी सहीवाला योग्य कोठारिया श्री रावत श्री केशरीसिंहजी लिखावतां जुहार बांचसी अठाका समाचार श्री जी की कृपा थी भला है राजरा सदा भला चाइजे म्हारे राज सिवाय दूसरी बात नहीं अपरंच.

बेगम रावत सवाई मेघसिंहजी की तहरीर.

सिद्ध श्री उदयपुर शुभस्थाने सर्वोपमा सहीवाला श्री अर्जुनसिंहजी योग्य बेगूंसूं श्री सवाई मेघसिंहजी लिखावतां जुहार बांचसी अठाका समाचार श्री सुदर्शनजी की कृपा सूं कर भला है राज का सदा भला चाहिजे म्हारे राज सिवाय काई बात नहीं.

दूसरे काग़ज़की नक़ल.

सिद्धश्री उदयपुर शुभस्थाने सर्वोपमा सहीवाला श्री अर्जुनसिंहजी योग्य बेगम सूं रावत श्री सवाई मेघसिंहजी लिखावतां जुहार बांचसी अठाका समाचार श्री सुदर्शणजी की कृपा सूं कर भला है राजका समाचार सदा भला चावे म्हारे राज घणी बात है.

देलवाड़े राजसाहिब का रुक्का।

सिद्धश्री सहीवाला श्री अर्जुनसिंहजी सुं रणा फतहसिंह को जुहार बांचसी पीढ़ियां सूं सनातन है ज्यूंही राज बरताव बरत्यो राज बुद्धिमान है.

मेजे रावत अमरसिंहजी की तहरीर का तर्ज.

सिद्धश्री भाई श्री अर्जुनसिंहजी योग्य रावत अमरसिंह को जुहार बांचसी अठाका समाचार श्री जी की सुनजर थी करे भला है राजरा सदा भला चाहिजे राज म्हारे घणी बात है अपरंच.

गोगूदे राज के कागज की तर्ज तहरीर.

सिद्धश्री उदयपुर शुभस्थाने सर्वोपमा सहीवाला श्री अर्जुनसिंहजी योग्य गोगूदा थी राजरणा श्री मानसिंहजी लिखावता जुहार बांचसी अठाका समाचार श्री जी री कृपा कर भला है राजरा सदा भला चाहिजे राज म्हारे घणी बात है अपरंच.

दूसरे कागज की तर्ज.

सिद्धश्री उदयपुर शुभस्थाने सर्वोपमा ठाकुर श्री अर्जुनसिंहजी सहीवाला योग्य गोगूदा थी राजरणा श्री मानसिंहजी लिखावतां जुहार

बांचसी अठारा समाचार श्री जी री कृपा थी कर भला है राजरा सदा भला चाहिजे राज म्हारे घणी बात राज सिवाय दूजी बात नहीं.

कुंवर अजयसिंहजी के रुक्के की तर्ज़ तहरीर.



सिद्धश्री ठाकुरा श्री काकाजी अर्जुनसिंहजी सहीवाला योग्य कुंवर अजयसिंह लिखतां जुहार बांचसी अपरंच.

बदनौर के काग़ज़ की लिखावट.



सिद्धश्री उदयपुर शुभस्थाने सर्वोपमा सहीवाला श्री अर्जुनसिंहजी योग्य बदनौर सूं ठाकुर केसरीसिंहजी लिखावतां जुहार बांचसी अठाका समाचार श्री जी की सुनज़र कर भला है राजका सदा भला चाहिजे अपरंच.

पारसौली रावतजी का रुक्का.



सिद्धश्री अर्जुनसिंहजी सूं पारसौली सूं रावत लक्ष्मणसिंह लिखावतां जुहार बांचसी अठे श्री जी की कृपा सूं खुशी हैं राजका खुशीका समाचार आवे तो म्हारे बहुत खुशी होवे राजको ममत जस्या ही राख्यां जावे

कुरावड़ रावतजी की तरफ से

सिद्धश्री उदयपुर शुभस्थाने सर्वोपमा योग्य सहीवाला अर्जुनसिंहजी योग्य कुरावड थी रावत श्री रत्नसिंहजी लिखावतां जुहार वांचसी समाचार श्री जी की सुनजर थी कर भला है राज का सदा भला चाहिजे राज सिवाय काई वात नहीं.

कुरावड़ रावत जैतसिंहजी की तरफ से

सिद्धश्री काकाजी सहीवाला अर्जुनसिंहजी कुरावड़ रावत जैत लिखतां जुहार वांचसी.

दूसरी बार.

सिद्धश्री काकाजी श्री अर्जुनसिंहजी सू रावत जैतसिंह लिख जुहार वांचसी आच्छा रहसी ढीलाका जतन रखावसी अपरंच.

सर्दारगढ़ ठाकुर के रुक़े की लिखावट.

सिद्धश्री ठाकुरा श्री भाईजी श्री अर्जुनसिंहजी सूं मनोहरसिं लिखतां जुहार वांचसी सदीव मिहर्वानगी राखे ज्यूंही रहे अपरंच.

मसूदे ठाकुर का कागज़.

सिद्धश्री उदयपुर शुभस्थाने सर्वोपमा ठाकुरा श्री अर्जुनसिंहजी

मसूदा सूं रावजी श्री बहादुरसिंहजी लिखतां जुहार बांचसी अठाका समाचार श्री जी का प्रताप सूं कर भला है राजका सदा भला चाहिजे अपरंच.

भदेसर रावतजी की तरफ़से.



सिद्धश्री उदयपुर शुभस्थाने सर्वोपमा योग्य सहीवाला अर्जुनसिंहजी योग्य भदेसर सूं रावत श्री भोपालसिंहजी लिखावतां जै श्री चतुरभुजजी बांचसी अठाका समाचार श्री जी की कृपा सूं कर भला है राजका सदा भला चाहिजे अपरंच.

पीपल्यां का काग़ज़.



सिद्धश्री उदयपुर शुभस्थाने सर्वोपमा योग्य सहीवाला अर्जुनसिंहजी योग्य पीपल्यां सूं रावत श्री कृष्णसिंहजी केन जुहार बांचसी अठारा समाचार श्री जी की कृपा सूं कर भला है राज का सदा भला चावे म्हारे राज सिवाय कांई बात नहीं सदा हेत स्नेह रखावसी अपरंच.

महता गोकुलचन्दजी की लिखावट.

सिद्धश्री उदयपुर शुभस्थाने सर्वोपमा योग्य सहीवाला श्री अर्जुनसिंहजी योग्य मांडलगढ़ थी महता गोकुलचन्दजी लिखतां जुहार बांचसी अठाका समाचार श्री जी का प्रताप थी करे भला है राजका सदा भला चाहिजे म्हारे राज सिवाय कांई बात है सदा हेत इखलास है ज्यूं रखावसी.

महकमह खास से लिखावट आई.



सिद्धश्री यथा शुभस्थाने सर्वोपमा सहीवाला श्री अर्जुनसिंहजी योग्य श्री उदयपुर थी राज्ये श्री महकमह खास लिखता जुहार बांचसी अठाका समाचार श्री जी री सुनजर कर भला है राजका सदा भला चाहिजे राज सिवाय कांई बात है अपरंच

कैलाशपुरी के कागज की लिखावट.



सिद्धश्री श्री कैलाशपुरी शुभस्थाने गोस्वामीजी महाराज श्री सवाई नर्वदानन्दजी उदयपुर सुथाने सहीवाला श्री अर्जुनसिंहजी चिरणजीव नारायण स्मर्ण वाचोगा अठारा समाचार श्री जी की कृपा सूं कर भला है आपरा सदा भला चाहिजे अपरच श्री शिवरात्री का उत्सव की आशका भेजी है सो माथे चढावोगा आप सेवग हो सो सेवा भक्ति रखावोगा जितरो ही सुकृत है वलता कागद पत्र लख्याव्या करसी

श्री नाथद्वारे के अधिकारी का कागज़.



स्वस्तिश्री उदयपुर शुभस्थाने सर्वोपमा लायक सहीवाला श्री श्रीअर्जुनसिंहजी योग्य श्री सिहाड सूं लिखतग अधिकारीजी श्री खेमजी भाईके भगवत स्मरण वाचोगा अपरच



तीसरा बाब.

दर अहवाल काकाजी अचलदासजी, भाई रामसिंहजी, लक्ष्मणसिंहजी और बख़्तावरसिंहजी वग़ैरह.

फ़स्ल अव्वल.

काकाजी अचलदासजी के अहवाल में.

काकाजी अचलदासजी बचपनमें मऊवाड़े गाव में अपनी ननसाल चलेगये थे, वहां इन्हें इत्तिफ़ाक़से एक साधु महात्मा मिलगए उन्होंने ओघेकी क्रिया बतलाई और कहा कि बारह वर्ष तक बराबर करना; मैं फिर आमिलूंगा। क्रियामें फ़र्क़ न पड़े और ज़ाहिर न हो. उनके हुक्म मूजिब इन्होंने अमल किया, परमेश्वर की महरबानी से समाधि का अभ्यास यहां तक होगया कि दूसरी जगहका हाल बता सक्ते थे, मसलन् घर बैठे कह सक्ते थे कि आज जगदीश की पोषाक इस तरह की है. उदयपुर आने के बाद भी ओघेकी क्रिया साधते रहे.

महाराणाजी श्री जवानसिंहजी के पास जब कुँवरपदे में थे, यह बहुत हाज़िर रहा करते थे. महाराणा जी श्री भीमसिंहजी ने अपनी बायों का विवाह किया तो लग्नके दिन बापजी श्री अजबजी के व्याहने को बीकानेर महाराज रत्नसिंहजी और महाराजकुंवार श्री अमरसिंहजी की बेटी श्री कीका बाजा के व्याहनेको कृष्णगढ़ महाराज मुहकमसिंहजी बरात लेकर उदयपुर आगए मगर बापजी श्री रूपजी के व्याहने को जैसलमेर रावल-

जी गजसिंहजी नहीं आये बापजी श्री रूपजी महाराज कुमार जवानसिंहजी की हकीकी बहिन थी, इस सबबसे जैसलमेर की बरात न आनेसे कुवरजी बावजी को जियादह फिक्र था. हरनाथजी पचौली व गंगारामजी पानेरी वगैरह ने काकाजी अचलदासजी से कहा कि समाधि चढ़ाकर बतलाओ कि बरात कब आवेगी. उन्होंने ध्यान लगाकर कहा कि रावलजी साडिये पर सवार चले आते हैं दूसरे आदमी सब पीछे हैं और आज तीन पहर रात गये यहां दाखिल हो जायगे

यह खबर महाराणाजी श्री भीमसिंहजी व महाराजकुंवार जवानसिंहजी से अर्ज कीगई और उसी दिन तीन पहर रात गये रावलजी आगये शादी वगैरह हुई, श्रीजी हुजूर व महाराजकुवार बहुत खुश हुए यह बात आजतक आम मशहूर है कुछ दिन बाद सर्कारी काम काजके सबब यह साधन छूट गया, इनको महाराजकुवार ने जब कि रीवा शादी करने पधारे थे, डोड़ावली गांव खेड़ों समेत इनायत किया था.

विक्रमी १६०० में बापजी श्री सौभाग्यकुंवर बाई की निस्बत के वास्ते अचलदासजी को रीवा भेजा, वहा दो वर्ष रहे और निस्बत मजूर कराई, फिर यहा आये विक्रमी १६०७ में रीवां महाराजकुमार रघुराजसिंहजी को लेने के वास्ते गये, जो यहां आये और शादी कर वापस पधारे. विक्रमी १६१० आश्विन में नीमच की छावनी वकालत पर १००) माहवार व दीगर लवाजिमा अमले वगैरह के साथ भेजे गये और विक्रमी १६११ के ज्येष्ठ कृष्णाऽऽ

तक वहां रहे फिर मैं नीमच गया और काकाजी उदयपुर आये.

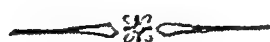
महाराणाजी श्री सर्दारसिंहजी के अहदमें विक्रमी १८९५ से १८९८ तक आसींद रावत दूल्हासिंहजी और काकाजी अचलदासजी ने रियासत की भांजगड़ की थी और महताजी रामसिंहजी जो प्रधान थे, उनसे मुआफ़क़त रखते थे. विक्रमी १९११ में बनेड़े राजा संग्रामसिंहजी गैर-हाज़िर हुए, उनके हक़दार बामण्ये गुलाबसिंहजी थे, मगर औरतों की साज़िश से गोविन्दसिंहजी, जो उनके भाइयों में से थे और जयपुर इलाक़ह कालसांस के जागीरदार थे; बनेड़े की गद्दीपर बैठ गये. तब महता शेरसिंहजी यहां से फ़ौज लेकर बनेड़े गये, काकाजी अचलदासजी व पंचौली मथुरादासजी (बख्शी) साथ थे और कर्नेल् हेनरी लारेन्स साहिब व कर्नेल जार्ज लारेन्स साहिब को इस मामले में ख़रीते लिखे गये. इस पर दोनों साहिब बनेड़े तशरीफ़ लाये और गोविन्दसिंहजी को कहलाया कि गढ़ से उतर कर हमारे साथ दर्बार में हाज़िर हो और बग़ैर मंजूरी गद्दीपर बैठ जाने का क़ुसूर मुआफ़ कराओ; वर्ना तोपें शुरू होती हैं. इसपर गोविन्दसिंहजी गढ़ से उतर कर साहिब के पास हाज़िर होगये और उनके साथ उदयपुर आये; श्री दर्बार ने ५००००) पचास हज़ार रुपया जुर्माना कर क़ुसूर मुआफ़ फ़र्माया. और कालसांस गुलाबसिंहजी के बेटे को दिला दिया.

अचलदासजी की पहिली शादी रामलालजी नागौरी की बहिन से हुई. दूसरी खुशहालसिंहजी पचवारया की बहिन से, जिनसे दो लड़कियां

हुई, बड़ी रतनबाई, जिनकी शादी जैतसिंह चूडावत से हुई और इनके तीन पुत्र हैं, सुखलालजी १, पद्मसिंहजी २, जवानसिंहजी ३ और छोटी सूरजबाई जो खुमानसिंहजी गुड़ेल्या को ब्याही गई थी. विक्रमी १६१८ में काकाजी ने मेरे छोटे भाई बख्तावरसिंहजी को गोद लिया फिर दूसरी बहू के देहान्त बाद करमाबाई को पासवान बनाया, जिससे तीन लड़के हुए पद्मसिंहजी, देवीसिंहजी और तेजसिंहजी, लेकिन् अफसोस कि इनमें से पद्मसिंहजी जो अदालती कार्रवाई में अच्छे होशियार थे और कानून भी जानते थे ३३ वर्ष की उम्र पाकर पौष शुक्ला १ सं० १९४८ के दिन रामसरण हुए, छोटे देवीसिंहजी जो हिन्दी में अच्छे होशियार थे, पहलवानी में भी अच्छी महारत थी, यह भी संवत् १९५० के चैत्र वद १२ को इन्तकाल कर गये और सबसे छोटे तेजसिंहजी जो दवादारू जन्त्र मन्त्र जो अक्सर गृहस्थ के घर में जियादह काम में आते हैं जानते थे, कुछ अंगेजी फार्सी भी पढ़ी थी सिर्फ २३ वर्ष के हो सं० १९४७ के भाद्रपद शुक्ला ५ के दिन इन्तकाल कर गये.



दूसरी फ़स्ल.



भाई रामसिंहजी और लक्ष्मणसिंहजी का हाल.

मेरे बाबा सूरतसिंहजी सहीवाले के तीन पुत्र थे, बड़े रामसिंहजी जो विक्रमी १८९३ माघ शुक्ल १५ के दिन पैदा हुए; ये बहुत खुश अख़्लाक़ व बुर्दबार थे और हमेशह श्री दर्बार की ख़िदमत में मुस्तइद रहते थे. महाराणाजी श्री शम्भुसिंहजी ने विक्रमी १९२८ श्रावण शुक्ल ६ के दिन तोपख़ाना इनके सुपुर्द किया, जो अब तक इनके छोटे भाई लक्ष्मणसिंहजी के एहतिमाम में है. कुछ अर्से तक बुड़ तोपें भी इनके तहत में रहीं. व धर्मसभा के तमाम इख़्राजातकी निगरानी इनके सुपुर्द हुई.

विक्रमी १९२६ में महाराणाजी श्री शम्भुसिंहजी ने एक बलेना घोड़ा बख़्शा वह अबतक मौजूद है. फिर महाराणाजी श्री सज्जनसिंहजी के साथ ईडर, बम्बई और दिल्ली वग़ैरह तथा मेवाड़ के दौरे में भी ये बराबर साथ रहे थे. विक्रमी १९३५ पौष में दौरे में से बीमार होकर आए, और माघ कृष्णा २ को इन्तकाल होगया, जिससे बहुत रंज वो ग़म हुआ, उनके पुत्र मोतीसिंहजी जो विक्रमी १९२५ कार्त्तिक कृष्णा १४ के दिन पैदा हुआ, हिन्दी व फ़ार्सी पढ़ता है. और इनके विक्रमी १९५२ के भाद्रपद कृष्णा ६ के दिन पुत्र हुआ, जिसका नाम बख़्तसिंह रक्खा गया है.

लक्ष्मणसिंह जी का जन्म विक्रमी १८९८ माघ कृष्णा ८ के दिन

हुआ, ये बहुत साफ मिजाज हैं. इनके हिन्दी हुरूफ पट्टे पर्वाने के हमारे खानदान में सब से उम्दा व खूबसूरत हैं, फार्सी अंग्रेजी भी इन्होंने शुरू की थी, मगर जल्दी ही छोड़ दी इनकी शादी झालरापाटन के प्रधान पचौली देवकृष्णजी की बेटीसे हुई, तोपखानका इन्तिजाम दुरुस्त है. इसके इन्आम में महाराणाजी श्री शम्भुसिंहजी ने विक्रमी १९३० में मोतियों की कंठी अता फरमाई और विक्रमी १९३० में दो बड़ी तोपें लेकर सोनान्य भेजे गये, जिससे मोगिये बावरी वगैरह भाग गये और फौज चार महीने तक गाव को घेरे रही फिर हुक्म होने पर बाबाजी शक्तिसिंहजी को उदयपुर लाये.

विक्रमी १९३२ में जब बागौर बाबाजी सोहनसिंहजी की अदूल हुक्मी के सबब फौज यहा से भेजी गई, उसमे लक्ष्मणसिंहजी व महता माधवसिंहजी फौज बख्शी भी साथ थे. साहिब ने बागौर को घेरा देकर हुक्म दिया कि सोहनसिंहजी अगर चार घण्टे में न आये तो तोपें शुरू हो जायगी, जब चार घंटे होगये और महाराज न आये तो छः घुड़नाली तोपे चलने लगीं. बत्तीस गोले गढ़की दीवार में लगे, तब महाराजने बागौर के ब्राह्मणों को भेजकर कहलाया कि हम आते हैं. तोपें बन्द की गई महाराज आये, चारों तरफ गार्ड खड़ाकर उनसे हथियार रखवा लिये. इसके बाद पालकी मे बिठा ज़ेर हिरासत आबू भेज दिया यहा से बनारस भेजे गये.

इसी साल जुटाकी पाल के भील बदल गये, तब मेजर गनिंग साहिब

ने यहां से फ़ौज मंगाई, लक्ष्मणसिंहजी व जानमुहम्मदजी सिन्धी फ़ौज लेकर भेजे गये; पाल मांडवा, वाखेल कोदरमाल को जा घेरा. तमाम भील भाग गये और ख़ास ख़ास भीलों के मकान साहिब के हुक्म मुआफ़िक़ जला दिये गये. फिर ग़ानिंग साहिब काइम मुक़ाम एजेण्ट उदयपुर मुक़र्रर हुए और कोटड़े से मेकरी साहिब वहां आये, तब इनके हुक्म मूजिब कुल ज़राअत व मवेशी इकट्ठी कराकर बिकवाई गई. और रुपये ख़ज़ाने में जमा हुए. दो महीने ये वहां रहे; फिर गोराणे डेरे किये. वहीं उदयपुर से हुक्म आया कि फ़ौज लेकर खमनौर हाज़िर हो और महता गोपालदासजी आते हैं, वह कहें सो करना. तब खमनौर पहुंचने के बाद गोपालदासजी का काग़ज़ आया कि तोपें हम लाते हैं, तुम फ़ौज लेकर श्रीनाथद्वारे के पास नाथुवास में दिन निकलने के पेश्तर आजाना. चुनान्चि ये वहां से रातको रवानह होकर ओड़न में सामान के ऊंट छोड़कर जरीदा फ़ौज लेकर नाथुवास झरना के दर्वाज़े पर जा मौजूद हुए तोपें इस वक़्त तक नहीं पहुंची थीं.

गोस्वामीजी महाराज को कोठारिये रावत केशरीसिंहजी व महता गोकुलचन्दजी धर्म कर्म कर लालबाग़में ले आये. रातको ग़ानिंग साहिब बेदले राव बख़्तसिंहजी, राय महता पन्नालालजी व दूसरे सर्दार लालबाग़ में आये. महताजी पन्नालालजी ने फ़ौज समेत लक्ष्मणसिंहजी को अपने पास बुलाया. ये नाथद्वारे के अन्दर होकर वहां पहुंचे, तब हुक्म दिया कि लालबाग़के चारों तरफ़ सवारों का घेरा दे दो. घेरा दिलादिया गया,

इतने मे तोपें भी आगईं. महता गोपालदासजी व लौनार्गिन साहिब ने उदयपुर से आई हुई फौज लक्ष्मणसिंहजी के साथ की फौज लेजा कर मन्दिर के दर्वाजे पर तोपें लगादीं मन्दिर में सौ सवासौ हिन्दू जवान थे, उन्होंने किवाड न खोले थोड़ी देर सब खड़े रहे फिर शम्भुपल्टन के जवान नवनितलालजी की खिड़की तोड़कर भीतर घुस गये और सूर्य-पौल नामी दर्वाज़ा खोलकर गोस्वामीजी के सिपाहियों को निकाल दिया और सर्कारी बन्दोबस्त कर लिया. यह खबर बाग मे सुनी तो केलवे ठाकुर ओनाड़सिंहजी और लक्ष्मणसिंहजी को हुक्म दिया कि गोस्वामीजी को कैद करलो. तब भीमपल्टन और खैरवाड़े की पल्टन ले बाग मे गये गोस्वामीजी के पास चालीस व्रजवासी तलवारबन्द थे, उन्हें दूर हटाकर गोस्वामीजी को पालकी मे बिठाकर बाहर लाये और उनके लालजी महाराज श्रीगोवर्द्धनलालजी को जो अब नाथद्वारे की गद्दीपर हैं, माजिर के पास भेज दिया. बाद जाब्ते के साथ गोस्वामीजी को उदयपुर ले आये, फिर इनको यहा से याने मेवाड़ से खारिज कर दिये गये और इनके पुत्र गद्दी पर बिठाये गये.

बाबाजी गिरधारीलालजी के बेटे धनलालजी के सिर्फ एक बेटी पद्मकुंवर बाई हुई जो जालिमचन्दजी दरोगा नगीनाबाड़ी को ब्याही है. दादा भाई धनलालजी ने लक्ष्मणसिंहजी को गोद लिया है. इनका बेटा रत्नसिंह विक्रमी १९३१ मृगशिर कृष्णा ११ को पैदा हुआ है. फार्सी हिन्दी पढ़ा है और हिन्दी का ज्ञान अच्छा हो गया है.

लक्ष्मणसिंहजी से छोटे श्रीकृष्णजी बारह वर्ष की उम्रमें इन्तिक़ाल कर गये.

—※○※—

फ़स्ल तीसरी.

भाई बख्तावरसिंहजी के हालमें.

मेरे छोटे हक़ीक़ी भाई बख्तावरसिंहजी विक्रमी १८९८ माघ शुक्ल ८ के दिन पैदा हुए. इन्होंने हिन्दी हिसाब किताब वग़ैरह गौरदेव शंकरजी से अंग्रेज़ी खूबचन्दजी बाबूसे शुरू की. विक्रमी १९११ में मेरे साथ नीमच आये, वहां भी अंग्रेज़ी सीखते रहे. उदयपुर आनेके बाद लाला कृष्णदयालजी वग़ैरह से फ़ार्सी पढ़ी. महाराणाजी स्वरूपसिंहजी की ख़िदमत में हाजिर रहा करते थे. विक्रमी १९१८ में काकाजी अचलदासजी ने इन्हें गोद लिया, विक्रमी १९२४ में महाराणाजी शंभुसिंहजी ने नाथद्वारे के बड़े और छोटे मन्दिरों की बाहमी तकरार रोकने के लिये महीने तक वहां रहकर हुक्म मुवाफ़िक़ तामील की.

विक्रमी १९२७ में महाराणाजी श्री शम्भुसिंहजी के साथ अजमेर गये, फिर लौटते हुए भीलवाड़े के मक़ामसे इनको शाहपुराके पट्टे काछोलाके ख़ालिसे पर भेजा, जिसका मुफ़स्सल हाल दूसरे बाबकी दूसरी फस्ल में लिखा

गया है. कांडोला आठ महीने तक ग्वालिये पर दीवानी फौजदारी वगैरह का काम अंजाम दिया बादहू उदयपुर वापस आये फिर इनको विक्रमी १९२८ श्रावण में आबू की विकालत पर मुकर्रर फर्माया, इसलिये आबू गये और वकील पहली लालचन्दजी से चार्ज लिया इन दिनों आबू पर एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूताना के कर्नल ब्रुक साहिब बहादुर थे, वह बख्तावरसिंहजी से हमेशह खुश रहे जैसा कि उनकी चिट्ठी से साफ ज़ाहिर है

जब ब्रुक साहिब बीकानेर तशरीफ ले गये तो महाराजा डूंगरसिंहजी ने बख्तावरसिंहजी को एक घोड़ा, सिरोपाव और मोतियों की कंठी अता फर्माई, बादहू में ब्रुक साहिब को पेन्शन हुई और सर लुइ पेली साहिब एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूताना मुकर्रर होकर आये वह भी बावुजूद उस नेकमिज़ाजी के कि जिससे अंग्रेज़ भी खफ़ा करते थे, इनसे खुश रहे. और महाराणाजी श्री सज्जनसिंहजी को इनकी सिफ़ारिश लिख गये जब बीकानेर महाराजा डूंगरसिंहजी विक्रमी १९३१ में सर लुइ पेली साहिब की मुलाकात के लिये आबू पर तशरीफ लाये, तो उस वक्त भी बख्तावरसिंहजी को मोतियों की कंठी व सिरोपाव दे गये. फिर लायल साहिब (सर अल्फ्रेड लायल लेफ्टिनेन्ट गवर्नर इलाकेजात मग़रबी व शुमाली) एजेण्ट राजपूताना मुकर्रर हुए इनके वक्त टोंक के मुआमले में विक्रमी १९३१ के फाल्गुन महीने में नीमाहेड़ा जाकर बख्तावरसिंहजी नन्दपुर आये फिर वहाँ बीमार होजाने के सबब आबू न गये, तब बाबा

फूलचन्दजी इनकी जगह भेजे गये, लेकिन साहिब ने दुबारा लिखकर विक्रमी १९३३ के भाद्रपद में आबू बुलाया.

आबू जानेके पहिले विक्रमी १९३२ के आश्विन में बागौर महाराज सोहनसिंहजी की सर्कशी के सबब जो उनकी गिरिफ्तारी के लिये फ़ौज भेजी गई थी और मेजर गनिंग साहिब खैरवाड़े की कम्पनी लेकर गये. उस वक्त बख्तावरसिंहजी को श्री दर्बार ने फौज मुसाहिब मुक़र्रर कर बागौर भेजा था और फौजमें महता माधवसिंहजी, भाई लछमण-सिंहजी और लौनागिन साहिब वग़ैरह थे. श्री दर्बार के हुक्म मूजिब साहिब की सलाह से तामील की. महाराज को गिरिफ्तार कर उदयपुर भेज दिया जो फिर बनारस भेज दिये गये और बागौर में सर्कारी बन्दो-बस्त कर दिया. फिर कार्त्तिक में गोविन्दसिंहजी महता को चार्ज देकर उदयपुर आये. मृगशिर में लार्ड नार्थ ब्रुक साहिब के आने पर उनकी महमानी में मुक़र्रर हुए. इसके बाद कप्तान येट साहिब के साथ साले डाइलाक़ह मेवाड़ और कृष्ण करेरी इलाक़ह टौंक की सर्हद के फ़ैसले के वास्ते भेजे गये; फ़ैसला होनेपर वापस आये. आषाढ़ में जोधपुर की निस्बत के बाबत महताजी पन्नालालजी व पुरोहित पद्मनाथजी को रेज़ि-डेण्ट साहिब के पास आबू भेजा, बख्तावरसिंहजी भी इनके साथ भेजे गये थे.

इससे पहिले महाराणाजी श्री सज्जनसिंहजी मेरी हवेली पधारे, तब बख्तावरसिंहजी को मोतियों की कंठी अता फर्माई.

जब विक्रमी १९३३ के सालमें बख्तावरसिंहजी आबू गये, इनके जाने बाद लायल साहिब छ महीने की रुखसत लेकर विलायत गये तो उनकी जगह वाल्टर साहिब आये थे. फिर लायल साहिब की जगह पर सर एडवर्ड ब्राडफ़ोर्ड साहिब तशरीफ लाये, ये बख्तावरसिंहजी पर पूरी मिहर्बानी रखते थे और इसी तरह कर्नेल वाल्टर साहिब की मिहर्बानी रही. विक्रमी १९३७ में ब्राडफोर्ड साहिब के विलायत जाने पर फिर काइम मकाम एजेण्ट गवर्नर जेनरल कर्नेल वाल्टर साहिब मुकर्रर हुए और विक्रमी १९४१ में राजपूतानह के मुस्तकिल रेज़िडेण्ट मुकर्रर होगये इन साहिबान ज़ीशान के खुश रहने का हाल उनकी चिट्ठियों के तर्जुमे से जो नीचे दर्ज किये जाते हैं, ज़ाहिर है विक्रमी १९४६ में कर्नेल वाल्टर साहिब को पेन्शन होगई और ट्रेवर साहिब रेज़िडेण्ट मुकर्रर हुए. इनकी कद्रदानी इससे ज़ाहिर है कि विला सिफारिश व दर्ख्वास्त विक्रमी १९४९ सन् १८९२ की मई में रायबहादुर का ख़िताब सर्कार से दिलाया जिसकी सनद की नकल असनाद में दीगई है

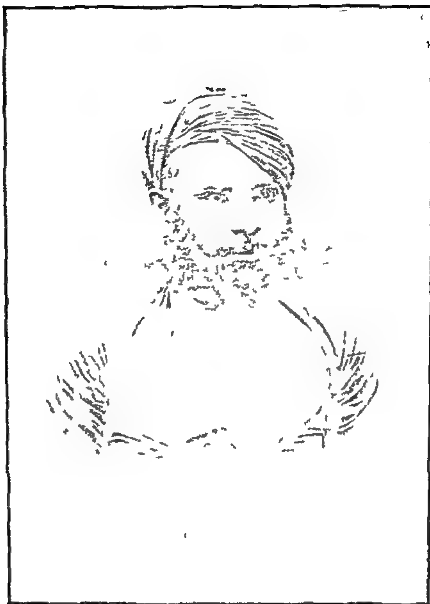
बख्तावरसिंहजी को साहिब रेज़िडेण्ट के दौरेमें हर साल जानेमें तमाम अज़लाये राजपूतानह की अच्छी सैर हुई, सिर्फ़ जैसलमेर की तरफ़ नहीं गये. आगरे और दिल्लीके दर्बार में ये साहिब के साथ थे, आगरे के दर्बार में रीवा महाराज रघुराजसिंहजी आये थे, वहां बख्तावरसिंहजी उनसे बराबर मिलते रहे और महाराजा साहिब पूरी मिहर्बानी का बर्ताव करते थे. आबू जानेके बाद इनको सितार का शौक़ जियादह हुआ और

इल्म मुसीकी की बारीकियों की जुस्तजू करते करते अब अच्छी वाक़फ़ियत हासिल की है, हाल में एक किताब ताल सुरसमूह नामी सितार बजाने के क़ाइदों की बम्दह बनाई है, जिससे तमाम राग रागिनी मए ताल सुर वग़ैरह के बहुत जल्द समझ में आजाते हैं.

इनकी पहिली शादी देवगढ़ वाले पंचौली धनलालजी गुडेलया की छोटी बेटी से हुई, जिससे दो पुत्र हुए. बड़े हमीरसिंहजी जो विक्रमी १६१६ कार्तिक कृष्ण ९ के दिन पैदा हुए. इन्होंने उदयपुर में हिन्दी, फ़ार्सी, अंग्रेज़ी पढ़ी. फिर तीन वर्ष तक अजमेर कालिज में पढ़कर इन्ट्रेन्स पास किया. फिर आबू रेजिडेन्सी के दफ़्तर में कुंवर लक्ष्मणसिंहजी के जाने बाद ४ महीने तक उनकी जगह काम दिया. सन् १८८६ ई० में महाराणाजी श्री फ़तहसिंहजी दाम इक़बालहू ने खातिन्दी फ़र्माकर इलाहाबाद म्यूअर कालिज में पढ़ने को भेजा. वहां इन्टरमीडियट में पास हो माह मार्च सन् १८९१ में बी० ए० का इम्तिहान दे डिग्री हासिल की, एल. एल. बी. के इम्तिहान के वास्ते कानून भी पढ़ा, लेकिन इम्तिहान नहीं दे सके.

इनकी शादी बख़्शी मथुरादासजी की बेटी से हुई है, इनके एक लड़की विक्रमी १९३७ के कार्त्तिक में पैदा हुई और एक लड़का भंवर गोविन्दसिंह विक्रमी १९४२ भाद्रपद कृष्ण १० को जन्मा है और दूसरा लड़का विक्रमी १९४७ पौष शुक्ल ८.

बख़्तावरसिंहजी के दूसरे पुत्र पृथ्वीसिंहजी संवत् १९२२ के जेष्ठ शुक्ला ८ को पैदा हुए, कुछ हिन्दी पढ़कर संस्कृत पढ़ना शुरू किया, पं० हरीनाथजी भटमेवाड़ा से लघुकौमुदी रघुवंश इत्यादि पुस्तकें हवेली पर पढ़ते रहे, मदरसे में अंग्रेज़ी व हिन्दी पढ़ते थे, फ़ारसी भी पढ़ी कि अच्छी तरह उर्दू लिख पढ़ सक्ते थे फिर श्री जी हुज़ूर के हुक्म से महद्राजसभा में काम सीखने जाने लगे, इनकी शादी महासानीजी रतनलालजी की छोटी बेटी से हुई



स्वर्गवासी भाई हमीरसिंहजी सहीवाला बी. ए.
पूर्व प्राईवेट सेक्रेटरी राज्य उदयपुर (मेवाड़)

सहों के काम में वाकफियत अच्छी करली थी और ख़त भी बहुत उमदा था कि जिससे अपने खास मनसबी काम को अच्छी तरह अंजाम देता था और संस्कृत पढ़ने की वजह से जो तहरीरें बाज़ वक्त बाजे महात्माओं के नाम श्री जी हुजूर दाम इकबालहू की तरफ से संस्कृत भाषा में कविराजजी शामलदासजी की मारफत लिखी जाती थी वह भी लिख सक्ता था और इसी वजह से कविराजजी एक मरतबा महरबानी के साथ यह जाहिर किया था कि अब तुम लिख सक्ते हो इस वास्ते मैं श्री जी हुजूर दाम इकबालहू से अर्ज कर दूंगा कि संस्कृत पत्र भी अब सहीवालों के यहां से ही लिखने का हुक्म हो जाय क्योंकि इनके घर में यह संस्कृत लिखने वाला मौजूद है।

निहायत अफसोस है कि इनकी जिन्दगी ने बिलकुल वफा न की शुरू जवानी २४ वर्ष की उमर में बआरजे बवासीर मुब्तला होकर यहां से ब ग़र्ज तबदील आबोहवा आबू रवाने हुए और रास्ते में अजमेर में ठहर कर अमरोहे के हकीम महोम्मदहसन साहब का इलाज करना शुरू किया-लेकिन कजाइलाही से दवा ने कुछ फायदा न किया और मृगशिर शुदी ७ संवत् १९८८ को इस संसार से इन्तकाल कर गये, यह रंज कुनबे भर के वास्ते बहुत सख्त हुआ जिसका बयान नहीं हो सक्ता, इनकी नेक आदत और हुस्न आखलाक से वह लोग अच्छी तरह वाकिफ हैं जिनको उनसे मिलने का इत्तिफाक हुआ।

बख्तावरसिंहजी ने दूसरा विवाह विक्रमी १९३८ के आषाढ़ मे

नरायणा इलाके जयपुर पंचौली नारायणबख्शजी कानूगो की बेटी से किया जिनका कज़ाए इलाही से विक्रमी १९४२ आषाढ़ कृष्ण १ को इन्तिकाल हो गया.

संवत ५१ में देलवाडे राज जालिमसिंहजी ने खुद कर्नेल वायली साहिब रेज़ीडेन्ट मेवाड़ के सामने चंद शख़्शों को अपनी तरफ से रिशवत देना जाहिर किया इसमें भाई बख्तावरसिंहजी का नाम भी लिखाया इससे कर्नेल ट्रेवर साहिब एजेंट गवर्नर जेनरल राजपूताना ने बख्तावरसिंहजी को आबू की वकालत से मौकूफ़ कर दूसरा वकील बुलाया, चुनान्चे मोतीलालजी म्हासाणी जो पहिले मांडलगढ़ हाकिम थे आबू वकील मुकर्रर किये गये और बख्तावरसिंहजी दो बरस तक बेकार रहे, फिर भैंसरोड रावत प्रतापसिंहजी के गुजरने पर भैंसरोड़ खालसे पर गए, वहां से वापिस आकर आसींद मुनसरिम मुकर्रर हुए बवजे नाबलगी रावत रंजीतसिंहजी के जो आसींद रावत अर्जुनसिंहजी के कुरावड़ से गोद आये हैं आसींद में १२०) माहवार तनख्वाह के मिलते हैं अलावा खर्च अमला के.

कानजी के नाम साहपुरे राजा उम्मेदसिंहजी के कागज़ वि० १८०७ के सरकारी दफ्तर में कहीं देखने में आये उन में लिखावट हस्ब ज़ैल है जिससे उस वक्त के बर्ताव का हाल और श्री जी हजूर की खावंदी का अन्दाजा हो सकता है.

सिद्धश्री श्री उदयपुर शुभस्थाने सरवोपमा ठाकुरां श्री कानजी जोग लि० शाहपुरा थी राजाजी श्री उम्मेदसिंह जी केन जुहार बांचजो

अठा का समाचार श्री जी की कृपा थी भला छे आपका सदा चाहिजे तो माने परम सतोष होवे आप ठाकुर छे घणी वात छे मांके आप उपरान्त कोई थाल (न) छे हेत इकलास राखे छे जी सु घमेस रखावसी अपरच हकीगत तोआपने लिखी ही छै और गावा का ब्यौरा लिखी मोकलो छेजी माफिक अर्जकरे उठन्थी मिताव कराय मोकल्या को हुक्म होसी

एक कागजके अखीर में इस तरह से लिखा है कि अठे हुक्म आपको छे हुजायगी कोई वात न जानसी और आडी ओलो दोनो कागजो मे राजाजी मौसूफ ने अपने हाथ से इस तरह पर लिखा है श्री ठाकुरां सु म्हारो जुहार मालूम हो हकीकत कागज सू जाहिर होसी सो कारण तोसारो वणा ही को छे हुनो श्री जी को कीधो मिनप छू.

अँग्रेजी चिट्ठियों के तर्जमे.

एजेट गवर्नर जनरल कर्नेल ब्रुक साहिब की चिट्ठी.

—•◊•—

बख्तावरसिंह महीवाला जो हिज हाईनेस महाराणा साहिब बहादुर मेवाड़ की तरफ से राजपूतानह एजेंसी मे वकील है इस जगह मेरे उहदह-दारी के जमाने मे हाजिर रहे, मैं वरसो से इनसे वाकिफ हू और हमे शह उनके तरीके अदाये फराज खुद से वहुत खुश रहा हू, वे वहुत मुअजिज देशी शरीफ आदमी अच्छे खानदान के है और मैंने हमेशा उन को वहुत मुतवज्जह और खुश अख्लाक और मेरी ख्वाहिशो को

मदद देने के वास्ते हमेशह मुस्तइद पाया.

ता० १३ जून सन् १८७३ ई० मुक़ाम आबू. } दस्तख़त जी. सी. ब्रुक़ क़ायम मुक़ाम एजेंट गवर्नर जेनरल

मिस्टर लाइल साहिब की चिट्ठी.

बख़्तावरसिंह वकील मेवाड़ से मैं राजपूताने में तीन वर्ष से ज़ियादह अरसे से वाक़िफ़ हूं, मैं समझता हूं कि वे अपनी रियासत की तरफ़ से होशियारी और दयानतदारी से वकालत करते हैं और मैं इस मौक़े पर उनकी ख़िद्मात ख़ुशी से क़ुबूल करता हूं.

ता० १७ मार्च सन् १८७८ ई० अजमेर. } द० ए० सी० लाइल एजेंट गवर्नर जेनरल राजपूताना.

सर कर्नेल ब्राड फ़ोर्ड साहिब की चिट्ठी.

ठाकुर बख़्तावरसिंह जनाब महाराणा साहिब उदयपुर की तरफ़ से जब से मैं राजपूताना की एजेंट गवर्नर जेनरल के ओहदे पर आया हूं यानें सन् १८७८ ई० के मार्च महीने से यहां वकील हैं, मैं बड़ी ख़ुशी

से उस उम्दा और वफादाराने तरीके की तसदीक करता हू, जिस तरीके से इन्होने अपना काम बराबर अंजाम दिया है और होशयाराने अपने दर्बार के फवाइद पर नज़र रक्खी है इन्होंने हमेशे मुझे पूरा इत्मीनान दिया है और मैं एतिबार के साथ अपने जानशीनो से सिफ़ारिश करता हू. ठाकुर बख्तावरसिंह पचायत आला के निहायत कारगुजार और बेतरफदार मेम्बर हैं

द० कर्नेल ए० आर० सी० ब्राडफोर्ड एजेंट गवर्नर जेनरल राजपूताना | ता० २२ मार्च सन् १८८७ ई० मु० आबू.

कर्नेल वाल्टर साहिब की चिट्ठी.

मैं सहीवाला ठाकुर बख्तावरसिंह को जो राजपूताने एजेन्सीके सदर मुक़ाम मे वकील मेवाड़ है बहुत वर्षों से जानता हू, यह बहुत कमगो और अक्लमन्द व मेवाड़ के उमूल और आदमियो से खूब वाक़िफकार हैं और दर्बारके वफादार मुलाजिम हैं और वकीलों की पचायत आला के अमूरात बजालाने के वास्ते यह एक बहुत उम्दा आदमी हैं.

मैं इनकी बहुत ताज़ीम करता हूं और चाहता हूं कि वे बहुत काम याबिए और आइन्दह ख़ुशी हासिल करें.

द० कर्नेल सी. के. एम. वाल्टर एजेंट गवर्नर जेनरल राजपूताना } ता० २२ मार्च सन् १८९० ई० आबू.

कर्नेल वाल्टर साहिब एजेंट मेवाड़ की चिट्ठी.

बख़्तावरसिंहजी से जो मेवाड़ दर्बार की तरफ़ से साहिब एजेंट गवर्नर जेनरल बहादुर के पास वकील हैं मैं कई बरस से वाकिफ़ हूं जब मैंने आठ महीने के वास्ते सर ए. सी. लाइल साहिब बहादुर की जगह काम किया और फिर बीस महीने के लिये जब कर्नेल ब्राड फोर्ड साहिब बहादुर के रुख़सत पर तशरीफ़ लेजाने पर मैं काइम मक़ाम एजेंट गवर्नर जेनरल रहा वे वकील थे, वे शरीफ़ आदमी हैं जिनकी मुझको बहुत क़दर है इनकी आदत सुलह अन्देश और बुर्दबार है और वे अपने सुपुर्द किये हुए कामों को बहुत ही ख़ातिरख़्वाह तौर से अंजाम देते हैं.

द० कर्नेल सी. के. एम. वाल्टर रेज़ीडेंट मेवाड़. } ता० २७ मार्च सं० १८८५ ई० मु० उदयपुर

मेजर फ्रेजर साहिब की चिट्ठी।

मैं ठाकुर बख्तावरसिंह को जब से वह आबू पर है बहुत वर्षों से जानता हूं, कर्नेल सर ब्राडफोर्ड साहिब और कर्नेल वाल्टर साहिब साबिक एजेंट गवर्नर जेनरल का उनकी निस्बत बहुत उम्दा खयाल रहा है चुनाचि उन चिट्ठियों मे जो साहिबान मौसूफ ने उनको दी है दर्ज है, इन्होंने अपना काम बहुत उम्दगी से किया है, हरतरह शरीफ आदमी है और इनकी रियासत मेवाड की वाकफियत से मुझे बडी मदद मिली है, मै उनको सफाई दिल से अच्छी तरह चाहता हूं

ट० ग० आई० फ्रेजर अव्वल एसिस्टेंट एजेंट गवर्नर जेनरल राजपूताना। ता० २ अप्रेल सन् १८९० ई० मु० आबू।

फस्ल चौथी.

चरण गुमानसिंहजी व भीमसिंहजी

मेरे बड़े पुत्र गुमानसिंहजी विक्रमी १९०८ पौष कृष्णा ५ को पैदा हुए, बुजुर्गों के लाड़ व प्यार से इनकी तालीम मे कोताई रही, ताहम हिन्दी लिख पढ़ सक्ते हैं.

इनके बड़ा पुत्र भवर गुलाबसिंहजी विक्रमी १९३३ के माघ शुक्ला १ को पैदाहुआ, हिन्दी फार्सी किसी कदर पढ़कर इनके मामू मोतीलालजी महासानी

साबिक़ हाकिम मांडलगढ़ हाल वकील रेजीडेन्सी मेवाड़ के पास कुछ अर्से तक ज़िले में रहे जिससे वाक़फ़ियत बहुत बढ़ गई, अब दो तीन वर्षसे महासानी रत्नलालजी की तरफ़ से हुक्म खर्चकी ओवरी का काम करते हैं और श्री जी हुज़ूर दामइक़बालहू की चाकरी में सफ़र में भी जाया करते हैं, अलावा इसके शम्भूनिवास अर्दली और भील कम्पनी और छब्बीस के रिसाले के काम में महासानीजी को मदद दिया करते हैं.

गुमानसिंहजी की बड़ी लड़की अज्जी बाई विक्रमी १९३७ के फाल्गुन में और दूसरी जसबाई विक्रमी १९३९ के मृगशिर में पैदा हुई और दूसरा पुत्र मदनसिंह विक्रमी १९४२ के जेष्ठ शुक्ल ४ के दिन पैदा हुए, दोनों बाइयों की शादी का हाल ऊपर दर्ज किया गया है और मदनसिंहकी सगाई कपड़ा के भंडार के दरोग़ा दलीचन्दजी की लड़की से की है.

मेरे दूसरे पुत्र भीमसिंहजी का जन्म विक्रमी १९१९ के आषाढ़ शुक्ल ४ को हुआ, इन्होंने मदरसेमें हिन्दी फ़ार्सी पढ़ी और हवेली पर भी लालाजी गंगाप्रसादजी से फ़ार्सी पढ़ते रहे, महाराणाजी श्री सज्जनसिंह के हुक्म से विक्रमी १९३८ से ४० तक दो वर्षके लिये अदालत सदर दीवानी में पचसीजी मथुरादासजी के पास काम सीखने को जाया करते थे, विक्रमी ४४ के आसोज शुक्ल ८ को श्री जी हुज़ूर दामइक़बालहू ने इनको राजनगर का हाकिम मुक़र्रर फ़र्माया चुनान्चे विक्रमी १९४७ के श्रावण शुक्ल १२ तक वहां का काम अंजाम दिया फिर राजनगर से कुम्भलगढ़ बदल दिये फिर विक्रमी १९५१ का आसोज बदी २ को श्री जी हुज़ूर दामइक़बालहू ने

बनजर परवरिश १५०) रुपया माहवार की तनख्वाह पर कुम्भलगढ़ से मांडलगढ़ बदल दिया सो अबतक वहाका काम अजाम देते हैं, राजनगर में ६०) रुपया माहवार मिलता था और कुम्भलगढ़ में ७५) मिलते रहे

इनकी पहिली शादी पचौली खुमानसिंहजी चूडावत की बेटी से हुई थी, उनका विक्रमी १९४२ के आषाढ़ कृष्णा ८ को इन्तिकाल होगया उनसे एक लडकी मोहन बाई मौजूद है, दूसरा विवाह देलवाड़े विक्रमी १९४६ के वैशाख में हुआ, इनसे एक लडकी गनेर बाई विक्रमी १९५२ माघ वद ५ और एक लडका विक्रमी १९५४ माघ वद १० को पैदा हुआ.

॥ श्रीरामजी ॥ श्री गोरधननाथजी.

॥ श्री एकलिंगजी प्रसादात्. ॥ श्री गणेशजी प्रसादात्.

नकल

मयरिन श्री म्हाराजाधीराज म्हाराणाजी श्री १०८ श्री भींमसीगजी आदेसात् प्रत दुवे चोवपा अेकलींगदास भट अमरेस्वर अयच ॥ सुम्वीया

नंदराम व्यास भट्ट बलभद्रास लालजी श्री जी का भीतरीया जात साचोरा समत १८५८ वर्षे फागणवीदी ५ सो श्री जी हे मंदर माहे पधराया जदी पंचोली कानजी छीतरोतरी वाडी श्री दरबार थी श्री जी पदारया जदी मपा दीदी आसरे बीगा ३ तीनरे माजने वाडी हाट धरमसाला वाडी गर बार बावड़ी सुदी मपाई सो श्री रामाअरपण करे सुरे रोप दीदी सो लोपाअेगा नहीं दूजी जाअेगा पडत सलावटारी तथा चंद्रावतारी जाअेगा सुदी रामाअरपण करे दीदी लागत वीलगत धरा रुख डंड डोर वसीवान रहे तथा कोतवालरी लागत चोलण वेगा नहीं, सलोक आपदतं प्रदतं जो लो मंती वसुधरा जे नरा नरकयांती यावत चंद्र दीवाकरा सं० १८५९ वर्षे मासोतंममासे आश्वन मासे कृष्णपत्ते तीथो अष्टमी शुक्रवासरे श्रीरस्तु काल्याण मस्तु.

बीजोलियां की हवेली के पास कानजी की हाटां मशहूर है लेकिन् हमारे पास कोई ऐसी सनद न थी के जिससे इन हाटों का हमारे बुजुर्ग कानजी से कुछ ताल्लुक सावित होता लेकिन् इस सनद से जो अदालत दीवानी में एक मुकद्दमे में पेश हुई थी ये बात अच्छी तरह सावित है बल्कि अलावा इन हाटों के बावड़ी व बाडी भी कानजी की मालूम हुई जो अब श्रीनाथजी वालोंके कब्जे में है.

Oodeypore 11 May 1865

The bearer Urjan Singh Saheewala has been long employed by the Durbar.

Finding the arrangements for the conduct of the law courts at Oodeypore, becoming distasteful or rather opposed by a party whose nefarious and corrupt practices were being checked and suppressed by the new system, and that too so successfully supported by the higher classes of nobles and the chief I was induced to make some changes whereby Urjan Singh was elected to preside over the civil court

He seems to be well acquainted with the duties of his responsible position and I have had no reason to be otherwise than satisfied with his proceeding and general good conduct He is a man of respectibility and bears a good reputation at this present time I commend him to the good offices of the P agents who will I think find him an able and willing ally in this particular department

(Sd) W H EDEN,

A G G

Urjan Singh 2nd Minister was entertained by the late Maharana Shambho Singh on the same establishment as Pandit Luchman Rao received in Sumbat 1922 with Rs 250 salary.

ESTABLISHMENT

1	Kamdar	15—0—0
2	Brahmins	12—0—0
1	Ghotawala	7—0—0
1	Durzi	6—0—0
1	Nai	6—0—0
1	Personal servant	7—0—0
1	„ „	7—0—0
7	„ @ 6	42—0—0
	Total Rs	102—3—0 | 352—8—0

MEYWAR AGENCY,
Oodeypore 14th December 1874

(Sd) J S WRIGHT, Col,
Off Political Agent.

Urjan Singh Sahiliwala one of tho Ministers of the Oodeypore Durbar has carried on the duties of his office under my immediate observation and I consider that he has performed his work well and has given me great satisfaction he is a good servant to the state the interests of which he most carefully looks after.

OODEYPORE, *March 8-1875.* (Sd.) J. WRIGHT, COL, LATE P. AGENT OF MEYWAR.

Sanad

Bakhtawar Singh Vakil of the Meywar State in Rajputana.

I hereby confer upon you the title of Rai Bahadur as a personal ditinction.

SIMLA, *The 25th May 1892* (Sd.) LANSDOWNE, VICEROY & GOVERNOR GENERAL OF INDIA.

Bakhtawar Singh Sahiwala Vakil at Rajputana Agency on the part of His Highness the Maharana of Oodeypore, has been in attendance during the period of my incumbency of the office. He has been known to me for years and I have always been well pleased with the way in which he has conducted his duties. He is a very respectable native gentleman of good family and I have always found him very attentive and obliging and always ready to further my wishes.

ABU, *12th June 1873.* (Sd) J. C. BROOKE, OFFG. A. G. G.

Bakhtawar Singh Vakil of Meywar, has been known to me in Rajputana for more than three years. I consider that he has represented his State with intelligence and fidelity, and I am glad of this opportunity of recognizing his services

17—3—78. (Sd.) A. C. LYALL, A. G. G.

Oodeypore March 27th 1885

Bakhtawar Singhji Vakil on the part of the Meywar Durbar with the Agent Governor General has been known to me for some years He was Vakil for the eight months during which I acted for Sir A Lyall, and again for twenty months when I had the officiating appointment of A G G during Colonel Bradford's absence on leave He is a gentleman for whom I have a great respect, quiet and unobtrusive in manner and one who conducts the duties, entrusted to him in a most satisfactory manner.

(Sd) C K M WALTER, Colonel,

Resident Meywar.

Thakur Bakhtawar Singh has been the Vakil on the part of H H, the Maharana of Oodeypore throughout the time I have been Agent to the Governor General in Rajputana, that is since March 1878, and it gives me great pleasure to testify to the excellent and loyal manner in which he has invariably performed his duties Whilst carefully watching the interests of his own Durbar he has always given me complete satisfaction I can with confidence commend him to my successors

Thakur Bakhtawar Singh has been a most useful and impartial Member of the International Court of Vakils

Mt Abu 22-3-87

(Sd) E R C BRADFORD,

Agent to the Governor General

Abu March 22nd, 1890

Saheewala Thakur Bakhtawar Singh Meywar Vakil at the Head Quarters of the Rajputana Agency has been known to me for many years He is a very quiet but a very intelligent man well acquainted with the politics and people of Meywar, a faithful servant of the Durbar and an excellent man in the performance of his duties in the Upper Court of Vakils I have a very great respect for him and wish him much success and happiness in the furture

(Sd,) C K M WALTER, Colonel,

(Late) A G G Rajputana

Thakur Bakhtawar Singh has been known to me for many years during which he has been at Abu. Both Colonel E. Bradford and Colonel Walter late Agents to the Governor General, had a high opinion of him and have recorded it in letters which they have given to him. He has always done his work thoroughly and is a gentleman in every way and has been of great assistance to me from his knowledge of the Meywar State.

I wish him well with all sincerity.

Abu 2—4—90.

(Sd.) E. A. FRASER, MAJOR,

1st A. A. G. G.

Thakur Bakhtawar Singh has been the Oodeypore Vakil at Abu for 21 years and for 13 of these years I have been acquainted with him. He is a gentleman for whom I have much respect and a sincere liking.

Mt. ABU.
August 1st 92.

(Sd.) SPENCER, M. B.,

Brig. Surg.

॥ जीवन-चरित्र ॥

तीसरा हिस्सा.

महीवाला अर्जुनसिंहजी.

मिनिस्टर महकमह खास व मेम्बर महद्राजसभा

श्रीमान् महाराजाधिराज महीमहेन्द्र परमप्रतापी धीर वीर महाराणाजी श्री १०८ श्री फतहसिंहजी बहादुर जी सी एस आई के अहद में बनकर तय्यार हुआ.

राज्य उदयपुर.

संवत् १९६७ विक्रमी
वैदिक-यन्त्रालय, अजमेर मे मुद्रित.

॥ श्रीः ॥

जमीमा.



यानी—

तीसरा हिस्सा जीवनचरित्र महीवाला अर्जुनसिंहजी.

(बख़्तावरसिंहजी लिखित)



चौथा बाब.

फस्ल अव्वल.



(मुतअल्लिक बाब दूसरा)

यह जीवनचरित्र परमपूज्य दादा भाई साहिब अर्जुनसिंहजी का पहिले दो हिस्सों में छप चुका है उसमें सं० १९५४ विक्रमी तक का अहवाल है, ये अर्जुनसिंहजी सं० १९६१ * वैशाखकृष्णा १२ ता० १६ मई सन् १९०५ ई० तक बतमूल कोठारीजी बलवन्तसिंहजी राजश्री महकमा खास का काम बदस्तूर

---

* यह मेवाड़ का राजसम्वत् है जो श्रावणकृष्णा १ को शुरू होता है

अंजाम देते रहे, इसी तारीख़ को इन दोनों के बजाय महताजी भूपालसिंहजी और महासानीजी हीरालालजी इस काम के लिये मुक़र्रिर हुए. तब से ये अर्जुनसिंहजी राजश्री महद्राजसभा की मेम्बरी का काम हस्ब मामूल बदस्तूर करते रहे. सं० १९६२ चैत्रशुक्ला ९ से इनको बुख़ार की तकलीफ़ शुरू हुई सो कुछ दिन तक तबियत नासाज़ रहकर उसी साल के वैशाख शुक्ला २ तारीख़ २५ अप्रेल सन् १९०६ ई० को परलोकवास होगया. इनकी अस्थियें पंड्या जयशंकरजी के साथ जो हमारे पुरोहित हैं उन्हीं दिनों में हरद्वार भेजदी गईं.

इनका जन्म सं० १८८२ विक्रमी श्रावण शुक्ला २ का होने से उस वक़्त तक इनकी उमर ८० वर्ष ९ माह की हुई, इस क़दर बड़ी हुई उमर की हालत में भी उनकी दिनचर्या अच्छी होने से अपने मुतअल्लिक़ा कारोबार को इन्होंने हरहालत में अच्छी तरह से अंजाम दिया, किसी किस्म का कोई ख़रकशा ज़हूर में नहीं आया। श्रीमान् श्रीजी हुज़ूर की नज़र ख़ाविन्दि इन पर बदस्तूर बनी रही, इसका यही सबब है कि ये शुरू से आख़िर तक स्वामीभक्ति में तन मन से लगे रहे जिनके लिये महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदासजी ने भी ऐसा कहा है:—

❀ कवित्त ❀

पढ़िबो पुराण धर्म नीति को निसाह पूर सज्जन तें स्नेह त्यों असज्जन अभाव है.
बात कही सो तो लख हृदा पै लिखाय दई झूंठ को न लेश सांच बांच को स्वभाव है॥
श्याम धर्मधारी सदा सत्य न्यायकारी-वीर पुत्र शिवसिंह सदा-कठिन निभाव है,
सोहत सदीव श्रीगोपाल ज्यों नृपाल शम्भु अर्जुन त्यों अर्जुन की बुद्धि को प्रभाव है॥

और भी कवि प्रतापजी सनाढ्य आसीन्दवालोंने नीमाहेडा की फतह में ऐसा कहा है –

❀ दोहा ❀

राजनीति रजपूति ये, भुज तेरे उमगाह ।
अर्जुन तो उनिहार पै, दोई बात अथाह ॥

छप्पय.

काट तुर्क खाड के, हुक्म हिन्दवाणा कीधो ।
नीलो भण्डा भाड, दुर्ग पहरां में लीधो ॥
साहिब राजी राख, काम स्वामी रो आयो ।
श्याम धर्म शिरराख, जस अख्याता जायो ॥
मांभी तो उनिहार पै, जस भिना अणळाकियो ।
जद अर्जुन सरिस, गामखोर निज दाखियो ॥
देग हाक फटता, फौज जाता फरगाणा ।
हाक रीठ बाजता, तोह जाणियो राजाणा ॥
राणा भार भांपियो, जरणो काम आमरो कीधो ।
मरणो निश्चय मान, सुग्ग समारा लीधो ॥
शिवसिंह सुतन मरदा सरिस, पराक्रम तो है पछाणियो ।
जद अर्जुन उण चक्रमें, राणा देश घर आणियो ॥

———

फ़स्ल दूसरी.



(मुतअ़ल्लिक बाब अव्वल फ़स्ल तीसरी और बाब दूसरा फ़स्ल तीसरी और बाब तीसरा फ़स्ल चौथी)

इन मेरे बड़े भाई अर्जुनसिंहजी के अन्तकाल होने पर एकादशाके दिन कपड़ों के भंडार से ऐसे मौके़ पर हमारे सफ़ेद पगड़ी आया करती है उसके बजाय श्रीमान् श्रीजी हजूर ने भतीज गुमानसिंहजी पर ख़ाविन्दि फ़रमाकर पाग, दुपट्टा, जामदानी का शिरोपाव क़ीमती ४९) रु० का बख्शा जैसा कि महताजी गोकुलचन्दजी, कोठारीजी केसरीसिंहजी के अन्तकाल होने पर उनके पुत्रोंको बख्शा गया था और इसी तरह से कुछ अरसे बाद इनको रंग की पगड़ी भी बख्शी गई और दरीख़ाने वग़ैरह में भी यह बैठते हैं, पावणा वग़ैरह जो सरकार से पहिले से आती थी वो ही इनके नाम पर अब भी जारी है, नाव का कारख़ाना भी श्रीमान् ने ख़ाविन्दि के साथ बदस्तूर इन्हीं के नाम पर बहाल रक्खा है, सं० १९५५ में ये गुमानसिंहजी गयाजी यात्रा करने को गये थे, साथ में भतीज रत्नसिंहजी भी थे.

अर्जुनसिंहजी के नाम से तहरीरात जीकारे के साथ लिखी जाया करती थी उसी तर्ज़ पर तहरीरात में गुमानसिंहजी के साथ भी जीकारा लिखने का अमल है, बल्कि उमराव सरदारान की तरफ़ से भी तहरीरात इनके नाम पर मानिन्द अर्जुनसिंहजी के आने का सिलसिला ज़ारी है, मस्लन इन मेरे दादा

भाई साहब के इन्तकाल के गमी के मौके पर भतीज गुमानसिंहजी के नाम पर गोगुन्दे राज साहब पृथ्वीसिंहजी का कागज आया और बाद को कानौड राव-तजी साहिब नाहरसिंहजी वगैरह का भी कि जिनकी नकलें आगे दरज की जाती है इनकी तरफ से भी भतीज भीमसिंहजी की पुत्री चिरंए गम्भीरकँव-र के विवाह स १९६३ मे कूकूपत्रिये सब जगह भेजीगई उनमे तर्ज तहरीर पहिले के मुजिब ही रक्खी गई

नक़ल कागज़ात.

॥ श्रीनाथजी ॥

राज चिन्ह की मोहर. DARBAR OFFICE KISHENGARH

सिद्धिश्री उदयपुर शुभस्थाने सर्वोपमा पचोलीजी श्रीअर्जुनसिंहजी सही-वाला जोग किशनगढ सू रावबहादुर श्यामसुन्दरलाल सी० आई० ई० लिखा-वतु जुहार बचावस्यो अठाका समाचार श्रीजीकी कृपाकर भलाछे राजका सदा भला चाहिजे सदा हेत इकलास रखावो तीसू विशेष रखावस्यो अपरच श्री हजूर पुरनूर दामइकबालहू का विवाह मिती फागुनबुदी ८ भोमवार मुताबिक ता० ६ फरवरी का सावाको है और बरात बुदी ७ ता० ८ फरवरी नें अठासू रवा-ना होर श्रीमहाराणाजी के उदयपुर पहुंचसी तो अस्लानपर राज आवस्यो ॥

कागज़समाचार व अठा सारूं कामकाज होय सो लिखावस्यो संवत् १९६० माघसुदि २.

श्री आदमाताजी । श्रीलक्ष्मीनारायणजी ॥

(ख़ास राजसाहिब के दस्तख़ती इबारत)

म्हारो जुहार बंचसी बावाजीरा लेखारी मनेई घणी चिन्ता हुई राज चिन्ता नहीं करें ईश्वर का घरसूं जोर नहीं, नाजोर बात को इलाज सबर है.

सिद्धश्री उदयपुर शुभस्थाने सर्वोपमा ठाकुर काकाजी श्री गुमानसिंहजी जोग गोगून्दाथी राणा पृथ्वीसिंह लिखावतां जुहार बांचसी, अठारा समाचार श्रीजी की कृपा थी भला है राज का सदा भला चाहिजे राज म्हारे घणी बात हो राज सिवाय और बात नहीं, अपरंच बावाजी अर्जुनसिंहजी हरिशरण हुआ जीकी सुणवा में आई जीरी चिन्ता और फ़िकर की कठातक लिखी जावे दाना और बुद्धिमान हा, आज की वक़्त में वांजस्या मेवाड़ की रियासत में नहीं है वांका हाथसूं वेसकी जब तक सबके वास्ते तरक्क़ी हुई, लेकिन नुकसान कीरेई वास्ते नहीं हुवो बाक़ी तो आछी प्राचीन ही सहूलियत के साथ आज की घड़ी वक़्त में श्रीजी के चरणारविन्दा सुधर गई प्रन्त प्रमात्मा की मुरजी है ना इलाज बात को इलाज सबर सिवाय और नहीं है राज बुद्धिमान है ज्ञान-दृष्टि देर सबर करावे. काम काज होवे सो लिखावसी। सं० १९६२ जेठवुदी २.

॥ श्रीएकलिंगजी । श्रीरामजी ॥

सिद्धिश्री उदयपुर शुभस्थाने सर्वोपमा जोग सहीवाला श्रीगुमानसिंहजी जोग कानोड़ थी रावतजी श्रीनाहरसिंहजी लि० जुहार बांचसी अपरच अठे महा माय श्री झालीजी हरिशरण हुवा सो ब्रह्मभोजन आसोजवद ११ सोमे है सो जाणनी स० १९६५ का आसोजवद ३.



॥ श्रीएकलिंगजी । श्रीरामजी ॥

(श्रीमत् गोस्वामीजी महाराज की खास दस्तखती इबारत)

म्हारो नारायण स्मरण बांचोगा

सिद्धिश्री श्रीकैलाशपुरी शुभस्थाने श्रीगोस्वामीजी महाराज श्री स्वाई कैलाशानन्दजी उदयपुर सुथाने सहीवाला श्रीगुमानसिंहजी चिरजीव नारायण स्मरणबांचोगा अठारा समाचार श्रीजी की कृपासू कर भला है आपरा सदा भला चाहिजे, अपरंच श्रीपरमेश्वराजी महाराज के महापूजा का उच्छव की आशका भेजी हैं सो माथे चढ़ावोगा आप सेवक हो सो सेवाभक्ति राखोगा जतरांही सुकृत हैं सं० १९६४ रा श्रावणशुदी १९

भतीज गुमानसिंहजी के बडे पुत्र गुलाबसिंहजी के दो बेटे बड़ा ईश्वरीसिंह उमर ७ साल बाआरजे चेचक फाल्गुन कृष्णा १२ के और छोटा संग्रामसिंह बआरजे बुखार फाल्गुन शुक्ला ७ को स० १९५६ में मरगये और उसी

साल के वैशाख शुक्ला ४ को इन गुलाबसिंहजी का भी हैज़े की बीमारी से इन्तकाल होगया, दो माह के अन्दर ऐसी तीन मौतें यकायक होने से हम सबको पूरा २ रंज हुआ. खासकर मेरे बड़े भाई को जो सदमा पहुंचा नहीं लिखा जासकता मगर वे धैर्यवान थे सो सबर किया.

गुलाबसिंहजी से छोटे भाई मदनसिंहजी की शादी दलीचन्दजी पंचोली दारोगा कपड़ों का भंडार की पुत्री से सं० १६६० फाल्गुन कृष्णा ३ को हुई इनके एक लड़की सं० १६६५ के आश्विन में होकर थोड़े अरसे बाद ही मरगई. इन मदनसिंहजी पर भी श्रीमान् की पूरे तौरपर परवरिश की निगाह है कि जिससे हाल में इनके मामू महासाणीजी हीरालालजी अपने पुत्र रूपलालजी को कम उमर में छोड़ सं० १९६६ जेष्ठ कृष्णा १० को ३८ वर्ष की उमर में इन्तकाल करगये और उनके मुतअल्लिका कुल कारखाने जात का काम बदस्तूर इन रूपलालजी के नाम से होते रहने के सबब निगरानी इन (मदनसिंहजी) की रक्खी गई सो ये काम अंजाम देते हैं, इन महासानीजी हीरालालजी को श्रीमान् श्रीजी हजूरने राजश्री महक़मे खास का काम सिपुर्द होने बाद जीकारे की और पैर में सोना पहनने की इज़्ज़त बख्शी और राजश्री महद्राजसभा में मेम्बर मुक़र्रिर फ़रमाया और इसी तरह महताज़ी भूपालसिंहजी को भी इज़्ज़त बख्शी गई.

भतीज गुमानसिंहजी की बड़ी पुत्री अजबकँवर का लड़का इन्द्रसिंह छः सात वर्ष का होकर सं० १६६३ में मरगया और इनकी छोटी पुत्री जसकँवर के एक लड़का जमनालाल ३ वर्ष का हाल में है.

हमारे जमाइयों में केसरीसिंहजी और मोतीलालजी महासानी सं० १९५६ में और अर्जुनसिंहजी सं० १६५७ में इन्तक़ाल करगये.



भतीजजी गुमानसिंहजी सहीवाला। उमर ६२ साल।



भतीजजी भीमसिंहजी सहीवाला। उमर ४७साल।



चिरंजीव मदनसिंहजी सहीवाला। उमर २५ साल।



चिरंजीव रणजीतसिंहजी सहीवाला। उमर १३ साल।

Indian Press Allahabad

भतीज भीमसिहजी जो पहले राजनगर, कुम्हलगढ़ फिर मांडलगढ़ हाकिम रहे वहां से तबदील होकर सं० १९५८ के मृगशिर में बजाय महताजी मनोहरसिंहजी जहाजपुर हाकिम मुकर्रिर हुये और इनके बजाय मॉडलगढ महताजी गोविंदसिंहजी भीलवाडा से गये इसी तरह पर सं० १९६२ के कार्तिक शुक्लपक्ष में अजलाय मेवाड़ के हाकिमान की तबदीली के सिलसिले में ये भीलवाडे रायजी केसरीलालजी पचोली के बजाय और इनकी एवज जहाजपुर ऑकारलालजी माथुर पंचोली भेजे गये, तनख्वाह इनको दोनों जगह मॉडलगढ़ के मुजिब ही १५०) रु० माहवार मिलती रही और मिलती है यह तबादिला हुआ उसी अरसे में यानी मृगशिर शुक्ला ४ को हमीरसिंहजी की छोटी पुत्री नरायणकँवर और मृगशिर शुक्ला ५ को इससे बडा भाई प्रतापसिंह की शादियें हुई जिससे भीमसिंहजी का बहसूल रुखसत उदयपुर आना होगया इसलिये माघ शुक्ला ६ को भीलवाडे पहुच चार्ज लिया कि इस वक्त तक वहीं पर काम अंजाम देते हैं.

इन भीमसिंहजी को जब से कुम्हलगढ़ हाकिम थे उस वक्त सं० १९४६ पौष में वास्ते तहकीक़ात तकरार बहामी सरहदी तनाजे तगडिया पटे लसानी व खूमाखेड़ा, नाथजी का खेडा पटेताल देहात जागीर जिले सहाडां के बवजह शिकायत निस्बत हाकिम साहब सहाडा महताजी अर्जुनसिंहजी मौकेपर बशामिलात हाकिम साहब मौसूफ जाना पड़ा, लेकिन उस वक्त तहकीकात में फरीकेन को उजर होने से तहकीकात मुलतवी रहकर फिर यह मुकदमा अदालत सहाडां से मुसतसना किया जाकर इन्हीं भीमसिंहजी के सिपुर्द हुवा.

जिससे इनको दुबारा इस मौकेपर सं० १९४९ ही के वैशाख में जाना पड़ा और बाद तहकीकात इन्होंने ही इसकी अखीर तजवीज की जिससे फरीकैन मुकदमा को सजा हुई. इसके बाद इसी साल में शक्करगढ़, पटे, देवगढ़ व लसानी जागीर के तनाजे सरहदी की ज़मीन में देवगढ़ की जानीब से जामुतनाजा में दस्तन्दाजी हुई इस मौके को देखने व रफे हुज्जत कराने के लिये भी ये भेजे गये थे कि इन्होंने रफे तकरार करादी और जब ये मॉडलगढ़ हाकिम मुकर्रिर थे तब इनके रुखसत पर यहां आने के वक्त सं० १९५२ और सं० १९५३ में हमीरसिंहजी की अदममौजूदगी के सबब अदालत सदर दीवानी और महकमे सायर का काम करना पड़ा और सं० १९५४ में हाकिम साहब भीलवाड़ा महताजी गोविन्दसिंहजी जब मगरा ज़िला में जुड़ा मेरपुर के सरहदी तनाजे की मीनारबन्दी के लिये भेजे गये थे तब मॉडलगढ़ के साथ ही साथ भीलवाड़े की हुकूमत की निगरानी भी इन्हीं के सिपुर्द रही थी और इसी तरह सं० १९६२ में वक्त तबादिला जहाजपुर शादी के मौके पर इनका आना उदयपुर हुवा तब कोठारीजी बलवन्तसिंहजी का उनके पुत्र की शादी में लगे रहने से महकमा माल का भी काम करना पड़ा.

इनकी पुत्री चिरंजी गम्भीरकँवर की शादी सं० १९६३ के द्वितीय चैत्रशुक्ला ४ को पन्नालालजी पंचोली अहलमद राजश्री महद्राजसभा के पुत्र कन्हैयालालजी के साथ हुई. अगरचे मेरे बड़े भाई के देहान्त को थोड़ा ही अरसा हुवा था मगर आगे लग्न न आने से यह विवाह इस वक्त ही करना पड़ा, इनके पुत्र रणजीतसिंह जिसका जन्म सं० १९५४ माघकृष्णा १० का है हिन्दी फ़ारसी और अंग्रेज़ी घर पर ही पढ़ता है, इसकी सगाई बख्शीजी मोतीलालजी हाकिम

साहब सहाडां के बेटे सुखलालजी की पुत्री से सं० १९६५ आश्विनशुक्ला १० (दशहरा के दिन) को हुई, इस रणजीतसिंह से छोटी तीन बहनें हैं एक चन्द्रकँवर जिसका जन्म सं० १९५८ के फाल्गुनशुक्ला ११ का है, दूसरी सज्जनकँवर जिसका जन्म सं० १९६१ फाल्गुन कृष्णा ६ का है, तीसरी हाल ही में सं० १९६६ के आषाढ़ कृष्णा ४ को हुई है जिसका नाम सूर्यकँवर है, इनकी सबसे बड़ी पुत्री मोहनकँवर के पति खुशवक्तलालजी सं० १९६३ मृगशिरशुक्ला ८ को बीमारी प्लेग से इन्तकाल कर गये और मोहनबाई भी सं० १९६६ के फाल्गुनकृष्णा १ को हरिशरण हुई. जिसके दो लडके हैं बड़ा अमृतलाल छोटा दौलतसिंह.

भतीज गुमानसिंहजी की बहूने तो सं० १९६० में बद्रीनारायण की और मेरे बडे भाई अर्जुनसिंहजी की पासवान जमनाबाई ने सं० १९६७ के आश्विन मे जगदीश और गयाजी की यात्रा की, इनके साथ पण्ड्या परमानन्दजी जो हमारे पुरोहित हैं भेजे गये इनकी वहू भी साथ में थी.



फस्ल तीसरी.



(मुतअल्लिक बाब तीसरा फस्ल तीसरी)

मैं (बख्तावरसिंह) पहिले आबू वकालत पर था बादहू ठिकाने आसीन्द का मुन्सरिम रहा फिर आसीन्द मेरी जगह पर बख्शीजी मोतीलालजी मुक-

र्रिर हुये. और मैं सं० १९५७ के कार्त्तिक में रावजी साहब करणसिंहजी बेदला के इन्तक़ाल करने पर इनके पुत्र नाहरसिंहजी के नाबालिग होने से ठिकाने के इन्तज़ाम के लिये मुन्सरिम मुक़र्रिर हुवा. सो इस वक़्त तक काम दे रहा हूं. मुझको तनख्वाह १२०) रु० माहवार अलावा दीगर खर्च अमला मिलती है, मैं सं० १९६० में जोधपुर किसी खास काम के लिये भेजा गया कि वहां पर मुझको हस्ब मामूल कण्ठी मोतियों की और शिरोपाव बख्शा गया.

मेरे बड़े पुत्र हमीरसिंहजी जिनका मुख्तसिर हाल पहिले हिस्सों में दर्ज हुवा है, जब ये इलाहाबाद से बी. ए. का इमतिहान पास कर वापिस आये तब डुंगच और मेजा के तनाजे पर भेजे गये. बाद अज़ां श्रीमान् श्रीजी हज़ूर दामइक़्बालहू ने बनज़र खाविन्दि इनसे राज सम्बन्धी खास कामों के लेने में हर तरह इनकी क़दर फ़रमाई और हमेशा सफ़र व दौरे में भी ये साथ रहा करते थे और राज श्री महक़मे खास की पेशी का काम भी सं० १९५१ के बाद से इनकी आख़िरी उमर सं० १९५८ तक बराबर अंजाम देते रहे और इसी तरह श्रीमानों के प्राइवेट सेक्रेटरी के जो करने का खास काम था वो भी येही करते रहे, इससे पहिले सं० १९४९ के वैशाख में महक़मे सायर और सं० १९५० के आषाढ़ में अदालत सदर दीवानी का काम इनके सिपुर्द हुवा जिसका हाल पहिले लिखा जा चुका है, ये सदर फौजदारी में भी इञ्चार्ज रहे. सं० १९४९ श्रीबावजी नन्दकँवर बाईजी साहबा के विवाह के मौके पर इनको श्रीमान् श्रीजी हज़ूर ने पन्नों का कण्ठला भी बख्शाया था. ये थोड़ी ही उमर में (३९ वर्ष की ही) सं० १९५८ पौष शुक्ला १५ को बआरज़े बवासीर इन्तक़ाल कर गये.

इनकी उमर ने वफा न की वरने श्रीमान् श्रीजी हजूर की कदरदानी से हरतरह फिर ऐजाज हासिल होते, इनके इन्ताकल के बाद उसी तारीख मे इनके मुतअलिका राजश्री महकमे खास की पेशी के काम की तनख्वाह के १००) रु० माहवार इनके बड़े पुत्र चिरंजी गोविन्दसिंहजी को बनजर खाविन्दी श्रीमान् ने कर बख्शे और महकमे सायर का काम जो छ माह तक तो सरिश्तेदार फतहलालजी मुरडिया अपनी जिम्मेवरी से करते रहे बाद को स० १६५६ के शुरू मे महासानीजी हीरालालजी के सिपुर्द हुआ.

चिरंजी गोविन्दसिंहजी को श्रीमान् ने खाविन्दि के साथ तनख्वाह मे ५०) रु० की तरक्की फरमाकर स० १६६२ के कार्त्तिक मे बसिलसिले तकरूरी व तबादिला हाकिम साहिबान बजाय महताजी चतरसिंहजी हाकिम कुम्हलगढ़ मुकर्रिर फरमाया और स० १६६५ के माघशुक्ला ५ को वहां से तबदील फरमाकर बजाय महताजी मदनसिंहजी (मॉडलगढ़ वालों) के जिले हुरड़ा में भेजा और इसके बजाय कुम्हलगढ महताजी विट्ठलदासजी के छोटे पुत्र मनोहरसिंहजी गये इन गोविन्दसिंहजी को इस जगह भी तनख्वाह के १५०) रुपये माहवार ही बख्शे जाते हैं इनकी शादी स० १६५७ फाल्गुन कृष्णा ३ को अर्जुनसिंहजी वल्द शालिग्रामजी झालोरी की पुत्री से हुई इनके एक लड़का स० १६६३ आषाढ़शुक्ला ६ को पैदा हुवा, जिसका नाम किशनसिंह है, इस किशनसिंह से छोटी दो बहने हैं बड़ी का नाम तेजकँवर बाई और छोटी का नाम मनोहरकँवर बाई हैं.

गोविन्दसिंहजी से छोटा भाई प्रतापसिंह की शादी स० १६६० के मृगशिर शुक्ला १५ को रघुनाथसिंहजी मोताबत की पुत्री से हुई है यह हुक्म से

अजमेर गवर्नमेन्ट कॉलेज में पढ़ने के वास्ते सं० १९६४ श्रावण कृष्णा १३ मुताबिक माह जोलाई सन् १९०७ ई० को भेजा गया सो इस वक्त तक वहीं पर एन्ट्रेन्स क्लास में पढ़ता है और इस पढ़ाई खर्च के लिये इसको ४५) रु० कलदार माहवार भी बख्शे जाते हैं.

गोविन्दसिंहजी से बड़ी बहन नज़रकँवर के एक लड़का पांच छः वर्ष का विजयसिंह नामी और दो लड़कियां हैं इससे पहिले एक लड़का और एक लड़की होकर शीतला की बीमारी से मर गये इनकी छोटी बहन नारायणकँवर का विवाह सं० १९६२ के मृगशिर शुक्ला ४ को बख्शीजी के दफ्तर के कामदार कुनणलालजी के बेटे नन्दलालजी से हुआ. नारायणकँवर से छोटी बहन गुलाबकँवर की सगाई रींवांवाले मन्नालालजी के बेटे चतरसिंहजी के साथ की गई है.

गोविन्दसिंहजी से सब से छोटा भाई जोरावरसिंह सं० १९५८ के माघकृष्णा १४ को पैदा हुवा मगर ईश्वरेच्छा है कि सात साल की उमर में ही सं० १९६५ जेष्ठशुक्ला ८ को कुछ दिन बीमार रहकर इन्तकाल कर गया. इतनी सी उमर में ही हिन्दी का पढ़ना सीख लिया था.

हमीरसिंहजी से छोटा भाई पृथ्वीसिंहजी जिनका जिक्र पहले हिस्सों में हो चुका है उनकी बहू और गुलाबसिंह की बहू ने सं १९६० में चारों धाम यानी बद्रिकाश्रम, जगदीश, रामेश्वर और द्वारकानाथ की यात्रा की.



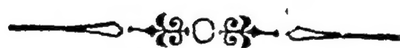
फ़स्ल चौथी.



(मुतअल्लिका बाब तीसरा फस्ल दूसरी)

दादाभाई रामसिंहजी लक्ष्मणसिंहजी का भी हाल पहले जीवन-चरित्र मे लिखा गया है उसके बाद का इस तरह पर है कि दादाभाई लक्ष्मणसिंहजी जो तोपखाना और मेगजीन वगैरह के दारोगा थे स० १६५९ कार्तिक शुक्ला ८ को इन्तकाल कर गये इनके बाद मेगजीन तोपखाने का काम तो भतीज मोती-सिंहजी जो रामसिंहजी के पुत्र है अंजाम देते हैं और धर्मसभा मे दारोगा के शामिलात का काम भतीज रत्नसिंहजी लक्ष्मणसिंहजी के पुत्र पहले की तरह ही पर करते है. यह रत्नसिंहजी स० १६६३ के मृगशिर में रावजी साहब किशनदासजी के इन्तकाल हो जाने के सबब बिजोलिया कैद खालसे पर भेजे गये थे. कुछ अरसे तक वहा रहकर उठन्त्री होजाने पर वापिस आये. इस हालत में इनको १००) रु० माहवार तनख्वाह के मिलते थे. रत्नसिंहजी मोती-सिंहजी इन दोनो भाइयों ने थोडे अरसे पेशतर यानी स० १६६७ में ही गयाजी और जगदीश की यात्रा की. मोतीसिंहजी के बेटे तख्तसिंह, मोहनसिंह, भूपा-लसिंह और लडकिये नन्दकँवर बाई खुमाणकँवर बाई है इनके जन्मदिन ये है:—तख्तसिंहजी भाद्रपद शु० ६ स० १६५३, मोहनसिंहजी कार्तिक कृ० १४ स० १६५५, भूपालसिंहजी आपाढ शु० १४ स० १६६०, नन्दकँवर बाई माघकृ० १० स० १६६२, खुमाणकँवर बाई कार्तिक शु० ७ स० १६६७, तख्तसिंह की सगाई

पन्नालालजी मोलावत राजश्री महद्राजसभा वालों की पुत्री से हुई है. और मोहनसिंह की शादी सं० १६६६ माघ शुक्ला ६ को रघुनाथसिंहजी मोलाव की बेटी से हुई. मगर वह लड़की उसी अरसे में फाल्गुन कृष्णा ७ को प्ले की बीमारी से मरगई. अब सगाई लाभचन्दजी पंचोली दिवानी वाले के पु पन्नालालजी की पुत्री से हुई है. तख्तसिंह, मोहनसिंह, हिन्दी, फ़ारसी औ अंग्रेज़ी स्कूल में और घर पर भी पढ़ते हैं।



॥ श्रीः ॥

इस ग्रूप में जो सं० १९५३ में लिया गया था नीचे लिखे मुताबिक चित्र है ॥

—⟶✱⟵—

कुरसियों पर बैठी लाइन में.

१	श्रीमान् ठाकुर साहब अर्जुनसिंहजी बीचोबीच (मध्यस्थ)	नम्बर ३ पर
२	दादाभाईजी लक्ष्मणसिंहजी, ठाकुर साहिब के दाहिनी तरफ़	„ २ „
३	भतीज गुमानसिंहजी का चित्र है, दादाभाई लक्ष्मणसिंहजी के पास	„ १ „
४	मुफ़ रायबहादुर बख्तावरसिंह, ठाकुर साहब से बाईं तरफ़	„ ४ „
५	भतीज भीमसिंहजी मुफ़ बख्तावरसिंह के पास	„ ५ „

पिछली तरफ़ खड़ी लाइन में.

६	चिरजीव हमीरसिंहजी गुमानसिंहजी और दादाभाई लक्ष्मणसिंहजी के बीच में	„ १ „
७	चिरजीव मोतीसिंहजी, ठाकुर साहब और दादाभाई लक्ष्मणसिंहजी के बीच में	„ २ „
८	चिरंग गुलाबसिंहजी ठाकुर साहब और मेरे बीच में	„ ३ „
९	भतीज रत्नसिंहजी मेरे और भीमसिंहजी के बीच में	„ ४ „

फर्श पर बैठी लाइन में.

१०	चिरंग गोविन्दसिंहजी दादाभाई लक्ष्मणसिंहजी के पास	„ १ „
११	„ प्रतापसिंहजी ठाकुर साहब और मेरे बीच में	„ २ „